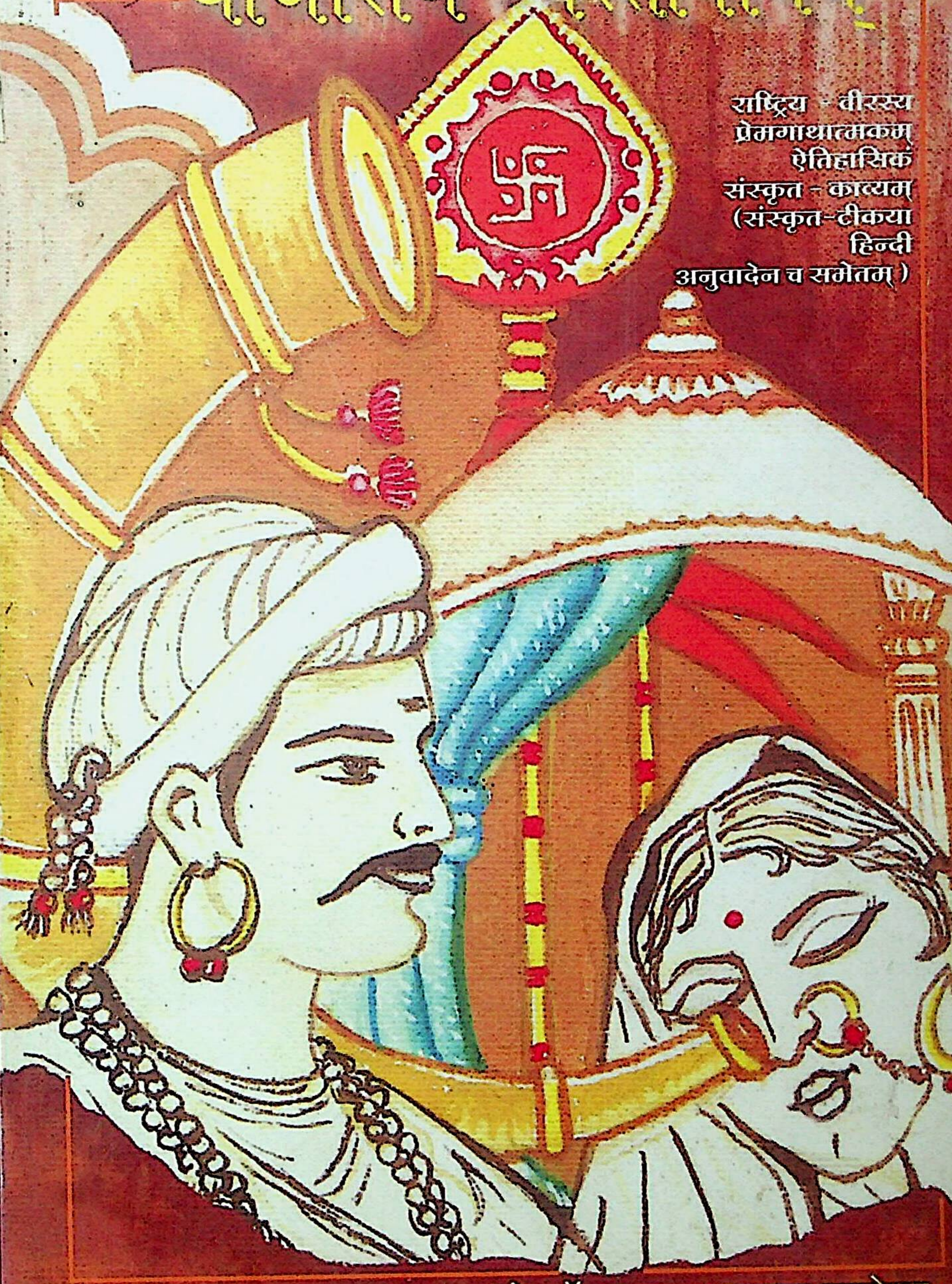
भूलोकविलोकनम् - ४

बाजीराव - मस्तानीयम्



राष्ट्रिय - वीरस्य
प्रेमगाथात्मकम्
ऐतिहासिकं
संस्कृत - काव्यम्
(संस्कृत-टीकया
हिन्दी
अनुवादेन च समेतम्)

कवि: महामहोपाध्याय: प्रो. डॉ. प्रभाकर नारायण कवठेकर :

परचक्र – निवारण – नायकः



प्रथमः श्री बाजीरावः पेशवा
(ई. स. १७००–१७४०)

भूलोकविलोकनम् भाग-४

बाजीराव-मस्तानीयम्

राष्ट्रिय-वीरस्य प्रेमगाथात्मकम् ऐतिहासिकं संस्कृत-काव्यम्

(संस्कृत-टीकया हिन्दीभाषायामनुवादेन च सह)

कविः

महामहोपाध्यायः

प्रो. डॉ. प्रभाकर नारायण कवठेकरः

इन्दौर

'प्रमिला प्रकाशन'

इन्दौर-४५२ ००८

प्रकाशक :
श्री दिलीप कवठेकर,
'प्रमिला प्रकाशन',
१४५, अनूप नगर, इन्दौर-४५२ ००८.
☏ ०७३१ - २५५०६४४

अक्षर-संयोजन :
श्री विजय रा. दीक्षित
१६२, श्रीनगर विस्तारित,
इन्दौर-४५२ ००८
☏ ०७३१ - ५०६१५६५

चित्रकार
श्री संदीप राशिनकर, इन्दौर.
☏ ०७३१ - २३२११६२

मुद्रक :
श्री सुमीत चावला
'लास्टिंग इम्प्रेशन्स',
डी २३, डी.एस.आई.डी.सी. पैकेजिंग कॉम्प्लैक्स,
कीर्ती नगर, नई दिल्ली-११० ०१५
☏ ०११ - ५१४२०७०५

प्रथम संस्करण : २००५
मूल्य रू. १००/-

प्राप्ति स्थान :
'प्रमिला प्रकाशन', इन्दौर.
१४५, अनूप नगर, इन्दौर-४५२ ००८.

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली के वित्तीय
सहयोग से प्रकाशित।

अनुक्रमणिका

राष्ट्र-वीराय नमः

फ्रेंचांग्लानवरुध्य यो विजितवान्
तान् पोर्तुगीजान् रणे
दुर्गे वेष्टित-पातशाह-भयदो
यो दुष्टचक्रान्तकः।

यत्कामः पुरुषार्थ-धर्म-सहितः
हा हन्त ! यो पीडितः
वीरं राष्ट्रियमर्पये स्व-रचनां
तं बाजिरावं स्मरन् ।।

- डॉ. प्रभाकर नारायण कवठेकरः

अथातः काव्यजिज्ञासा !

बाजीराव-मस्तानीयमिति प्रथम - श्रीबाजीराव-पेशवेति नाम्ना प्रसिद्धस्य राष्ट्रियवीरस्य प्रेम-गाथात्मकमैतिहासिकं संस्कृत-काव्यं रसिकाणां पुरतः स्वोपज्ञया टीकया हिन्दीभाषायामनुवादेन च सह प्रस्तूयते। विधातुर्निर्देशादेव रावस्यास्य प्रेमसम्बन्धो बुन्देलखण्डस्य प्रतापशालिनो नृपस्य श्रीछत्रसालस्य कन्यया मस्तान्या सह समजनि। न च 'भुक्तोऽझितोऽयं विषयः'। नूतनविषये संस्कृतेऽयम् अभिव्यक्तिः काव्यप्रान्ते। कथावस्तु काव्यमयं नाट्यपूर्णमिति रसनीयत्वम् इति सुधीभिर्भाव्यम्।

मोगल-पातशाहस्यौरंगजेबस्य पौत्रस्य सेनापतिना मुहम्मद बंगश-नाम्ना युद्धवीरस्यापि वृद्धस्य श्रीछत्रसालस्य राज्यमाक्रान्तम्। तदा वृद्धो राजा श्रीबाजीरावं स्व-राज्यस्यात्मनश्च सहायतार्थमाहूतवान् पत्रेण -

'बाजी राखो लाज़ !' इति।

रावोऽपि सत्वरं बुन्देलखण्डे नृपस्य राज्ये शत्रोर्बंगशस्य पराजयं कृत्वा नृपं तद्राज्यं च रक्षितवानिति विदितमितिहासे। तस्योपकारं स्मरन् राजा श्रीछत्रसालोऽनेकराज्ञीष्वन्यतमायाम् मुस्लिम-पत्न्यां जातां राजकन्यां मस्तानीं रावाय प्रददौ। श्रीछत्रसालः प्रणामिधर्मदीक्षित आसीत्। स्वामिनः श्रीप्राणनाथ-प्रणीतं 'प्रणामि'-धर्ममनुसृत्य ईश्वराल्लयोर्मध्ये न भेदभावः सम्मतः। प्रणामिधर्ममाचरतः श्रीछत्रसालस्य पत्नी यवनधर्मिणी तस्यां च मस्तानी कन्या जातेति युज्यते।

'भट' नाम्नाः ज्ञातं ब्राह्मण-कुलम् महाराष्ट्रे कोंकणप्रदेशे सह्याचल-समुद्रयोर्मध्ये भूभागः प्रसिद्धः, तत्र भटानां पूर्वजाः निवासं चक्रुः। श्रीबाजीरावस्य पिता श्रीबालाजी- विश्वनाथ-नामा वीरो बभूव। छत्रपतेः शिवराजस्य पौत्रः शाहुराजः सातारािधपतिः स्वराज्यस्य 'पेशवे'ति मुख्यामात्यपदे बालाजी-विश्वनाथं नियोजितवान्। पितुर्मृत्योरनन्तरं श्रीबाजीरावः पेशवापदे नियुक्तः। सोऽपि वीरेषु वीरः सातारातः पुण्यपत्तने समाजगाम। उत्तरे भारते स्वप्रभावं प्रस्थापयितुं प्रवृत्तो बभूव।

सर्वत्र युद्धे यशस्विनो बाजीरावस्य कृते मस्तानी न केवलं सौन्दर्यवती स्त्री, अपि तु तस्य राष्ट्रिय-कार्येषु प्रोत्साहनदात्र्यपि सा बभूव।

बाजीरावेण सह मस्तानी पुण्यपत्तनं समागम्यागम्य- दुःखमवाप। इयं राजकन्यापि सम्भवतया विधर्मिणीति, तथैव तस्य पुत्रः पेशवा-कुल - सम्पदाया दायाधिकारी भविष्यतीति भीत्या रावस्य मात्रा राधया तथा बन्धुना चिमाजिनान्यैर्बान्धवैश्च पीडिता तथा निन्दितापि सा रावस्य प्रिया तथा सापि रावाय दत्तचित्तासीत्। लौकिकं तयोः प्रेमालौकिकम् जातम्।

पूर्वकाले (१९९० वर्षतमे) तयोः प्रीतिकथामाश्रित्य लघुकाव्यं रचयितुं प्रारभतायं कविः। अनन्तरमाधुनिकेतिहासकारैः कैश्चिन्मस्तानी-विषये 'पेशवे-दफ्तर'मिति नाम्ना ख्यातं नवीनोपलब्धेतिहासाभिलेखसङ्ग्रहमधीत्य नवीनतया ग्रन्थादिना प्रकाशितं यत् - मस्तानी राजकन्या बभूवेति। पुण्यपत्तने रावस्य स्वजनैः षड्यन्त्रकारिभिः विरोधिता। तदत्र पुरूरवसः उर्वशीव शूद्रकस्य मृच्छकटिकस्य नाट्य-प्रकरणस्य नायिका वसन्तसेनेव च काव्येस्मिन्नपि

मस्तानी नायिका भवितुमर्हति। तस्या निन्दकाः स्वजनाः काल-विकराल-मुखे प्रविष्टाः। किन्तु मस्तानी-रावयोरनवद्यं प्रेमाद्यापि लोके प्रियं वर्तते। लौकिकमपि प्रेमालौकिकं भवति। भवभूति-वचनं स्मर्यतेऽत्र -

'तत् तस्य किमपि द्रव्यं
यो हि यस्य प्रियो जनः। ' इति। (उत्तररामचरिते)

श्रीबाजीरावेण स्वराज्यस्य संस्थापकात् छत्रपति-शिवराजात् प्रेरणां गृहीत्वा भारतम् राष्ट्रम् परचक्रात् मुक्तं कर्तुम् प्रयत्नः कृतः। दुर्भाग्यवशात् गृहकलहसंतप्तोऽयं स्वजनैः विरोधितः राष्ट्रिय-वीरः चत्वारिंशत्तमे वयसि दिवंगतः। सा राष्ट्रिया हानिरेव। तस्य मृत्युः दूरं रेवा-तटे जातेऽतिदुःखदां वार्तां पुण्यपत्तनसमीपे पाबल-ग्रामे स्वजीवितेश - चिरविरहमसहमाना जीवितम् त्यक्तवती मस्तानी।

प्रायः संस्कृत-साहित्ये न हि शोकान्तिका (त्रासदी) स्वीक्रियते। तथाप्यत्र विषयेऽवसरो विचाराणाम्। नाटकादिषु रूपकेषु शोकान्तिका भारतीय-दर्शन - परम्परामनुसृत्य ब्रह्मानंदसहोदररसे पर्यवसनात् दृश्य-काव्यस्य न स्वीक्रियते, किन्तु श्रव्यकाव्येषु नैतादृशी व्यवस्था स्वीकर्तुमर्हति। यतः वाल्मीकि-रामायणं शोकान्तिकमिति तथैव कालिदास-विरचितं महाकाव्यं रघुवंशं शोकान्तिकमिति मन्ये। रघुवंशेऽन्तिमराज्ञः अग्निवर्णस्य दुर्व्यवहारदर्शनात् शोकान्तिकायाम् परिणतिः। भवभूतिनोत्तररामचरिते शोकान्तिकापवर्जिता, दृश्यकाव्यत्वात्। अत एव बाजीराव-मस्तानीयमिति प्रस्तुतं काव्यमपि यद्यपि शोकान्तिकं, तथापि पूर्वपरम्परानुरोधेन

विद्वद्भिः स्वीकर्तव्यम्। शोकान्तिकत्वं न. हि वैदेशिकं तत्त्वमेव। नाटकेषु प्रेक्षागृहे आबालवृद्धप्रेक्षकाणां हृदये शोकान्तिका वैरस्यं जनयेत्, इत्यतः नाटकेष्वेव शोकान्तिका परिहर्तव्येति मे मतिः।

राष्ट्रिय-वीरस्य प्रेमगाथा-विषये इदमैतिह्यं न कवेर्निरंकुशत्वे बाधकं क्वापीति मे विनयोऽपि वरीवर्ति। वस्तुतस्तु कालिदासोक्त-वचनमनुसृत्य 'आपरितोषाद् विदुषां (रसिकाणां) न साधु मन्ये प्रयोग-विज्ञानम्।' काव्यमिदमिति सविनयं निवेद्यते।

पत्राचारमाध्यमात् कैश्चिन्मित्रैरस्य काव्यस्य कानिचित् पद्यानि पठित्वा पत्रैः प्रशंसितोऽयं कविः कविमित्रेभ्यो यद् विज्ञापितवान्, तदत्र रसिकानां कृतेऽपि सविनयं निवेदयति -

आतपत्रं भवत्पत्रं भवतापनिवारकम्
प्रशंसा भवतां भावः स्वभावादेव भावकः।।
निमित्तमात्रमत्रास्मि नटवद् रङ्गमाश्रितः
मित्रप्रेम - रसास्वादः किं नटस्यापि वार्यते?।।
इति शम्।

भवदीयो भावकविः

प्रभाकर नारायण कवठेकरः

१४५, अनूपनगरम्,
इन्दौरम् (म.प्र.) ५४२ ००८
दूरभाषम् - ०७३१ - २५५०६४४

यथार्थ और निहितार्थ

प्रथम बार स्वराज्य का मंत्र देनेवाले राष्ट्रीय वीर छत्रपति शिवाजी महाराज के पौत्र तथा सातारा (महाराष्ट्र) के अधिपति श्री शाहू महाराज द्वारा पेशवा नामक मुख्य अमात्य पद पर एक और राष्ट्रीय वीर श्री बाजीराव (प्रथम)* सन् १७२० में नियुक्त हुए। इधर बुन्देलखण्ड के राजा श्री छत्रसाल ने अपनी युवावस्था में छत्रपति शिवाजी महाराज से स्वराज्य के लिए प्रेरणा ग्रहण की थी। मोगल बादशाह औरंगजेब के द्वारा भेजी गई सेना ने श्री छत्रसाल के राज्य पर अनेक बार हमले किये थे। श्री छत्रसाल की वृद्धावस्था में भी एक बार औरंगजेब के पौत्र के सेनापति मुहम्मद बंगश ने उनके राज्य पर हमला किया तब असहाय होकर उन्होंने पेशवा श्री बाजीराव को तुरन्त पत्र भेजा ''बाजी राखो लाज़।''

यह पाती पाते ही पेशवा श्री बाजीराव पुणे से अपनी सेना के साथ निकलकर बुन्देलखण्ड़ पहुँच गए। अपने पराक्रम से बाजीराव ने बंगश को परास्त कर दिया और राजा तथा उन के राज्य की रक्षा की(१७२८ ई०)। इस प्रसंग में उपकृत राजा ने उपकार-कर्ता श्री बाजीरांव को तीसरे पुत्र के समान माना। उन्हें जागीर दी तथा उनकी अनेक रानियों में से एक यवन-पत्नी से जन्मी सुंदर कन्या मस्तानी का विवाह उन के साथ करा दिया।

कोई किस्सा-कहानी रोचक होती है। किस्सा का हिस्सा आकर्षक बनता जाता है, किन्तु कहानी में एक हानि भी छिपी रहती है। बाजीराव-मस्तानी की

प्रेम-गाथा सारे भारत में चर्चा का विषय बनी किन्तु कहानी के अनुसार पति श्री बाजीराव के साथ पुणे में आने पर कुछ ही वर्षों के बाद श्री बाजीराव के घर के लोगों तथा सगे-सम्बन्धियों के द्वारा वह पीड़ित हुई। उस के विरूद्ध षड्यंत्र रचे गए। यह उस के द्वारा अपने जीवन में भोगी हुई हानि थी, किन्तु उन की प्रेमगाथा अमर हो गई थी। कृष्णभक्त मस्तानी के प्रति मेरे कवि-मन में जो सहानुभूति हुई उसे मैं इस पद्य में प्रस्तुत करता हूँ -

क्षीरोदधौ शुक्तिपुटेऽप्युषित्वा
नक्रादिघोरेऽपि शुचित्वमाप्य।
भूमौ समागत्य महर्गरत्नम्
मुक्तापि बद्धा हरिकण्ठहारे।।

(अर्थात्, भगवान के क्षीर-सागर में मोती नन्हेसे सीप के अंदर रहकर भी तथा मगरमच्छ जैसे भयानक जलचर प्राणी जिसमें हैं ऐसे गहरे समुद्र में भी जिसने अपनी शुचिता बनाए रखी है और वह भूमि पर आ कर एक अमूल्य रत्न के रूप में परिणत होता है वह मौक्तिक-रत्न मुक्त होने पर भी भगवान श्रीकृष्ण के कंठ-हार में बद्ध हो जाता है।)

यवन स्त्री से उत्पन्न होने के बावजूद वह कृष्ण-भक्त थी और थी पतिव्रता भी। पहली बार १९९० ई० में इस अमर प्रेम-गाथा के तथा बाजीराव के राष्ट्रीय चरित्र को देखते हुए एक नया संस्कृत-काव्य लिखना शुरू किया। किन्तु इधर कुछ वर्षों से इतिहास की दृष्टि से महत्वपूर्ण 'पेशवे-दफ्तर' नामक अनन्तर में चर्चित अभिलेख संग्रह के आधार पर कुछ विद्वानों ने मस्तानी पर नया प्रकाश डाला। फलस्वरूप

मुझ में स्थित निरंकुश कवि के काव्य की नायिका को न्याय मिला। इस से प्रोत्साहित हो कर मैंने इस काव्य को विस्तृत स्वरूप दिया। यह माना जा सकता है कि मस्तानी की प्रताड़ना बाजीराव के स्वजनों के द्वारा, मस्तानी-राव का पुत्र पेशवा कुल की संपदा का वारिस बनेगा इस ड़र से हुई। जहाँतक मुस्लिम माता का प्रश्न है, इतिहासकार भी यह नहीं जानते कि वह कौन थी? (The origin of *Mastani* is shrouded in the mystry: '*The Chhatrasal Bundela*' by B.D. Gupta p. 89) एक जनश्रुति के अनुसार पूर्व में वह हिन्दू युवती थी जो किसी यवन सेनापति द्वारा अपहृत होने के बाद राजा छत्रसाल ने उसे अपनाकर उसका उद्धार किया। कई तथ्यों पर इतिहास मौन रहता है। जनश्रुति इतिहास की सहचरी होती है। उसे इतिहास के समाज में मान्यता नहीं मिलती। राजा छत्रसाल एकेश्वरवादी प्रणामी धर्म के अनुयायी थे जिसके संस्थापक स्वामी प्राणनाथ थे, जिनके सिद्धान्त के अनुसार ईश्वर-अल्ला में कोई भेद नहीं है। इसलिए उनके रनवास में मुस्लिम रानी भी थी। फिर भी प्राणनाथ परचक्र के विरोधी थे।

यद्यपि यह प्रेमगाथा है तथापि किसी सामान्य व्यक्ति की नहीं है। अठारहवीं शताब्दी के राष्ट्रीय वीर पेशवा बाजीराव ने परचक्र के खिलाफ मुगल, पुर्तुगीज, निजाम आदि भारत के शत्रुओं से जितनी भी लड़ाइयाँ लड़ीं वह सारी वे जीत गए थे।

वैदिक काल से इस परचक्र से भारत आतंकित रहा है। दिल्ली भारत की प्रतीकात्मक प्रभुसत्ता का केन्द्र रही है। शकुनी के माध्यम से कौरवों को अपनी ओर कर पश्चिमी परचक्र का हस्तिनापुर पर अधिकार जमाने

की चेष्टा हुई थी जिसका प्रतिकार राष्ट्रीय महापुरूष श्रीकृष्ण ने पांड़वों के माध्यम से सफलतापूर्वक किया था। सिकंदर का अभियान भी परचक्र ही था। राष्ट्रीय आचार्य चाणक्य ने चंद्रगुप्त प्रथम के माध्यम से उसका प्रतिकार किया था। परचक्र के विरोध में लड़ाई लड़नेवाले विक्रमादित्य की परंपरा में विक्रमांक देव, नवसाहसांक, राजा भोज आदि हुए और छत्रपति शिवाजी को मैं आखरी विक्रमादित्य मानता हूँ। विक्रमादित्य के पद की अवधारणा यह है कि परचक्र से राष्ट्र को मुक्ति दिलाना और वे राष्ट्रवीर विद्वान भी हुआ करते थे। शिवाजी महाराज से प्रेरणा ग्रहण करनेवाले श्री बाजीराव ने तत्कालीन परचक्र का विरोध किया। न केवल वे लड़ाई लड़े, उन्होंने कई वीरों का निर्माण किया जिनमें होलकर, शिंदे, पवार, गायकवाड़ आदि रणवीरों का समावेश है। केवल उनकी अनूठी प्रेम-कहानी को लेकर स्वजनों के गृहकलह ने उनको हतोत्साह कर दिया। परिणाम-स्वरूप उम्र के चालीसवें साल में ही पुणे से दूर नर्मदा किनारे रावेरखेड़ी ग्राम में उन की असामयिक मृत्यु हुई। यह शोकान्तिका होकर भी एक अमर प्रेमगाथा भी है। संस्कृत काव्य-समीक्षा के अनुसार त्रासदी नहीं होने का विचार प्रबल रहा है। वास्तव में आबालवृद्ध प्रेक्षक नाटक के अंत में नायक-नायिका की मृत्यु और तज्जनित अवसाद सहन नहीं कर सकते। अतः दृश्यकाव्य में त्रासदी नहीं है किन्तु वाल्मीकि-रामायण तथा कालिदास के रघुवंश आदि श्रव्यकाव्यों में मैं त्रासदी मानता हूँ। प्रस्तुत काव्य भी श्रव्यकाव्य है अतः त्रासदी राष्ट्रीय तथा व्यक्तिगत हानि की दृष्टि से रसिकों को स्वीकार्य होगी। नायक-नायिका की मृत्यु विभाव की मृत्यु है अतः वहाँ

करुण-रस हो सकता है, न कि कारुण्य। यह साधारणीकरण तत्व का चमत्कार है। त्रासदी वैदेशिक तत्व नहीं है।

वास्तव में यह इतिहास का कोई ग्रंथ नहीं है। अपितु मेरा प्रयास है कि मेरा यह काव्यग्रंथ रसिकों के लिए प्रस्तुत एक कृति है। इतिहास विवाद्य हो सकता है किन्तु काव्य आस्वाद्य होता है। यदि रसिकों के मन में वह आनन्द की प्रस्तुति कर सकता है तो मैं अपने आप को धन्य मानूंगा।

– डॉ. प्रभाकर नारायण कवठेकर

१४५, अनूपनगरम्,
इन्दौर (म.प्र.) ५४२ ००८
दूरभाष – ०७३१ – २५५०६४४

कृतज्ञता

एक संस्कृतज्ञ कृतज्ञ न हो यह कैसे सम्भव है? विशेषतः उन पूर्वजों का जिन्होंने 'अपूर्वज' साहित्य-धन उन्मुक्त हस्त से दिया। अनेक भगीरथों ने काव्य-गंगा के प्रवाह को रसिकों के लिए मोड़ कर उपलब्ध करा दिया है। इस गंगा में भी डुबकी लगा रहा हूँ। इसलिए कालिदासोक्त 'पूर्वसुरियों' के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ।

किसी नवागत अतिथि का स्वागत होता है वह 'मधुपर्क' होता है। मधुपर्क एक मधुर सम्पर्क ही है जो नव-रसिकों से सम्पन्न होता है। मैं इन रसिकों का आभारी हूँ जिन्होंने मेरी अतीत की संस्कृत कविता को उदारतापूर्वक स्वीकारा और अब इस नये सम्पर्क को भी जो स्वीकारें तो, उन के प्रति भी कृतज्ञ रहूँगा।

मेरे युवा मित्र श्री *मनोज पाण्डेय* (अध्यापक, सरला बिरला पब्लिक स्कूल, बंगलोर) मेरे साशीष कृतज्ञता के पात्र हैं। मेरी छात्राओं में श्रीमती *बिल्लोरे* और श्रीमती उर्ध्वरेषे नामक भगिनी-द्वय हैं, उन्होंने प्रतिलिपि तैयार की। मैं उनका आभारी हूँ।

मेरे नये सहयोगी मित्र श्री *विजय रामचंद्र दीक्षित* जी ने कम्प्यूटर सेवा के माध्यम से मेरे वृद्धिंगत काव्य को सम्पुटित करने के लिये मैं उनका आभारी हूँ। मुख्य पृष्ठ के चित्रकार श्री *संदीप राशिनकर* और श्री *माधव साठे* जी का भी आभारी हूँ।

मैं *'राजा केलकर संग्रहालय, पुणे'* नामक संस्था का आभारी हूँ जिन्होंने *मस्तानी–महल* का चित्र भेजा। मैं *'इतिहास संशोधक मंडल, पुणे'* का भी आभारी हूँ जिन्होंने *बाजीराव* और *मल्हारराव होलकर* का चित्र प्रकाशनार्थ भेजा। मैं *'राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली* के सहयोग के लिये आभारी हूँ।

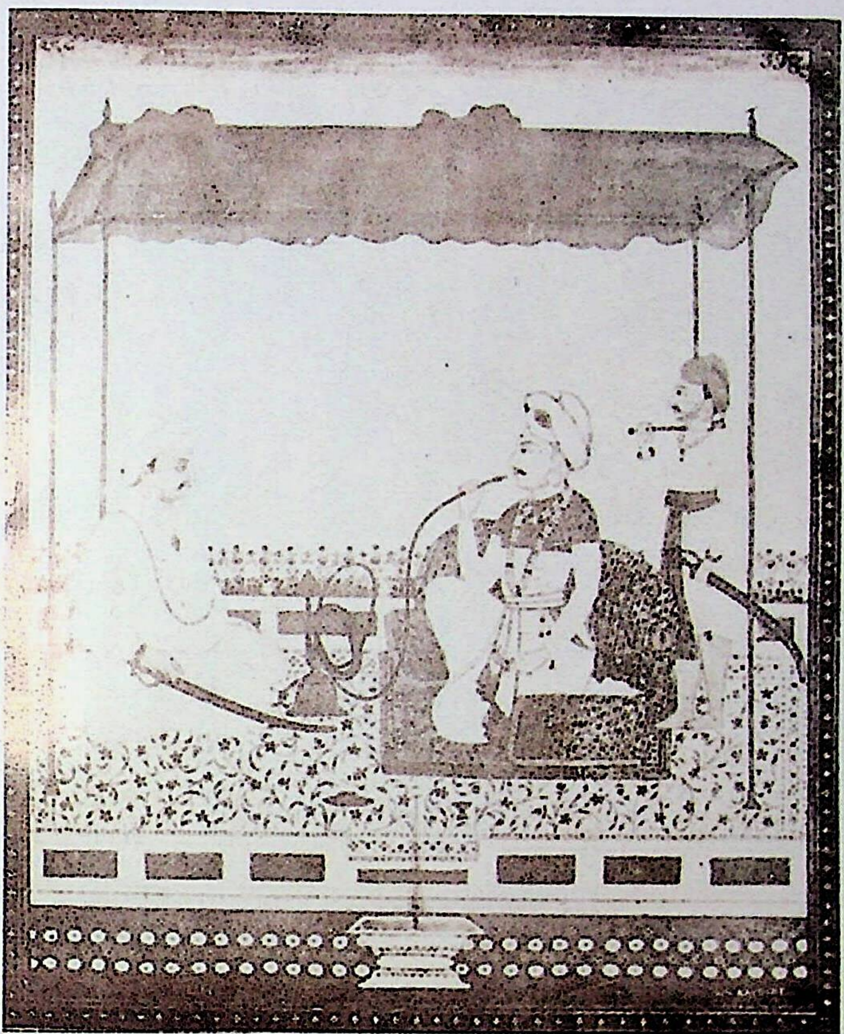
मैं श्री *सुमीत चावला* (लास्टिंग इम्प्रेशन, प्रिन्टिंग प्रेस, नई दिल्ली – ११००२६) का आभारी हूँ जिन्होंने सुचारु रूप से इस पुस्तक का मुद्रण किया। मेरे मित्र श्री यशपाल सिंह राजपूत (से.नि.कर्नल) का भी कृतज्ञ हूँ जिन्होंने श्री बाजीराव के चित्र उपलब्ध कराये।

और अंत में आभार मेरे भतीजे श्री रितेश का, जिसने मेरे एवं मेरे पुत्र श्री दिलीप के साथ कम्प्यूटर शुद्धिलेखन में विशेष सहयोग दिया।

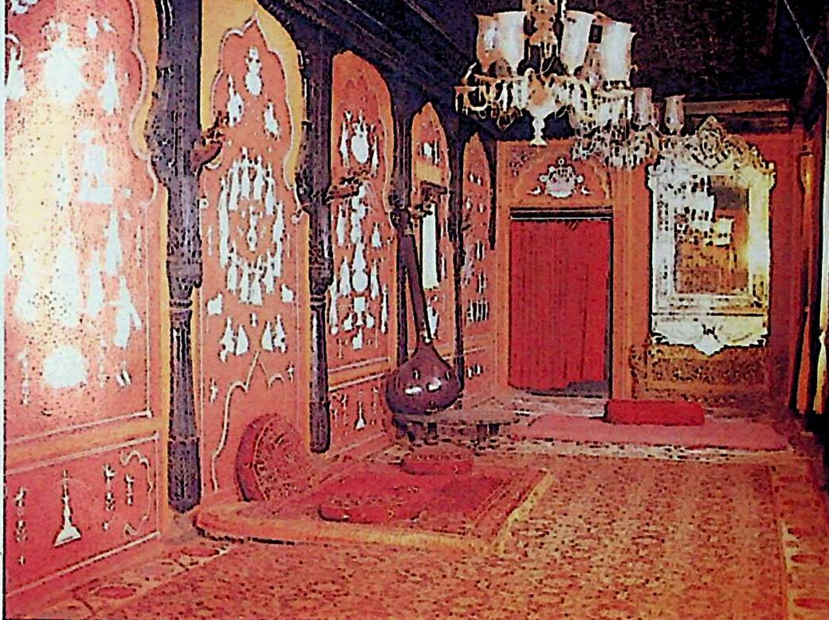
– डॉ. प्रभाकर नारायण कवठेकर



प्रथम श्री बाजीराव पेशवा
मुगल शैली



बाजीराव पेशवा तथा मल्हारराव होलकर
(भारत इतिहास संशोधक मण्डल, पुणे, के सौजन्य से)



मस्तानी महल
(सौजन्य : राजा केलकर म्यूजियम, पुणे)



श्री बाजीराव पेशवा द्वारा निर्मित
पुणे स्थित शनिवारवाडा का द्वार

पूर्वरागः

।। श्रीः ।।

बाजीराव-मस्तानीयम्

पूर्वरागः

अभून्महाराष्ट्र-सुदेश-वीरः
श्रीभोसले-नाम-कुलावतंसः ।
शिवाजिनाम्ना जगति प्रसिद्धः
चक्रे स्वराज्याय च यो प्रतिज्ञाम् ।।१।।

१. प्रमिला-टीका - पूर्वरागः प्रथमो भागः। प्रथमं प्रेम इति। मंगलाचरणम् - आशीर्नमस्क्रिया-वस्तुनिर्देशादिषु वस्तुव्यक्तिनिर्देशपुरस्सरं ग्रन्थविघ्नोपशान्तये प्रारब्धस्यान्तगमनं द्वितीयं बुद्धिलक्षणमिति न्यायेन च वस्तुव्यक्तिनिर्देशात्मकमिह मङ्गलाचरणं अभूदिति। तत्र भोंसलेकुलोत्पन्नेन प्रसिद्धराष्ट्रियपुरुषेण श्रीशिवाजीराजेन शैशवे 'हिन्दवीस्वराज्यस्य' कृते प्रतिज्ञा कृतेति प्रसिद्धम्। भारतस्य स्वराज्यस्य कृते तदीय-प्रयत्नात् प्रेरणां गृहीतवान् काव्यनायकः श्री बाजिरावः पेशवा (प्रथमः) इति नामधेयो युद्धेषु यशस्वी वीरः, अतः श्रीशिवराजपुण्यस्मरणेन काव्यारम्भः। उपजाति-वृत्तम्।

१. हिन्दी(भावार्थ) - महाराष्ट्र के भोंसले नामक कुल में प्रख्यात राष्ट्रपुरुष छत्रपति श्री शिवाजी महाराज हो गए जिन्होंने बचपन में 'हिन्दवी स्वराज्य' की स्थापना के लिए रोहिड़ेश्वर शिव भगवान् के सामने प्रतिज्ञा की थी।

श्री शिवाजी कार्यकाल (ई.स. १६२७-१६८०)

स्वराज्यवीरः शिवराज नामा
सम्भाजिराजश्च तदीयपुत्रः।
सम्भाजिपुत्रो नृपशाहुराजः
सातारराज्येऽधिपतिर्बभूव।।२।।

(संस्कृतटीका)

स्वराज्यस्य स्वायत्तराज्यस्य यः बाल्ये वयसि प्रतिज्ञां कृतवान्, स राष्ट्रवीरः महान् छत्रपतिः शिवाजिः। तस्य पुत्रः सम्भाजिराजः। तस्य च पुत्रः सातारा-स्थितस्य राज्यस्य महाराष्ट्रेऽधिपतिः नृपः बभूव।

(हिन्दी)

स्वराज्य के संस्थापक छत्रपति श्री शिवाजी महाराज थे। उनके पुत्र श्री सम्भाजी हुए। श्री सम्भाजी के पुत्र श्री शाहू महाराज सातारा (महाराष्ट्र) के राजा हुए।

शिवाजि-पौत्रो नृपशाहुनामा
तस्य प्रियोऽभूत् खलु कोंकणस्थः।
बालाजिनामा भट-वंशजातो
भटः स विप्रः सुभटो रणेऽपि।।३।।

(संस्कृतटीका)

तदीयवंशे शिवराजस्य कुले पौत्रः महाराष्ट्रप्रदेशे पश्चिमायां दिशि सागर-सह्याद्रिमध्यस्थं कोंकणमिति क्षेत्रं, तत्र जातः। 'बालाजी विश्वनाथ भट' इति नामधेयः ब्राह्मणः, भट-नामधेयोऽपि रणे सुभटः युद्धवीरः इत्यर्थः। ब्राह्मणोऽपि क्षत्रियोचितवीरधर्मे निष्णात इति यावत्।

(हिन्दी)

अर्थात् छत्रपति श्री शिवाजी महाराज के पौत्र श्री शाहु थे। श्री बालाजी विश्वनाथ भट नामक एक कोंकणस्थ ब्राह्मण श्री शाहु के प्रिय व्यक्ति थे। ब्राह्मण होते हुए भी वे रण में क्षत्रियोचित वीर थे।

टिप्पणी - शाहू 'सातारा' प्रदेश के राजा थे। बालाजी विश्वनाथ उन के प्रथम पेशवा थे।

बालाजिपुत्रोऽपि च बाजिरावः

शौर्यात् स्वयं निर्मितवान् स्वशक्तिम्।

श्रीशाहुराजः समर-प्रसंगे

तं राज्यकार्ये प्रमुखं चकार।।४।।

(संस्कृतटीका)

श्रीबालाजी-विश्वनाथस्य पुत्रः श्रीबाजीरावोऽपि पितृवत् समरेषु वीरवरो बभूव। युद्धकाले श्रीशाहुनृपतिस्तं श्री-बाजीरावं पेशवापदे नियोजितवान्।

(हिन्दी)

श्री बालाजी विश्वनाथ के पुत्र श्री बाजीराव भी प्रसिद्ध वीर हुए, जिनके शौर्य के कारण श्री शाहूराजा द्वारा उनकी पेशवा के रूप में नियुक्ति की गई।

टिप्पणी - श्री बाजीराव सन् १७२० में पेशवा बने तब उन की आयु २० साल की थी। जन्म सन् १७००, मृत्यु १७४०.

विशालनेत्रो बलदीर्घबाहुः
कठोरवक्षोन्नतनासभव्यः।
तीक्ष्णास्य दृष्टिर्निजभल्लधारा
सुवर्णवर्णो भुवि कामदेवः।।५।।

(संस्कृतटीका)

विशाले नेत्रे चास्य। बलेन युक्तौ दीर्घौ विशालौ बाहू भुजौ यस्य सः। कठोरवक्षः सुदृढोरस्कः। उन्नतनासया भव्यः। अस्य बाजीरावस्य। निजस्य रावस्य भल्लशस्त्रस्य तीक्ष्णा धारा शत्रुभेदने निपुणा। सुवर्णस्य वर्ण इव वर्णः। भुवि लोके कामदेवः मदन इव सुन्दरः। रूपकम्।

(हिन्दी)

बाजीराव के नेत्र विशाल थे, दोनों भुजाएँ बलिष्ठ तथा लम्बी थीं। छाती सुदृढ थी और उँची नाक के कारण वे भव्य दिखाई देते थे। उनकी दृष्टि इस प्रकार पैनी थी जिस प्रकार उनके भाले की नोंक। सोने के वर्ण के समान उनका वर्ण था और पृथ्वी पर मदन जैसे वे सुन्दर थे।

प्रधान-साचिव्यपदे स्थितस्य
युद्धेऽपि कौशल्यमवेक्ष्य तस्य।
श्रीशाहुराजः शिवराजराज्ये
सेनापतिं तं विदधौ गुणज्ञः।।६।।

(संस्कृतटीका)

स्थितस्य - नियुक्तस्य तस्य बाजिरावस्य। अवेक्ष्य - दृष्ट्वा। गुणज्ञः सः शाहुराजः तं बाजिरावं सेनापतिं विदधौ - सैन्यप्रमुखं चकार।

(हिन्दी)

पहले से ही अपने सचिवपद पर स्थित उस बाजीराव का युद्ध में भी नैपुण्य देखकर गुणों के पारखी शाहूराजा ने उन्हें श्रीशिवाजी महाराज के राज्य का सेनापति नियुक्त किया।

श्रीबाजिरावः खलु पेशवाख्यो
युद्धे नृपं रक्षितवान् ससैन्यः।
युद्धे सदा दर्शित-शौर्यवीरः
राज्ञा नियुक्तः स च पेशवेति।। ७।।

(संस्कृतटीका)

श्रीबाजीरावः पेशवा इति नाम्ना प्रसिद्धः श्रीशाहुनृपतिं युद्धे रक्षितवान्। अतः राजा तं 'पेशवा'-पदे नियोजितवान्। ततः 'पेशवा' इति नाम्ना प्रसिद्धं कुलनाम जातम्।

(हिन्दी)

चूँकि युद्ध के समय राजा शाहू के वे संरक्षणकर्ता थे, राजा ने उन्हें पेशवा पद पर नियुक्त किया। तबसे पेशवे नाम से श्री बाजीराव प्रसिद्ध हुए। आगे वह कुल का नाम हो गया।

पेशवा = प्रधान मन्त्री।

तस्मै प्रदत्तानि च राजवस्त्र -
शस्त्राणि राज्ञा जनरक्षणार्थम्।
राज्यस्य शक्तिः प्रहिता हिताय
राज्यस्य लक्ष्मीर्वृणुते हि वीरम्।।८।।

(संस्कृतटीका)

राज्ञा - श्रीशाहुछत्रपतिना। वस्त्राणि शस्त्राणि च - राजकीयमान्यतानिदर्शकाणि वस्त्राणि सम्मानार्थम् राज्य-संचालनार्थं शस्त्राणि च। राज्ञा राज्यहितार्थं बाजिरावाय शक्तिः अधिकाराः। प्रहिता प्रदत्त। वृणुते - स्वीकरोति। अर्थान्तरन्यासः।

(हिन्दी)

राजा शाहू ने श्री बाजीराव को (सातारा) राज्य के अधिकार-स्वरूप वस्त्र व शस्त्र दिये। राज्य के कल्याण के लिए अधिकार दिये। राज्यलक्ष्मी हमेशा वीर पुरुष का ही वरण करती है।

तेन स्वधर्मस्य च रक्षणार्थम्
धृतं स्वलक्ष्यं परचक्रनाशः।
अनुसृता श्रीशिवराजनीतिः
गङ्गा हिमाद्रेरघनाशिनीव।।६।।

(संस्कृतटीका)

तेन श्रीबाजीरावेण। जनानां धर्मं रक्षितुं देशे परकीय-शत्रूणां नाशः। लक्ष्यं योजितं कार्यम्। छत्रपतेः शिवराजस्य नीतिः राष्ट्र-रक्षणार्थं राजनीतिः। हिमाद्रेः हिमालयस्य। अघनाशिनी अघानां पापानां विनाशिनी गङ्गा आसीदित्यर्थः। उपमा।

(हिन्दी)

बाजीराव ने स्वधर्म की रक्षा करने हेतु भारतीय जनता के (विदेशी) शत्रुओं के नाश का लक्ष्य धारण किया। उन्होंने श्री शिवाजी महाराज की नीति का अनुसरण किया जो हिमालय से निकली और पापों का नाश करनेवाली गंगा के समान दुष्टों का नाश करनेवाली नीति थी।

ब्रह्मार्पिता क्षत्रियवृत्तिमाया
प्रधानशक्तिः पुरुषोत्तमोऽयम्।
निःश्रेयसे न्यायविधिप्रवृत्तस्-
तद्दर्शनं येन विना न मुक्तिः ।।१०।।

(संस्कृतटीका)

भारतीय-षड्दर्शनेषु वेदान्त-सांख्य-न्यायप्रतिपादितं दर्शनत्रयस्य सिद्धान्तमनुसृत्य बाजीरावस्य व्यक्तित्वविषये वर्णयति - ब्रह्मेति। बाजीरावपक्षे ब्रह्मार्पिता ब्राह्मणत्वे प्रयुक्ता क्षत्रियवृत्तिः, क्षात्रधर्मः, सा एव माया मोहः। वेदान्तपक्षे ब्रह्मणि मायाया प्रवृत्तिः। बाजीराव-पक्षे प्रधाना शक्तिः शौर्यं यस्य सः पुरुषेषु उत्तमः श्रेष्ठः। सांख्यपक्षे, प्रधानं प्रकृतिः, सृष्टिनिर्माणे शक्तिः, पुरुषः चैतन्यं परमम्। रावपक्षे, निःश्रेयसे राष्ट्रकल्याणाय न्यायादिकार्यप्रवृत्तः। न्यायपक्षे, न्यायशास्त्रे प्रतिपादितं निःश्रेयसस्तत्त्वं, तदर्थम् न्यायशास्त्रविहितमार्गमनुसरन् स रावः। रावपक्षे, तस्य रावस्य दर्शनं येन विना पीडितानां जनानां न मुक्तिः संकटमोचनम्। अन्यपक्षेपि तदेव दर्शनं तत्त्वज्ञानं येन विना न मुक्तिर्मोक्षः। अर्थश्लेषोऽर्थान्तरन्यासश्च।

हिन्दी - (भारतीय दर्शन के वेदान्त, सांख्य तथा न्याय के तत्त्व राव में विद्यमान थे।) राव स्वयं ब्राह्मण थे, फिर भी क्षत्रिय धर्म में मोह था। वेदान्त में भी ब्रह्म-वस्तु पर माया का अवस्त्वारोप होता है। राव की क्षत्रिय-वृत्ति थी और सभी पुरुषों में वे श्रेष्ठ थे। सांख्य में भी सृष्टि-निर्माण की शक्ति प्रकृति में होती है, फिर भी श्रेष्ठ पुरुषतत्त्व ही है। राव जनकल्याण के लिए न्याय, विधि आदि में प्रवृत्त थे। न्यायशास्त्र में भी मुक्ति (निःश्रेयस्) के लिए प्रतिपादित मार्ग में प्रवृत्ति है। राव के दर्शन के बिना लोगों को संकट से मुक्ति नहीं मिलती थी। अन्य दार्शनिक अर्थ में भी वही दर्शन, दर्शन होता है, जिस के बिना मुक्ति (मोक्ष) प्राप्त नहीं होती। (दार्शनिक तत्त्व राव में चरितार्थ होते थे।)

वीरेषु वीरः प्रणये प्रवीणः
मित्रोपकारी स उदारसत्त्वः।
स्वतेजसा सुन्दररूपवाँश्च
यं द्रष्टुकामा अरियोषितोऽपि।।११।।

(संस्कृतटीका)

प्रणये प्रेम्णि अपि सः निष्णात इत्यर्थः। मित्राणाम् छत्रसालादीनाम् उपकारकः। उदारं सत्त्वं स्वभावो यस्य सः औदार्यशीलः। अरियोषितः अरीणां स्त्रियोऽपि। द्रष्टुं कामयन्ते ताः।

(हिन्दी)

सब वीरों में श्रेष्ठ और प्रणय में भी निष्णात, मित्रोंपर उपकार करनेवाले, उदार स्वभाव के तथा स्वयं तेजस्वी और सुन्दर रूपवाले बाजीराव थे जिन्हें देखने के लिए शत्रुओं की स्त्रियाँ भी तरसती थीं।

रवेर्यथा प्रागरुणस्य कान्तिः

श्री बाजिरावस्य तथैव कीर्तिः।

पुरः प्रयातोत्तरभारतेऽपि

ज्ञातो बभूवात्र च पेशवेति।।१२।।

(संस्कृतटीका)

प्राक् पूर्वमेव। अरुणोदयः प्रथम-सूर्योदयादिति। सूर्यस्यानन्तरमुदयः। तथैव श्रीबाजिरावः प्रत्यक्षत उत्तर-भारते गमनात् पूर्वमेव तस्य कीर्तिर्गता। पेशवा इति नामधेयं सर्वैर्ज्ञातम्। उपमालङ्कारः।

(हिन्दी)

सूर्योदयके पूर्व जिस प्रकार अरुण की कान्ति सर्वत्र फैलती है उसी प्रकार उत्तर भारत में श्री बाजीराव के पहुँचने के पूर्व ही उन की कीर्ति पहुँच गई थी। उन्हें लोग 'पेशवा' के नाम से जानने लगे।

युद्धान्निवृत्तः स्वजनप्रजासु
गुणैः स लोकप्रियतामवाप।
शक्तिस्तु रावस्य हि वैभवाय
भक्तिस्तदीया हृदि वै भवाय।।१३।।

(संस्कृतटीका)

निवृत्तः - स्वगृहं प्रत्यागतः। स्वजना आप्ताः प्रजाश्च तासु। वैभवाय - वैभवं = राज्यलक्ष्मीरूपा सम्पत्तिः तदर्थम्। भवाय - भगवते श्रीशंकराय आसीत्। वैभवायेति श्लेषः।

(हिन्दी)

युद्ध से लौटने पर बाजीराव प्रजा तथा परिवार में अपने गुणोंसे प्रिय हो गए थे। वैभव के लिए उनमें शक्ति थी और श्री शंकरभगवान् के लिए भक्ति।

स्वप्रान्तसीमामपि लङ्घयन् सः
स्वकार्यकेन्द्रं शिववासपुण्यम्।
चकार पुण्यं निज-वास-हेतोः
न कार्यसीमा कृत-निश्चयानाम्।।१४।।

(संस्कृतटीका)

श्री बाजिरावः महाराष्ट्र-सीमाया अपि समुलङ्घनम् चकार। स्वस्य कार्यक्षेत्रं निवासस्थानं च पुण्यपत्तने कृतम्। पुण्यपत्तनं श्री शिवराजस्य बाल्यकाले मात्रासह वास्तव्यम्, अत एव पुण्यक्षेत्रम् इत्यर्थः। श्री बाजिरावः स्वकार्यक्षेत्रं विस्तारितवान्। निश्चयात्मनां न सीमा कापि भवतीति सामान्येन विशेषस्य समर्थनात्। अर्थान्तरन्यासोऽलङ्कारः।

(हिन्दी)

सातारा के अपने छोटे से कार्यक्षेत्र को विस्तार देते हुए उन्होंने सीमा को लांघकर पुणें में अपना वास्तव्य बनाया। इस पुणे में छत्रपति शिवाजी बचपन में माँ के साथ रहे थे, यह उस नगरी का पुण्य था। निश्चयी लोगों की कोई कार्यसीमा नहीं होती।

स बाजिरावः शिवराज-कीर्त्या
प्रभावितोऽभूत् समरेषु दक्षः।
स्वराज्यहेतोर्नवभारतस्य
पुण्ये कृतस्तेन नवस्ववासः।।१५।।

(संस्कृतटीका)

छत्रपतेः शिवराजस्य यशसा तस्मान्महापुरुषात् प्रेरणां गृहीतवानित्यर्थः। पुण्यपत्तने 'शनिवारवाडा' इति नाम्ना प्रासादं महालयं निर्मितवान् सः।

(हिन्दी)

श्री बाजीराव पेशवा (प्रथम) ने छत्रपति श्री शिवाजी महाराज जैसे महापुरुष से प्रेरणा ली थी। और वे युद्धकार्य में भी निपुण थे। श्री बाजीराव ने नये भारत के स्वराज्य के लिए अपना पुणे में शनिवारवाडा नामक एक विशाल भवन बनाया।

टिप्पणी - पुणें में आज भी शनिवारवाडा विखण्डित रूप में दिखाई देता है और उस के सामने श्री बाजीराव पेशवा की एक भव्य अश्वारूढ दर्शनीय प्रतिमा आधुनिक काल में स्थापित है। हिन्दवी स्वराज्य का श्री शिवाजी का स्वप्न बाजीराव पूरा करना चाहते थे।

शैलात् कठोरात् जल-सौम्यधारा
लोके च शान्तिः खलु राजदण्डात्।
संज्ञा प्रचण्डस्य रवेश्च पत्नी
शत्रोश्च शत्रुः स्वगृहे प्रियः सः।।१६।।

(संस्कृतटीका)

कठोरात् प्रस्तरमयात् शैलात् पर्वतात् जलस्य सौम्या शान्तमयी धारा। प्रचण्डस्य प्रखर-तेजसः। संज्ञा नाम्नी रवि-भार्या। सम्वेदनशीला च। राजदण्डः राज्ञः अपराधिनः कृते दण्डविधानं कठोरम्? रावः शत्रूणां अरीणां शत्रुः गृहे तु प्रियः। दृष्टान्तः।

(हिन्दी)

कठोर पर्वत से सौम्य जलधारा निकलती है। राजा का (कठोर) दण्ड-विधान प्रजा को शान्ति प्रदान करता है। प्रखर तेजस्वी सूर्य की पत्नी संज्ञा (संवेदनशील) है। बाजीराव भी शत्रुओं को मारने वाले उनका (घोर) दुश्मन थे, फिर भी शत्रुओं का शत्रु होनेपर भी अपने घर में प्रिय व्यक्ति थे।

पवार-शिंदेऽनुज-होल्करान् स
परीक्ष्य वीरप्रमुखाँश्चकार।
रत्नान्यमूल्यानि बहूनि दातुम्
शक्नोति रत्नाकर एक एव।।१७।।

(संस्कृतटीका)

शूराणां निर्माणे रावस्य कौशलं वर्णयति पवार इति। वीराणां नामानि - श्रीउदाजी पवारः, राणोजी शिन्दे, अनुजः चिमाजिः, मल्हारराव-होलकरश्च, तान् अन्यानपि। स रावः। तेषां गुणान् परीक्ष्य। वीरेषु शूरेषु प्रमुखान् वीरवरान् सेनाप्रमुखाँश्चकार। बहूनि रत्नानि मौक्तिकादि-रत्नानि। लोकेभ्यो दातुम्। रत्नाकरः समुद्र एक एव। एको हि बाजिरावोऽनेकवीरान् निर्मितवान् इत्यर्थः। दृष्टान्तः।

(हिन्दी)

सर्वश्री उदाजीराव पवार, राणोजी शिंदे, भाई चिमाजी, मल्हारराव होलकर तथा अन्य वीरों के गुणों को परख कर राव ने उन्हें प्रशिक्षित किया तथा सेना में प्रमुख पदों पर नियुक्त किया। अनेक अमूल्य रत्नों को देने में सक्षम एकमात्र रत्नाकर (समुद्र) होता है।

परीक्ष्य मल्हार-गुणान् स रावः
शिंदे-पवारौ युधि शिक्षयित्वा।
स्व-प्रज्ञया तान् सुभटाँश्चकार
यूनां गुणान् प्रेरयति प्रबुद्धः।।१८।।

(संस्कृतटीका)

मल्हार-गुणान् श्रीमल्हारराव-होलकर नामा रणधुरंधरः, तस्य शौर्यादिगुणान् परीक्ष्य तेषां-परीक्षणं विधाय। शिन्देनामा राणोजिः, पवारनामा उदाजिश्च। युधि रणे। तान् होल्करादीन् सेनायाः पदेषु सैन्ये। प्रबुद्धः विशेषरूपेण प्रज्ञावान् मानवः यूनां तरुणानां गुणान् शौर्यादिविशेषान्। प्रेरयति - वर्द्धयति। अर्थान्तरन्यासः।

(हिन्दी)

श्री मल्हारराव होलकर के गुणों को परख कर तथा राणोजी शिंदे और उदाजी पवार को प्रशिक्षित कर बाजीराव ने उन्हें सेना के प्रमुख पदों पर नियुक्त किया। तरुणों के गुणों को प्रज्ञावान् व्यक्ति बढ़ाता है।

बुन्देलराज्यं प्रथितं सुराज्यम्

तस्यैव चाभून्नृपछत्रसालः।

चक्रे स्वतन्त्रम् निजराज्यमेषः

श्रीप्राणनाथानुचरः 'प्रणामी'।।१६।।

(संस्कृतटीका)

अतीतकाले उत्तर-भारते बुन्देलखण्ड इति नाम्ना प्रसिद्धं राज्यम्। श्रीछत्रसाल इति नाम्ना तस्य प्रसिद्धो राजा। तेन शत्रोः पाशात् स्वकीयं राज्यं स्वतन्त्रं कृतम्। तस्य च गुरूः प्रणामि-सम्प्रदायस्य आचार्यः श्री प्राणनाथः बभूव।

(हिन्दी)

(उत्तर भारत में) उस समय बुन्देलखण्ड नामक प्रसिद्ध राज्य था। उसका (छतरपुर का) राजा श्रीछत्रसाल था। उसने अपने राज्य को (शत्रुओं से) मुक्त करा लिया था। यह राजा प्रणामी-सम्प्रदाय के गुरू श्रीप्राणनाथ का शिष्य था।

टिप्पणी - एकेश्वरवादी प्रणामी सम्प्रदाय सर्वधर्मसमभाव को मानता है। हिन्दू, मुस्लिम और अन्य धर्म का ईश्वर एक ही है, अतः उन में वह सम्प्रदाय-भेद नहीं मानता। संस्थापक गुरू के द्वारा प्रवर्तित उस सम्प्रदाय के तत्कालीन गुरू श्री प्राणनाथ थे। सम्प्रदाय का नाम प्रणामी पड़ा।

सर्वेषु धर्मेषु समत्वभावात्

राज्ञीषु चैका यवनी तदाभूत्।

विधर्मिणी सापि तु धर्मपत्नी

स्थिता स्वधर्मं परिपालयन्ती।।२०।।

(संस्कृतटीका)

प्रणामि-सम्प्रदाये सर्वधर्मसमत्त्वरूपो धर्मः। तस्मात् राज्ञः श्रीछत्रसालस्यान्तःपुरेऽनेकराज्ञीष्वन्यतमा धर्मपत्नी यवन्यपि स्थिता। न तत्र भेदभावावसरः। विधर्मिणी इस्लाम-धर्मवती सापि धर्मपत्नी इति विरोधः। विरोधाभासः।

(हिन्दी)

राजा छत्रसाल सर्वधर्मसमभाव को मानने वाले थे, अतः उनके रनवास में (अन्य) रानियों में एक रानी मुस्लिम भी थी। भिन्नधर्म की होते हुए भी वह तो थी धर्मपत्नी। वह अपने धर्म का पालन करती थी। (धर्मभिन्नता के कारण कोई विरोध नहीं था)।

टिप्पणी - यह रानी मूलतः हिन्दू स्त्री थी यह भी एक जनश्रुति है। इतिहास मौन है।

औरंगजेबस्य च वंशजेन
बुन्देलराज्ये प्रहितं स्वसैन्यम्।
शत्रोश्च सेनां महतीं विलोक्य
राजा प्रजा-रक्षण-तत्परोऽभूत्।।२१।।

(संस्कृतटीका)

तदा राज्ञि छत्रसाले स्व-राजधान्याम् शासके सति। महोबा-नौगाँवयोः परिसरे। यवनाधिपेन बादशाह-सेनापतिना। प्रहितं प्रेषितम् युद्धाय। प्रजायाः स्वराज्यस्य जनानाम्। रक्षणं - आक्रमणात् रक्षणम् तदर्थम्। युध्दाय सन्नद्धः।

(हिन्दी)

श्री छत्रसाल बुन्देलखण्ड में (महोबा-नौगाँव में) राज्य कर रहे थे तब दिल्ली के बादशाह ने यवन सेनापति के साथ युद्ध के लिए सेना भेजी। तब बादशाह की बड़ी सेना को देखकर राजा छत्रसाल अपनी प्रजा के संरक्षण के लिए तैयार हो गए।

श्रीछत्रसालोऽपि सदैव युद्धे
दिल्लीश्वराद् रक्षितुमेवमैच्छत्।
तत्प्रेरकः छत्रपतिः शिवाजिः
शत्रुस्तयोस्तत् परचक्रमेव।।२२।।

(संस्कृतटीका)

शत्रुपराजयं कृत्वा युद्धे। दिल्लीश्वरात् यवनपातशाहात् औरंगजेब-पौत्रात्। राज्यं बुन्देलखण्डस्य। तस्य प्रेरकः उत्साह-प्रदाता। तयोः छत्रपति - छत्रसालयोः। परचक्रम् विदेशादाक्रमणकारिणां शत्रूणां सैन्यम्। भारत आक्रमणकारिणामेव शत्रुत्वम्।

(हिन्दी)

पूर्व मे श्री छत्रसाल अपने राज्य की रक्षा के लिए सतत लड़ते रहे और दिल्ली के तख्तपर बैठे औरंगजेब के पौत्र के सेनापति को युद्ध में जीत कर अपने राज्य की रक्षा करते रहें थे। श्री छत्रसाल ने छत्रपति शिवाजी से प्रेरणा ग्रहण की थी। उन दोनों महापुरुषों की शत्रुता परचक्र से थी। (परकीय शत्रु से थी)।

दृष्ट्वा तु तत्सङ्कटमत्र राजा
स प्रार्थयामास च बाजिरावम्।
सोऽपि प्रतस्थे स्वपुरात् ससैन्यः
न मित्रकार्याद् विरमन्ति विज्ञाः।।२३।।

(संस्कृतटीका)

सङ्कटं - शत्रूणां कृतमाक्रमणरूपम्। प्रार्थयामास सहायतार्थम्। प्रतस्थे निर्गतः। विज्ञाः - ज्ञानिनः सज्जनाः मित्राणां सहायतार्थम् यतन्ते। अर्थान्तरन्यासः।

(हिन्दी)

इस बार ऐसे एक बड़े हमले से उत्पन्न संकट से प्रजा को बचाने हेतु राजा ने श्री बाजीराव पेशवा (प्रथम) से प्रार्थना की। बाजीराव भी पुणे से निकल पड़े। ज्ञानी व्यक्ति मित्रकार्य से अपना मुँह नहीं मोड़ते। (श्री छत्रसाल ने लिखकर भेजा था - '*बाजी राखो लाज़!*')

यायावरोऽपि स्थिरनिश्चयोऽयम्

पृष्ठेऽश्वराजस्य सदा भ्रमँश्च।

उत्खातयन् वन्य-महारिवृक्षान्

प्रभञ्जनः शत्रुभिरेव दृष्टः।।२४।।

(संस्कृतटीका)

यायावरः भ्रमणशीलः। स्थिरः स्थायी निश्चयः निर्णयो यस्य, स्थिरमतिः। वन्यानां अरण्यगतानाम् वृक्षानिव अरीन्। प्रभञ्जनः प्रचण्डवायुचक्रम्। रूपकम् विरोधश्च।

(हिन्दी)

राव भ्रमणशील तो थे फिर भी उन का निश्चय स्थिर रहता था। बड़े घोड़े पर बैठकर हमेशा वे घूमते थे। अरण्य के महावृक्षों के रूप में खड़े हुए शत्रुओं को उखाड़ फेंकने वाले महावातचक्र के रूप में शत्रुओं ने उन्हें देखा।

किमभ्रखण्डोऽयमिति प्रचण्ड-
वातोत्थितो यः समरे पुरस्तात्?
तस्यासिधारा किमु दिव्यविद्युत्?
वीक्ष्यारयस्तं भ्रमिता रणे ते।।२५।।

(संस्कृतटीका)

प्रचण्डो भयङ्करोऽभ्रखण्डः मेघस्य रूपम्। वातैः प्रचण्डवायुभिः। उत्थितः उद्भावितः। पुरस्तात् समक्षम्। तस्य रावस्य। असिधारा खड्गधारा दिव्या दिवि प्रकटिता विद्युत् तडित् किमु? इत्येवप्रकारेणारयः शत्रवो भ्रमिता भ्रान्तिमवापुः। भ्रान्तिमान् अलङ्कारः।

(हिन्दी)

(बुंदेलखण्ड के उस) युद्धभूमि में राव को देखकर उनके शत्रुओं को भ्रम हुआ कि, क्या, किसी प्रचण्ड वायु से उठा हुआ यह प्रचण्ड मेघ है? और उसकी खड्ग की धारा को वे मेघखण्ड की बिजली समझ बैठे।

अकाण्डमेवोत्थितविप्लवं तं
श्रीबाजिरावं यवनस्तु मेने।
अमित्रहो मित्रकृते कृती सः
श्रीबाजिरावो विजयं ह्यवाप।।२६।।

(संस्कृतटीका)

विप्लवं प्रचण्ड़वातचक्रम्। अमित्रं - शत्रुः, तं हन्ति। मित्रकृते - श्रीछत्रसालस्य कृते। कृती कृतकृत्यः। विजयी बभूवेत्यर्थः। न मित्रहः अमित्रहः इति विशेषता।

(हिन्दी)

(हमला करनेवाले) यवन ने श्री बाजीराव को खड़ा हुआ तूफान मान लिया। शत्रु का नाश मित्र के लिए कर श्री बाजीराव कृतकृत्य हुए। युद्ध में श्री बाजीराव की विजय हुई।

टिप्पणी - वह मुगल सेनापति मुहंमद बंगश था।

प्रचण्डयुद्धे विजितः स शत्रुः
मुहम्मदो बंगश-नामधेयः ।
रावश्च भूमि-ग्रहणे प्रवृत्तान्
हत्वा त्वरीन् भूमिगताँश्चकार।।२७।।

(संस्कृतटीका)

बुन्देलखण्डस्य मुहम्मदः बंगश-नामा शत्रुः। रावश्च भूमि-ग्रहणप्रवृत्तान् बुन्देलखण्डभूमौ बलादाक्रम्य युद्धाय प्रवृत्तान् यवनान् मोगल-सैनिकान्। भूमौ गतान् पूरितान्। कृतवान्।

(हिन्दी)

मोगल बादशाह (फर्रुखसियर) के सेनापति मुहम्मद बंगश ने श्रीछत्रसाल के राज्यपर आक्रमण किया था, उस शत्रु को बाजीराव ने जीत लिया। बुन्देलखण्ड की भूमि को हड़पने का प्रयास करनेवाले सैनिकों को उस भयंकर युद्ध में बाजीराव ने मारकर भूमि में भेज दिया।

श्रीछत्रसालोऽपि तु बाजिरावं
तं संकटे रक्षकमेव मेने।
प्रासादगर्भे हृदये च मित्रं
समं समादाय गतः कृतज्ञः।।२८।।

(संस्कृतटीका)

श्रीछत्रसालः सङ्कटे रक्षणकर्ता इति मेने। मित्रं श्री बाजीरावं प्रासादस्य गर्भे अन्तःप्रकोष्ठे हृदये अन्तःकरणे च सममेव द्वयेऽपि। श्रीबाजीरावेण सह विवेश। सहोक्तिः।

(हिन्दी)

उस संकट से बचानेवाले के रूप में श्री छत्रसाल ने श्री बाजीराव को माना। उन्होंने उनके प्रासाद के भीतरी दालान तथा हृदय में साथ साथ प्रवेश किया। कर्मठ छत्रसाल कृतज्ञ थे।

उच्चासनस्थं च विधाय रावम्
वृद्धोऽपि नम्रो नृपतिर्जगाद। –
'राज्यं तथा जीवितमद्य युद्धे
किं रक्षिते मे न भवद्भिरेव?।।२६।।

(संस्कृतटीका)

(तमुपकारिणं) श्रीबाजिरावम् उच्चासनं – उन्नत स्थानम्। वृद्धो वयसा, नम्रास्तथापि श्रीछत्रसालः। किन्तु श्री–बाजिरावं सम्मानपूर्वकं विनम्रेण श्रीछत्रसालेन वृद्धेन प्रोक्तम् – ''भवद्भिरेव मे राज्य जीवितं च रक्षिते।'

(हिन्दी)

श्री बाजीराव को उँचे आसन पर बिठाकर वयोवृद्ध हो कर भी नम्र हुए श्री छत्रसाल ने श्री बाजीराव से निवेदन किया –

''श्रीमन्, आप ने ही युद्ध में मेरे राज्य और प्राणों की रक्षा की है।''

प्रश्नो भवद्भ्योऽत्र किमस्ति देयम्?
धृष्टं च मां कारयितुम् समर्थः।
ममास्ति राज्यं किमिदं च देयम्
तथापि नो प्रत्युपकार एषः।।३०।।

(संस्कृतटीका)

(श्रीमतां प्रत्युपकाराय) मया श्रीछत्रसालेन किं देयमिति प्रश्नः। राज्यं बुन्देलखण्डस्य राज्यम्। प्रत्युपकारः - श्री-बाजीराव - कृतोपकारस्य न प्रतिपूर्तिरिति यावत्। उदारसत्वं च श्रीछत्रसालस्य व्यज्यते।

(हिन्दी)

(*श्री छत्रसाल कहते हैं:*)

'यह पूछने की धृष्टता करता हूँ - आप के उपकार के लिए प्रत्युपकार क्या होगा यह प्रश्न मेरे सामने है। यह मेरा राज्य आप लीजिए, फिर भी यह प्रत्युपकार नहीं होगा।

श्रीपेशवाख्याः सुभटा भवन्तः
सद्योऽनवद्यास्ति ममाद्य शक्तिः।
विन्ध्यस्य सह्यस्य च सख्यभावात्
प्राप्नोतु सौख्यं खलु मध्यदेशः'।।३१।।

(संस्कृतटीका)

पेशवा इति नाम्ना ख्याताः सुभटाः वीराः। सद्यः तत्कालम्। युद्धे भवतां जयेनेति यावत्। अद्य मम शक्तिः बलम्। अनवद्या दोषरहिता मम छत्रसालस्य। विन्ध्यसह्यपर्वतयोः सख्यं मित्रत्वं, तस्मात् मध्यदेशः अचलद्वयमध्ये स्थितः प्रदेशः सौख्यं निरापदत्वं प्राप्नोतु।

(हिन्दी)

हे महाशय, आप पेशवा नाम से जानेमाने वीर हैं और आप के कारण अभी मेरी शक्ति निर्दोष भी हो गई है। हमारे विन्ध्य पर्वत तथा आपके सह्याद्रि के बीच का मध्यदेश (हमारी) मित्रता के कारण निरापद सुख को प्राप्त करें।'

उवाच रावोऽपि च छत्रसालम् –

'मित्रस्य कार्यम् मम धर्म एषः।
न लाभलोभात् कृतमस्ति कार्यम्
निमित्तमात्रं नृप मामवेहि।।३२।।

(संस्कृतटीका)

रावः उ़वाच – मित्रमिति। मित्रस्य श्रीछत्रसालस्य कार्यं राज्यसंरक्षणरूपम्। धर्मः कर्तव्यम्। लाभस्य स्वार्थहेतोरित्यर्थः। लाभः प्राप्तिः। निमित्तमात्रं-मां-केवलं निमित्तत्त्वेन कृतं संरक्षणम्। श्रीबाजीरावस्य विनीतभावो व्यज्यते।

(हिन्दी)

श्री बाजीराव ने भी छत्रसाल से कहा –

'मित्र का कार्य करना मेरा कर्तव्य है। मैने किसी स्वार्थप्राप्ति के लिए यह राज्यरक्षण का कार्य नहीं किया है। मैं तो केवल निमित्तमात्र हूँ।

ख्याता हि विश्वे शिवराज-कीर्तिः
तत्कार्यपूर्तिर्मम कार्यमस्ति।
भवाँन्स्तु मे पितृवदेव राजन्,
न किञ्चिदत्रास्ति तु वाञ्छनीयम्'।।३३।।

(संस्कृतटीका)

छत्रपति-श्रीशिवराजस्य कीर्तिः यशः। तस्य कीर्तिर्विख्याता। तस्य श्रीशिवराजस्य कार्यं राष्ट्रियम् अवशिष्टं कार्यं मया पूर्णतां नेतव्यमिति मे सङ्कल्पः। भवान् श्रीछत्रसालः। पितृवत् = पिता यथा ज्येष्ठ आदरणीयो भवति तथा। अत्र अस्मिन् राज्ये भवद्भ्यः नास्त्यपेक्षा कापीत्यर्थः। काव्यलिङ्गम्।

(हिन्दी)

विश्व में छत्रपति श्री शिवराज की ख्याति बड़ी है। मैं तो उनका अपूर्ण कार्य पूर्ण कर रहा हूँ। आप मेरे पिता के समान आदरणीय हैं। यहाँ से मुझे कुछ भी वाञ्छनीय नहीं है।'

सवाष्पनेत्रस्तु निशम्य राजा
प्रभावितो राववचोगुणैश्च।
उवाच साशीर्वचनं, -'भवान्मे
सौख्यप्रदः पुत्रसमोऽस्ति जातः।।३४।।

(संस्कृतटीका)

वाष्पेण - अश्रुभिः सह, सवाष्पे नेत्रे यस्य सः श्री-छत्रसालः। सम्प्रति पुत्रसमः - पुत्रवत् सौख्यस्य सुखस्य दाता भवतीति।

(हिन्दी)

श्री छत्रसाल की आँखों में आँसू आ गये। वे श्री बाजीराव के वचन और गुणों से प्रभावित हुए। बोले -

'आशीर्वाद देता हूँ। आप पुत्र के समान मुझे सौख्य प्रदान कर रहे हैं।

किमस्ति यंन्मित्रवराय देयम्?
अमूल्य-रत्नं खलु मित्रमेव।
न वैभवे, वैभव-लालसा स्यात्
बुन्देलमित्रं हि शिवो बभूव।।३५।।'

(संस्कृतटीका)

मित्रवराय श्रीबाजीरावाय। अमूल्यं बहुमूल्यं रत्नं बाजीरावस्य मित्रत्वम्। वैभवे सम्पत्तौ। लालसा तृष्णा, श्रीबाजीरावस्येति शेषः। अपरञ्च श्रीशिवराजः बुन्देलखण्डस्य राज्यस्य मित्रम्। भवान् मित्रवरः श्री-शिवराजोऽपि मित्रम्, तदेव धनमस्माकम्। किं देयमिति प्रश्नः।

(हिन्दी)

श्रेष्ठ मित्र को देने योग्य क्या वस्तु है? मित्र ही अमूल्य रत्न है। ऐश्वर्य से युक्त आप को वैभव की कोई लालसा नहीं है। और तो और, पूर्व में बुन्देलखण्ड के प्रति श्री शिवाजी महाराज की मित्रता भी थी।

भवाँस्तृतीयोऽस्ति सुतो मदीयो
ददामि राज्यस्य तृतीयभागम्।
ममास्ति शत्रुर्भवतां स एव
शत्रौ समाने दृढमित्रभावः'।।३६।।

(संस्कृतटीका)

भवान् बाजीरावः। पुत्रद्वयेऽपि तृतीयो भवान्। बान्दानामा राज्यभागः तम्। मुगल-पातशाहो मम छत्रसालस्य शत्रुः, स एव भवतामपि। शत्रौ समाने यदि शत्रुः समानः। दृढश्चासौ मित्रभावश्च। समानशत्रुत्वे सखाभावो दृढो भवतीत्यर्थः। अर्थान्तरन्यासः। औदार्यं व्यज्यते।

(हिन्दी)

आप मेरे तीसरे पुत्र हैं। मेरे राज्य का तीसरा हिस्सा बांदा मैं आप को दे रहा हूँ। मेरा जो शत्रु याने मुगल बादशाह है, वह आप का भी शत्रु है। यदि दोनों का शत्रु समान हो तो मित्रत्व दृढ़ होता है।'

टिप्पणी - राव-मस्तानी के वंशज बांदा के नवाब हुए जो वर्तमान में इन्दौर मे रहते हैं।

अत्रान्तरे कापि सुकोमलाङ्गी
सद्यःप्रविष्टा नवयौवने या।
यां शैशवं नैव विहातुमैच्छत्
तत्रागतान्तःपुरतः पुरस्तात्।।३७।।

(संस्कृतटीका)

अत्रान्तरे - श्रीबाजीराव - छत्रसालयोः संभाषणसमये। शैशवं बाल्यावस्था। शैशव-यौवन-सीमावर्तिनी किशोरी। अन्तःपुरादिति तस्या राजगृह एव वासं द्योतयति राजकन्यारूपेण इति भावः। तत्र - यत्र द्वयोः वार्तालापः समजनि। पुरस्तात् श्रीछत्रसाल-रावयोः समक्षम्।

(हिन्दी)

उन दोनों का वार्तालाप चल रहा था तब कोई सुन्दर युवती जिस में यौवन ने प्रवेश तो किया था किन्तु शैशव उसे छोड़ नहीं रहा था, उस कक्ष में अन्तःपुर से आकर दोनों के सामने पहुँच गई।

सायं नभःपार्श्वगतेव सन्ध्या
नदीव विन्ध्याचलसन्निधौ च।
तीरे वनश्रीरिव तोयराशेः
नृपस्य पार्श्वे युवती च तस्थौ।।३८।।

(संस्कृतटीका)

सायं नभः सायंकालीनं आकाशम्। तस्य पार्श्वे क्षितिजे गता सन्ध्येव। आरक्ता सन्ध्या भवति। विन्ध्याचलस्य। नदीवत्। विन्ध्यस्य आसन्नं गता समीपे गता। तोयराशेः जलाशयस्य तीरे वनश्रीः उपवनलक्ष्मीरिव। युवती मस्तानी नृपस्य छत्रसालस्य पार्श्वे तस्थौ। मालोपमा।

(हिन्दी)

सायंकालीन आकाश मे पीछे दिखाई देनेवाली आरक्त संध्या के समान, विन्ध्य पर्वत से निकली किसी नदी के समान, और जलाशय के किनारे के निकट उपजी वनश्री के समान वह युवती मस्तानी (पिता) राजा के पीछे आकर खड़ी हो गई।

शौर्यं श्रुतं यस्य तमेव द्रष्टुम्

कुतूहलात्तत्र समागता सा।

विस्मृत्य मुग्धान्यजनाँस्तु रावम्

ददर्श सैकं पुरुषोत्तमं तम्।।३६।।

(संस्कृतटीका)

श्रुतकीर्तिमतः बाजीरावस्य दर्शनार्थम् कुतूहलात्। युद्धे रावस्य शौर्यम्। अन्यजनान् तत्र स्थितान् छत्रसालादिजनान्। एकमेव पुरुषेषु उत्तमं तमेकम्। मुग्धा सुन्दरी तथा रावदर्शनेन मूढत्वं प्राप्तवतीत्यर्थः।

(हिन्दी)

बाजीराव के शौर्य की गाथा उस युवती ने (मस्तानी ने) पहलेही सुन रखी थी, अब वह बाजीराव को देखने के कुतूहल से वहाँ आ पहुँची थी। अन्य लोग भी वहाँ है यह भूलकर वह मोहित होकर एकमात्र पुरुषोत्तम बाजीराव को देखने लगी।

लावण्यमस्या विदितं न बाल्ये
किं दर्शनं स्यादुषसो रजन्याम्?
वने वसन्तं हृदये वसन्तम्
काले वनश्रीः प्रकटीकरोति।।४०।।

(संस्कृतटीका)

बाल्ये शैशवे। रजन्यां रात्रौ उषसो दर्शनम् उदयः न भवति। वनश्रीः काले समये मधुमासं हृदये वसन्, तम् प्रकटयति आविष्करोति। यौवने तस्या सौन्दर्यमधिकमभूत्। उषसः दर्शनम्। हृदये वनश्रियः आभ्यन्तरे वसन्तम् वर्तमानम्। यथाकाले। दृष्टान्तः।

(हिन्दी)

मस्तानी शैशवावस्था में उतनी सुन्दर रूपवती नहीं थी जितनी यौवन के कारण थी। रात को उषा का उदय नहीं होता। वनश्री भी वन में अपने हृदय में धारण किये हुए वसन्त को समय आने पर ही प्रकट करती है।

स्वर्गेऽप्सरा नृत्यविधौ प्रवृत्ता
तन्नासिका-मौक्तिकमेव भूमौ।
मस्तानिरत्नं पतितं महार्घम्
अद्यापि नाके किमु शोध्यते तत्?।।४१।।

(संस्कृतटीका)

अप्सरा रम्भादिष्वेका। तस्या नासिकाया अलङ्करणभूतं मौक्तिकम् भूमौ स्वर्गात् पृथिव्याम्। मस्तानीरूपंरत्नं महार्घम् स्वर्गीयत्वादमूल्यम्। नाके स्वर्गे। शोध्यते मृग्यते किमु? रूपकम् उत्प्रेक्षा अतिशयोक्तिश्च।

(हिन्दी)

स्वर्ग में कोई अप्सरा (इन्द्र की सभा में) नृत्य कर रही थी तब उसकी नाक का एक मोती पृथ्वीपर आकर गिरा वही मस्तानी है। क्या, अभी भी स्वर्ग में उस मोती की खोज हो रही है?

सुवर्णवर्णालककान्तिरस्या

नेत्रे विशाले नवचञ्चरीकौ।

नासाग्रभागादधरामृतस्य

पानं च कर्तुं मदनाभिलाषा।।४२।।

(संस्कृतटीका)

मस्तानी मुख-वर्णनम् - सुवर्णस्य वर्ण इव वर्णः येषां तेऽलकाः, तेषां कान्तिः यस्याः सा मस्तानी। नवे शिशू च तौ चंचरीकौ। तस्या नासा नासिका, तस्या अग्रभागात्। समीपस्थाधरयोः ओष्ठयोः अमृतं तस्य पानम्। मदनस्य कामस्याभिलाषा - उत्कण्ठा। रूपकम् अतिशयोक्तिश्च।

(हिन्दी)

मस्तानी के केशकलाप सुनहरे थे, जिस से उसकी आभा बढ़ती थी। उस की विशाल आँखे चंचरिक जैसी थीं। उसकी बाँकदार नाक के अग्रभाग से समीपस्थ उसके अधरों का अमृतपान करने की इच्छा मदन को हुई।

शुभ्रे कपोले तिलकृष्णबिन्दु-
ष्चारुत्ववृद्धिं कुरुते स्म नित्यम्।
रावस्य दृष्टिः स्मितजे कपोले
खलौ पतित्वापि न निर्गता सा।।४३।।

(संस्कृतटीका)

तस्याः मस्तान्याः। तिलं तस्य कृष्णबिन्दुः। चारुत्वं सौन्दर्यम्, तस्य वृद्धिम्। तिलयोगात् मस्तानी-सौन्दर्यमधिकम् अवर्द्धतेत्यर्थः। रावस्य दृष्टिः नेत्रदृष्टिः। मस्तान्याः स्मितं तेन जनिते खलौ (खळीति मराठी भाषायाम्) कपोले स्थिते पतितापि न निर्गता। रावः कपोल-खलिं ददर्श इत्यर्थः।

(हिन्दी)

मस्तानी के गोरे गालपर जो काला तिलबिन्दु था, उसने उसके सौन्दर्य में चार चाँद लगा दिये थे। उसकी मुस्कुराहट से उसके गालपर उपजी खली में बाजीराव की दृष्टि जा गिरी, और उस में से वह बाहर निकल नहीं पाई। (वे उसे देखते रहें)।

मुखारविन्दे किमु भृङ्गयुग्मम्?
तादक्षियुग्मं नितरां प्रसन्नम्।
काश्मीरजं पाटल-पुष्पमास्यम्
किञ्चितूस्मितं केसरतुल्यमस्याः।।४४।।

(संस्कृतटीका)

तस्याः मस्तान्याः अक्ष्णोः युग्मं द्वयम्। आस्यं मुखम्। मुखं - वदनं, अरविन्दमिव कमलामिव, तस्मिन्। अस्याः मस्तान्याः। पाटल-पुष्पं गुलाब-कुसुमम्। तस्याः स्मितं केसरेण मकरन्देन तुल्यं समम्। उत्प्रेक्षोपमा च।

(हिन्दी)

कमल के समान मस्तानी के (सुन्दर) मुख पर मानों दो भौरों के समान दो नेत्र बहुत सुन्दर थे और कश्मीर के सुन्दर गुलाब-पुष्प जैसे उस के मुख पर मकरन्द के समान किंचित् मुस्कान दिखाई देती थी।

विमुक्तकन्या न विमुक्तकन्या
मुखे स्मिताभापि न विस्मिताभा।
अनेकभूपैरभिवाञ्छिता सा
रावस्य चित्ते सहसा प्रविष्टा।।४५।।

(संस्कृतटीका)

सा मस्तानी विमुक्ता चासौ कन्या च पितुर्गृहे स्वतंत्रा अपि न विमुक्तकन्या स्वाचरणेन न स्वैरिणीत्यर्थः। तस्याः मुखे स्मितं किञ्चिद् हास्यं। तथापि न विस्मिता विशेषेण स्मितेन विहीना आभा मुखे। विस्मिता चकिता आभा इति परिहारः। रावस्य बाजीरावस्य चित्ते सहसा तदैव प्रविष्टा सा। विरोधः।

(हिन्दी)

वह मस्तानी उन्मुक्त कन्या तो थी किन्तु स्वैर विहार करनेवाली उच्छृंखल कन्या नहीं थी। उस के मुख पर किंचित् हँसी की कान्ति थी किन्तु स्मितरहित आभा नहीं थी। अर्थात् आश्चर्यजनक कान्ति थी। अनेक नरेशों द्वारा जिसकी अभिलाषा की गई थी वह बाजीराव के मन में यकायक प्रवेश कर गई।

मुग्धां तदा मुग्धविलोलनेत्रां
स्वर्गाङ्गना-गर्व-विगर्हयन्तीम् ।
त्रैलोक्य-सौंदर्यमयीं च पश्यन्
तया समाकृष्यत बाजिरावः ।।४६ ।।

(संस्कृतटीका)

मुग्धां सुन्दरीम्। मुग्धे विलोले चञ्चले च नेत्रे यस्याः सा। चञ्चललोचनयोर्मुग्धत्वम्। 'मुग्धः सुन्दर-मूढयोः'। तां सुन्दरीं। तया मस्तान्या समाकृष्यत आकर्षितो बभूव्।

(हिन्दी)

उस मुग्ध व चंचल नेत्रोंवाली, स्वर्गांगनाओं के रूप-गर्व को खण्डित करनेवाली तथा तीनों लोकों में सबसे सुंदर युवती को देखकर श्री बाजीराव उसकी ओर आकृष्ट हुए।

कुतूहलात् तत्र समागतां तां
सौंदर्यरूपेण रतिं द्वितीयाम्।
अपूर्वरूपां च विलोकयन्तम्
श्री बाजिरावं निजगाद राजा।।४७।।

(संस्कृतटीका)

कुतूहलात् - तस्याः युवत्यः दर्शनाभिलाषा। अपरां रति-कामपत्नीमिव सौंदर्यवतीं ताम्। तां पश्यन्तम् बाजिरावं श्री छत्रसालः प्राह।

(हिन्दी)

श्री बाजीराव को देखने की जिज्ञासा से वहाँ आई हुई तथा दूसरी रति समान सुंदर दिखनेवाली उस युवती को देख रहे श्री बाजीराव को श्री छत्रसाल ने कहा -

अत्र स्थिता या मम सास्ति पुत्री,
मातास्ति तस्या यवनी स्वपत्नी।
'मस्तानि' नाम्नी दुहिता प्रिया मे
द्रष्टुं भवन्तं च समागतास्ति'।।४८।।

(संस्कृतटीका)

दुहिता - श्रीछत्रसालस्य पुत्री। यवनी स्वपत्नी - श्रीछत्रसालस्य पत्नी या यवनी स्थिता। भवन्तं - श्रीबाजिरावम्।

(हिन्दी)

'यह सुकन्या यहाँ आई है वह मेरी पुत्री है। मेरी एक यवन पत्नी है, उसकी यह कन्या है। मस्तानी नाम की यह मेरी प्रिय पुत्री आपको देखने के लिए यहाँ आ गई है।

'प्रणामि'-धर्मे न च भेद-भावो
'मस्तानि' नाम्नी यवनी-सुता मे।
श्रीकृष्णपूजां कुरुते स्वभक्त्या
संस्कार एवास्ति हि धर्ममूलम्।।४६।।

(संस्कृतटीका)

प्रणामि-नाम्नि धर्मे भेदभावः न। विभिन्नधर्मेष्वपि परस्पर-विश्वासः भवति। मस्तानी यद्यपि यवन-राज्ञी-कन्या तथापि। स्वभक्त्या न ममादेशात्। संस्कारः एव धर्मस्य मूलम् बीजम्। संस्कारादेव धर्मः प्रभवतीत्यर्थः। अर्थान्तरन्यासः।

(हिन्दी)

प्रणामी सम्प्रदाय में दीक्षित होने से मैं कहता हूँ, प्रणामि धर्म में भेदभाव नहीं होता है। मस्तानी मेरी यवन-राज्ञी से हुई कन्या होने पर भी भगवान् श्रीकृष्ण की आराधना भक्तिभाव से करती है। संस्कार ही धर्म का मूल तत्त्व है।

परस्य धर्मं न तु ये सहन्ते
जानन्ति ते धर्मगतं न तत्त्वम्।
स ईश्वरः किं बहुधा विभक्तो?
व्याप्नोति चैकः प्रभुरेव विश्वम्।।५०।।

(संस्कृतटीका)

परस्य – अन्यस्य। तत्त्वं – मूल-भूतं ज्ञानम्। विभक्तः अनेक – भागेषु विखण्डितः किम्? प्रभुः – स्वामी। विश्वं सर्वं जगत्।

(हिन्दी)

जो लोग दूसरों के धर्म को सहन नहीं करते वे धर्म का मूल तत्त्व क्या है, यह नहीं जानते। क्या ईश्वर अनेक टुकड़ों में बँटा है? वास्तव में वह एक ही सारे विश्व में व्याप्त है।

टिप्पणी – 'ईशावास्यमिदं सर्वं यत् किं च जगत्यां जगत्।' (ईश० उप०१)

न केवलं रूपमतीयमस्ति
ध्रुवं च संस्कारवती तथैव।
धन्या हि कन्या भवतेऽस्तु मान्या
मित्रत्वमग्रेऽपि दृढं भवेन्नः ।।५१।।

(संस्कृतटीका)

धन्या - सौभाग्यशीला। भवते - श्रीबाजिरावाय मान्या - पत्नीरूपेण स्वीकार्यास्तु। मित्रत्वम् पेशवा-छत्रसालयोर्मध्ये राजकीयः स्नेहभावोऽपि। दृढत्वं स्थिरत्वं भवेत्। मध्यकाले नृपद्वयस्य मित्रत्वं तयोर्विवाह-सम्बन्धेन दृढं भवति स्मेति राजनीतिः।

(हिन्दी)

यह मस्तानी केवल सौन्दर्यवती ही नहीं है, उसके संस्कार भी अच्छे हैं। यदि यह कन्या आपको स्वीकार्य है तो यह धन्य हो जाएगी और हम दोनों में मित्रता भविष्य में भी सुदृढ रूप में रहेगी।

पूर्वं भवत्-कीर्ति-सुधां निपीय
दृष्ट्वा रणेऽस्मिन् भवतश्च शौर्यम्।
जानामि तां प्रेमरसातिसिक्ताम्
रत्नोपहारो भवतेऽर्पणीयः।।५२।।

(संस्कृतटीका)

निपीय - पीत्वा। प्रेमरसातिसिक्ताम् भवन्तं प्रति समनुरागवती मस्तानीयम्। इयं कन्या उपहारस्वरूपं रत्नं भवद्भ्यः देयमिति मे मतिः।

(हिन्दी)

पूर्व में आप के यशरूपी अमृत का पान कर तथा अब रण में आप का पराक्रम देखकर मस्तानी आप से प्रेम करने लगी है, यह मैं जानता हूँ अतः चाहता हूँ कि यह कन्यारत्न आप को उपहार स्वरूप भेंट करूं।

वीरा भवन्तो, न धनाभिलाषा
कन्यापि शूरार्पितमानसीयम्।
धन्या हि कन्या वरवीरसङ्गे
शौर्येण सौन्दर्यधनं विभाति।।५३।।

(संस्कृतटीका)

शूरार्पितमानसी - श्रीबाजिरावायार्पितं प्रदां मानसं चेतो यया सा कन्या (मस्तानी)। वरवीरः वीरेषु श्रेष्ठः तेन। शौर्येण पराक्रमगुणेन सह सौन्दर्यं विभाति शोभते। अर्थान्तरन्यासः। अनुप्रासश्च।

(हिन्दी)

आप शूर हैं, आप धन की भी अभिलाषा नहीं रखते हैं। यह कन्या भी (आप जैसे) पराक्रमी पुरुष को अपना मन अर्पित कर चुकी है। यह कन्या धन्य है जिस ने शूर व्य की इच्छा की है। सौंदर्य-धन पराक्रम के साथ ही शोभा देता है।

न केवलं प्रत्युपकार एव

ममास्ति हेतुर्दुहितुः प्रदाने।

मान्यं प्रणामेर्मम धर्मतत्त्वम्

तत् प्रेम यद् भातु हि भारतेऽपि।।५४।।

(संस्कृतटीका)

उपकारस्य प्रत्युपकारकत्वम्। दुहितुः राजकन्यायाः मस्तान्याः। प्रणामेः प्रणामिधर्मावलम्बिनः मम श्रीछत्रसालस्य धर्मस्य तत्वम्। सिद्धान्तः। तत् प्रेम भारते भातु प्रवर्तताम्। प्रणामिधर्मानुसारं जगत् ईश्वरश्च, तयोर्मध्ये प्रेमतत्त्वमेव धर्मः।

(हिन्दी)

आयुष्मन्, आपने मुझपर जो उपकार किया है, उसके केवल प्रत्युपकार के लिए यह मेरी कन्या आप को नहीं दे रहा हूँ। अपितु मेरे प्रणामिधर्म का एक तत्त्व है प्रेम, वह सारे भारत में फैलाना चाहता हूँ। (प्रणामि धर्म के अनुसार ईश्वर और जगत् के मध्य प्रेम ही धर्म का तत्त्व है।)

न वै भवे वैभवमेव भाव्यम्

भवस्य भक्तः शिवराज–राज्ञः।

तस्यैव कार्यं क्रियते भवद्भिः

तथापि किञ्चिच्च मयापि देयम्।।५५।।

(संस्कृतटीका)

भवे – विश्वे वै– पादपूरणार्थम् अपि च वैभवार्थसूचनार्थम्। वैभवं – सम्पत्तिः। न भाव्यम् – परमार्थरूपेण नाभिलषणीयम्। भवस्य भगवतः श्रीशङ्करस्य। शिवराजः छत्रपतिः शिवराजः। भवद्भिः – श्रीबाजीरावैः। तथापि – शिवराजं – परम्परायां भवन्तः सन्ति, न वैभवे अभिलाषा, तथापि। किञ्चिदिति। विनम्रभावेन देयम्।

(हिन्दी)

इस संसार में ऐश्वर्य के लिए ही अभिलाषा नहीं करनी चाहिए। (इसी मत के अनुसार) छत्रपति शिवाजी महाराज की भक्ति वैभव में नहीं, अपितु भव अर्थात् भगवान् श्री शंकर (और भवानी) के प्रति थी। आप उन्हीं का राष्ट्रकार्य कर रहे हैं। तथापि कुछ तो आप को देना ही है।

इयं सुकन्या ननु वल्लरीव
समीहते त्वां तरुणं तरुं सा।
समर्पये रत्नमिदं भवद्भ्यः
स्वयं हृदा स्वीकुरुतोपहारम्'।।५६।।

(संस्कृतटीका)

वल्लरीव लतेव। तरुणं नवोत्पन्नं, तरुं वृक्षमिव भवन्तम्। समीहते - अभिलषति। भवदाश्रयं पत्नीरूपेण वरयितुमिच्छतीत्यर्थः। स्वीकुरुतोपहारम् - उपहाररूपेण। वल्लरीवेति उपमालङ्कारः। त्वां तरूणमिति रूपकम्।

(हिन्दी)

एक लता के समान यह सुन्दर कन्या नये वृक्ष के समान आप के आश्रय की कामना करती है। इसे मैं आप को समर्पित करता हूँ, आप इस भेंट को हृदय से स्वीकार कीजिए।'

रावोऽप्युवाच प्रणतो नृपं तम् -

"कन्योपहारो भवतां प्रियोऽपि।

भवद्भिरेषा यदि दीयते चेद्

भविष्यतीयम् चिरसङ्गिनी मे।।५७।।

(संस्कृतटीका)

नृपं छत्रसालम्। कन्यायाः मस्तानीरूपायाः। मे रावस्य। उपहार-सम्मान-धनम्। चिरसङ्गिनी नित्यं मया सह सहवासं करिष्यति इति यावत्।

(हिन्दी)

श्री बाजीराव ने भी विनम्र होकर राजा से कहा -

"आप की लाडली कन्या होकर भी इसे आप भेंट स्वरूप प्रस्तुत कर रहे हैं (यह खुशी की बात है)। यदि आप इसे मुझे सौंप देंगे तो यह मस्तानी हमेशा मेरी जीवनसाथी रहेगी। (यह मेरा वादा रहा।)

ज्येष्ठा भवन्तोऽपि वदान्य-धन्याः
न केवलं सुन्दररूपमस्याः।
संस्कारयुक्ता मयि सानुरक्ता
दत्तोपहारोऽपि न वर्जनीयः" ।।५८।।

(संस्कृतटीका)

ज्येष्ठा आदरणीया। वदान्याश्च धन्याश्च उदारसत्वाः श्रेयोयुक्ताः। भक्त्यादि-संस्कारैर्युक्ता। अनुरागेण प्रेमयुक्ता। अपि च। दत्तश्चासौ उपहारश्च न वर्जनीयः न तिरस्करणीय इति शिष्टाचार इत्यर्थः। काव्यलिङ्गम्।

(हिन्दी)

आप मेरे लिए बड़े हैं, उदार एवं धन्य हैं। मस्तानी केवल सुन्दर कन्या ही नहीं है, अपितु इस में अच्छे संस्कार हैं और मेरे प्रति इसके मन में प्रेम जो है। और तो और, किसी भेंट का अनादर कैसे कर सकता हूँ?"

दृष्ट्वा तु रावं त्वनिमेषनेत्रं

तां वीक्षते सर्वजनान् विहाय।

स्ववस्त्रभागान्तविचालयन्ती

सा लज्जया नम्रमुखी बभूव।।५६।।

(संस्कृतटीका)

अनिमेषं सततं निमेषं विना यथा स्यात्तथा वीक्षते पश्यति सर्वजनाः तत्र स्थिताः तान्। स्वस्य मस्तान्याः शाटिकायाः साडीति परिधानस्य प्रदरं कोणं हस्तेन विचालयन्ती खेलन्ती। नम्रं मुखं यस्याः सा। प्रथमानुराग-लक्षणम् इति यावत्। स्वभावोक्तिः।

(हिन्दी)

जब मस्तानी ने देखा कि बाजीराव अन्यों को छोड़कर उसे एकटक होकर देख रहे हैं तब वह अपनी साड़ी के पल्ले को हाथ में लेकर (अनजाने में) खेलने लगीं और उसने लज्जा से अपना मुख नीचे कर लिया।

रावस्य रूपं हृदि सन्निविष्टम्

तदोदितं किं प्रथमं स्मितं तत्?।

स्मितं मितं चाप्यमितप्रभावं

अपूर्वरागाभिमतं च दृष्टम्।।६०।।

(संस्कृतटीका)

रावस्य बाजीरावस्य रूपं प्रभावशीलं स्वरूपं हृदि मस्तानी-हृदये सन्निविष्टं प्रविष्टम्। तदा रावदर्शनसमये प्रथमं अपूर्वम्। स्मितं किञ्चिदेव। च अपि तथापि च अमितः प्रभावः प्रभूतः परिणामः यस्य। न पूर्वरागः - अपूर्वरागः प्रथमं प्रेम तेनाभिमतं सम्मतम्। मितमपि तदमितप्रभावमिति विरोधाभासोऽनुप्रासश्च।

(हिन्दी)

मस्तानी के हृदय में बाजीराव का रूप पैठ गया। क्या उसी समय उस के मुख पर पहला स्मित उदित हुआ? उस का स्मित किंचित् था, याने सीमित था, किन्तु उस स्मित का प्रभाव असीम था। प्रथम प्यार की सम्मति देता हुआ वह स्मित दिखाई दिया।

अतृप्तनेत्रोऽपि स तृप्तदृष्टिः
जित्वापि कामं स जितश्च तेन।
कामस्य पुष्पैर्जितशस्त्रवीरः
स निर्निमेषं सुमुखीं ददर्श।।६१।।

(संस्कृतटीका)

अतृप्ते नेत्रे नयने यस्य सः तस्या दर्शनेन तृप्तः। अपूर्वसौन्दर्यस्य दर्शनेन तृप्तिः। तथापि तृप्ता सन्तुष्टा दृष्टिः दर्शनं यस्य सः। नीतिनियमेन तृप्ता दृष्टिरित्यर्थः। कामं सौन्दर्येण जित्वापि तेन कामेन मदनेन रतिभावेन जितः इति विरोधः। शस्त्राणां वीरोऽपि धनुर्धरोऽपि कामस्य कुसुमशरस्य पुष्पैः कुसुमैः जितः पराजितः। शस्त्रं पुष्पैर्जितमिति विरोधः। स बाजीरावः निर्निमेषं निमेषरहितं सुमुखीं मस्तानीं। विरोधाभासः।

(हिन्दी)

बाजीराव के नेत्र उसे देखकर तृप्त नहीं हुए थे, किन्तु उनकी दृष्टि सन्तुष्ट थी। अपने सौन्दर्य से मदन को उन्होंने जीत लिया था, फिर भी वे अब मदन से जीत लिये गये। वे शस्त्रों के धुरंधर वीर थे, किन्तु कामदेव के पुष्पबाणों से आहत हो गए। वे बाजीराव उस सुन्दरी को एकटक होकर देखते रहें।

स्वभावरम्ये नयने विनीते
मदं विनापि प्रमदोचितेऽस्याः।
रम्यौ कपालौ घनकुन्तलाग्रैः
रावो विलुप्तोऽत्र नवोपकण्ठे।।६२।।

(संस्कृतटीका)

स्वभावतः प्रकृत्या रम्ये रमणीये नयने नेत्रे विनीते। तथापि मदं गर्वं विना प्रमदोचिते नेत्रे प्रमदा यौवनमदेन युक्ता नार्यः, तासामुचिते नेत्रे। तस्याः कपोलौ घनाः कुन्तलाः, तेषां अग्रैः प्रान्तभागैः रम्यौ। अत्र छत्रसाल-महालये नवीने उपकण्ठे उद्याने विलुप्तः।

(हिन्दी)

स्वभावतः मस्तानी के नेत्र विनीत थे और मद के विना ही उन में प्रमदाओं का मद भी था। उसके दोनों गालों पर छाएँ बालों की लटाएं रम्य दिखाई देतीं थीं। इस नये उपवन में बाजीराव खो गए।

श्रुत्वापि सम्वादमिमं मनोज्ञम्,

सा गोपयन्ती निजगूढभावम्।

प्रियाकपोलारुणता तु दृष्टा

सा लज्जयान्तःपुरमेव याता।।६३।।

(संस्कृतटीका)

सा मस्तानी मनोनुकूलं हृदयंगमं वा तयोः श्रीछत्रसाल-बाजिरावयोः सम्वादं सम्भाषणम्। निजगूढभावम् - अनुरागरूपम्। तथापि प्रियायाः मस्तान्याः कपोलयोररूणत्वं, दृष्टम् - श्रीबाजीरावेणेति शेषः। अन्तःपुरम् - स्वनिवास-गृहं गता।

(हिन्दी)

उन दोनों के उसे प्रिय लगनेवाले संभाषण को सुनकर मस्तानी अपने गूढ प्रेमभाव को छिपाने की कोशिश कर रही थी लेकिन उसके प्रेम के कारण आरक्त गाल उस भाव को प्रकट कर रहे थे। अतः लज्जा के कारण वह अन्तःपुर में चली गई।

पृष्टं सखीभिः 'स्मितकारणम् किं?'
तया श्रुतं चाप्यश्रुतं वचस्तत्।
दृष्टा मुखेऽस्या नवपाटलाभा
स विभ्रमः किं भ्रमकारकः स्यात्?।।६४।।

(संस्कृतटीका)

सखीनां प्रश्नः स्मितस्य किं कारणमिति। तदा मस्तान्या श्रुतं तथापि अश्रुतम् न श्रुतं। तथापि अस्याः मस्तान्याः। मुखे पाटलस्य गुलाबपुष्पस्याभा कान्तिः। सः विभ्रमो नूतनो भावः। भ्रमं करोति सखीनां कृते भ्रमकारकः किम्? विरोधः अनुप्रासश्च।

(हिन्दी)

जब हँसकर सहेलियों ने मस्तानी से स्मित का कारण पूछा तो सुनकर भी अनसुना उसने किया। फिर भी उसके मुख पर नवोदित गुलाबपुष्प की कान्ति दिखाई दी। वह विभ्रम सहेलियों के लिए भ्रम पैदा कर रहा था क्या?

नीलाक्षियुग्मेऽपि तदीय-रागः
सौम्यारुणत्वेन नवत्वमाप।
स्मितं न निन्होतुमियं शशाक
स्मितानुमेयः प्रथमानुरागः।।६५।।

(संस्कृतटीका)

नीलेऽक्षिणी नेत्रे तयोर्युग्मं द्वयम्। तथापि नीलत्वेऽपि रागः प्रेम। प्रेम्णः रागः सौम्यं, अरुणत्वमधुना नवीनम्। नीलनेत्रयोर्मध्ये रागवशादरुणरागः समुदित इत्यर्थः। स्मितमपि नवीनम निन्होतुं गोपयितुं। स्मितेन अनुमेयः। अनुमितुं योग्यः। प्रथमश्चासौ अनुरागश्च प्रथमदर्शने जातं प्रेम। अर्थान्तरन्यासः।

(हिन्दी)

मस्तानी की नीली आँखों में (नवोदित प्रेमभाव के कारण) नई रक्तिमा प्रकट हुई। उस का स्मित प्रेमभाव को छुपा नहीं सका। प्रथम प्रेम का तो स्मित से अनुमान हो जाता है।

लास्यं च तस्या मुखपाटलाभं
प्रियानुरागारुणतामवाप।
यश्चित्रकारोऽप्युषसेऽरुणत्वम्
स एव चास्यै प्रददौ हि रागम्।।६६।।

(संस्कृतटीका)

मस्तान्याः लास्यं। मुखस्य - पाटलपुष्पं, तस्य आभा कान्तिः तया युक्तम्। प्रियस्य श्रीबाजीरावस्य, अनुरागस्य प्रेम्णः, अरुणत्वं आरक्तवर्णत्वम्। यः चित्रकारो विश्वचित्रस्य निर्माता विधाता। अस्यै मस्तान्यै। रागं अरुणत्वमनुरागञ्च। मस्तानीमुखपाटलस्य रागो बाजीराव-रागाय इति भावः। प्रेमरागात् तस्या मुखस्य अरुणत्वम् अधिकम् बभूव। अतिशयोक्तिः। मीलितालङ्कारो व्यज्यते।

(हिन्दी)

इस मस्तानी के मुखमण्डल पर जो गुलाबी छटा थी उसने प्रिय बाजीराव के प्रेम की गुलाबी आभा प्राप्त कर ली। जिस महान् चित्रकार विधाता ने उषा को अरुणराग प्रदान किया है उसी ने इस मस्तानी को भी गुलाबी कान्ति प्रदान की। (मूलतः उसके अंग का रंग गुलाबी था जो प्रेम के कारण और बढ़ गया)।

पुरा स्मितं किं न शकुन्तलाया
दुष्यन्तचित्ते सहजं प्रविष्टम्?।
दुर्वासशापान्तनवोदितं किम्?
स्मितं तदाद्यं तु विलुप्तमन्ते।।६७।।

(संस्कृतटीका)

पुरा प्राचीनकाले, महाकवेः कालिदासस्य 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' इति नाटकस्य नायिकायाः तत् स्मितम्। सहजं प्रथमदर्शने। दुर्वासमुनिनः शापान्ते पुनः उदितं स्मितं किम्? किन्तु कण्वाश्रमे प्रथमदर्शनेऽवलोकितं तत् प्रथमं स्मितं अन्ते मारीचि-आश्रमे विलुप्तं। न दृष्टम्।

(हिन्दी)

प्राचीन समय में (महाकवि कालिदास के नाटक शाकुन्तलम् के अनुसार) शकुन्तला का वह प्रथम दर्शनी स्मित यकायक दुष्यन्त के हृदय में प्रविष्ट हो गया था। दुर्वासा ऋषि के शाप के अन्त में वह स्मित पुनः दिखाई नहीं दिया। वह जो प्रथम दर्शन में उदित हुआ था वह स्मित बाद में नहीं दिखाई दिया।

स्वभावजं वीक्षितहास्यमस्याः
शशाक गोप्तुं तु रतिं हृदिस्थाम्।
तदोष्ठभागोदितसुस्मितात् तु
ज्ञातः सखीभिः प्रथमानुरागः।।६८।।

(संस्कृतटीका)

मस्तान्याः स्वाभाविकं हास्यं जनैः पूर्वं प्रत्यहं दृष्टम्। तेन हृदयस्थरते रहस्यं कथं ज्ञातं भवेदिति भावः। ओष्ठद्वये उदितं नूतनं विकसितं स्मितं त्वपूर्वमिति। तदीयः प्रथमोऽनुरागः तस्याः प्रथमं प्रेम। हास्यं तु प्रत्यहं दृष्टम्, किन्तु नवोदितं स्मितं तस्याः प्रथमं अनुरागं व्यञ्जयतीत्यर्थः। काव्यलिङ्गम्।

(हिन्दी)

मस्तानी का स्वाभाविक हास्य तो पूर्व में (लोग) हमेशा देखते थे। किन्तु उसके होठों में जो स्मितहास्य अब दिखाई दे रहा था उससे सखियों ने उसके हृदय में स्थित प्रथम प्रेम को जान लिया। (खग ही जाने खग की भाषा)।

मनोगतं प्रस्फुटितं कदाचित्
नियम्यमानं न नियम्यते यत्।
स्मितं सखी–विस्मितकारकं तत्
किञ्चित् स्मितं किं प्रमदा-प्रमादः? ।।६६।।

(संस्कृतटीका)

मनोगतं - मनसि स्थितमपि प्रस्फुटितं प्रकटीभूतं, यच्च नियम्यमानं - नियन्त्रण- प्रयासेऽपि न नियम्यते गुप्तं स्थितं भवति। तत् स्मितं सखीजनस्य विस्मयं जनयति। प्रमदाजनानां - तरुणीनां स्मितं प्रमादः अपराधो भवति। स्मितेन तासां रहस्यं प्रकटीभवति इत्यर्थः। काव्यलिङ्गम् अर्थान्तरन्यासश्च। स्मितं विस्मितं इत्यत्र विरोधः।

(हिन्दी)

जो स्मित छुपाने का प्रयास करने पर भी प्रेमभाव को प्रकट करता है, मस्तानी के उस स्मित ने सहेलियों को विस्मित किया। क्या, युवतियों का किंचित् स्मित भी उनका प्रमाद होता है?

अकारणाविष्कृत-संयतं तत्
किञ्चित् स्मितं विप्लवमातनोति।
तां प्रेरणाशक्तिमयीमवाप्य
हिमालयादौषधिवत् स मेने।।७०।।

(संस्कृतटीका)

आविष्कृतं - प्रकटीकृतम्। संयतं शालीनतया नियन्त्रितं स्मितम्। किञ्चित् - सूक्ष्मं स्मितम्। विप्लवं-झंझावातरूपं भवति। अवाप्य - प्राप्य। यथा हिमालयात् औषधिः प्रेरणाप्रदा प्राप्यते तथा सः बाजीरावः तां मस्तानीं प्रेरणादायिनीं शक्तिं मेने। प्रथमार्धे विषमालङ्कारः, किञ्चित् स्मितं विप्लवं भयंकररूपं प्रकटयति धारयति। उत्तरार्धे दिव्यौषधिवत् मस्तानी रणेऽपि प्रेरणां दास्यतीति उपमा।

(हिन्दी)

अकारण अकस्मात् प्रकट हुए तथा पश्चात् नियंत्रित किये हुए मस्तानी के किञ्चित् स्मित ने तूफान का रूप धारण कर लिया। उस मस्तानी को बाजीराव ने हिमालय से प्राप्त दिव्य औषधि के समान प्रेरणादायक शक्ति माना।

मस्तानि-कन्या जनकेन दत्ता
तया च साकं वरदक्षिणार्थम्।
राज्ये च तत्सैन्यसमक्षमेव
ग्रामोपहारेण समर्चितः सः।।७१।।

(संस्कृतटीका)

जनकेन श्रीछत्रसालेन प्रदत्ता, कन्या-दानं कृतम्। तस्य सैन्यस्य समक्षम् पुरतः। विवाहे प्रथामनुसृत्य वरदक्षिणार्थम् वरपूजनप्रसंगे दीयमान-धनार्थम्। सः रावः ग्रामाणामुपहारेण सम्यक् रूपेणार्चितः परिपूजितः।

(हिन्दी)

मस्तानी और राव के विवाह के प्रसंग पर राव के सैन्य के समक्ष कन्या के पिता श्री छत्रसाल ने कन्यादान किया और मस्तानी के साथ बाजीराव को (प्रथा के अनुसार) वर-दक्षिणा के रूप में बुन्देलखण्ड राज्य के कुछ गाँव भी उपहार में देकर राव का वरपूजन सम्पन्न किया। (इतिहास के अनुसार राजा छत्रसालने राव को विवाह में तीन भू-भाग दिये थे। आगे चलकर मस्तानी के वंशजों को बाँदा का राज्य मिला)।

रावाय तस्मै वरदक्षिणाथम्

श्रीनर्मदासन्निधिभूमिभागान्।

ग्रामोपहारान् निजराज्यमध्ये

श्रीछत्रसालः प्रददौ विवाहे।।७२।।

(संस्कृतटीका)

प्रथामनुसृत्य वरः बाजीरावः तस्य सत्क्रियार्थं विवाहे देयं धनम्। श्रीनर्मदाया रेवायाः सन्निधौ निकटे भूमिभागाः, तान् उपहाररूपान् ग्रामान्। निजं राज्यं छत्रपुरसमीपस्थम्। बुन्देलखण्ड इति यावत्। विवाहे बाजीराव-मस्तानी-विवाहे। एतेनोपहारेण विवाहः सम्मानपूर्वकं सम्पन्न इति व्यज्यते।

(हिन्दी)

उस समय की प्रथा के अनुसार राजा छत्रसाल ने मस्तानी और राव के विवाह में वरदक्षिणा के रूप में अपने राज्य के कुछ गाँव जो नर्मदा के किनारे स्थित थे, उपहार स्वरूप राव को दिये। (इस से विदित होता है कि, मस्तानी का विवाह सम्मानपूर्वक सम्पन्न हुआ था।)

खड्गं निधाय प्रथिते विवाहे
सेनासमक्षं परिणीय कन्याम्।
वधूश्च सा क्षत्रियराजकन्या
वरस्तु धन्यो निजखड्गधारी।।७३।।

(संस्कृतटीका)

खड्गं असिशस्त्रं पुरतः संस्थाप्य विवाहः सम्पद्यत इति क्षत्रियेषु प्रथा। कन्या मस्तानी वधूः। वरः धन्यो रावः सैन्यस्य समक्षम्। निजं शस्त्रं धार्यते विवाहे।

(हिन्दी)

तत्कालीन प्रथा के अनुसार दोनों की सेनाओं के समक्ष क्षत्रिय कुल की राजकन्या मस्तानी, वधू के रूप में बाजीराव के साथ विवाहित हो गई। राव भी समय के दायित्व के अनुरूप विवाह में शस्त्र धारण कर धन्य हुए।

टिप्पणी - बुन्देलखण्ड में मस्तानी का राव के साथ विवाह तो हुआ था। धारणा यह है कि क्षत्रियों में प्रचलित रिवाज के अनुसार खड्ग के साथ उन का विवाह सैन्यों के समक्ष हुआ था। किन्तु ऐतिहासिक प्रमाण का अभाव है।

विशाल-भालोऽरुणकान्तिरूपः
स्वतेजसा शत्रुविनाशकः सः।
मुमोच दर्पं मदनस्तु रावम्
वीक्ष्याधिकं तां च रतिं द्वितीयाम्।।७४।।

(संस्कृतटीका)

सः बाजीरावो विशालभालः ललाटः। भव्याकृतिः। एनं - बाजीरावम्। मदनः कामदेवः। दर्पम् स्वसौन्दर्यविषये गर्वम्। त्यक्तवान्। तस्य बाजीरावस्य। कामदेवः मस्तानीं अपरां रतिमिव वीक्ष्य दर्पं त्यक्तवानित्यर्थः। अतिशयोक्तिः।

(हिन्दी)

उस बाजीराव का भाल विशाल था, उसकी कान्ति भी अरुणिमा से युक्त थी। वह अपने तेज से शत्रुओं को नष्ट करता था। ऐसे बाजीराव को तथा दूसरी रति देवी के समान मस्तानी को देखकर (स्वर्ग में) कामदेव का गर्व हरण हो गया।

बुन्देललोका मिलनं तयोश्च
सौन्दर्य-वीरत्व-समागमं तम्।
विलोक्य जाता मुदिताननाश्च
न पुण्यपुर्यां स्वजनास्तु तुष्टाः।।७५।।

(संस्कृतटीका)

बुन्देललोका तद्राज्यस्य प्रजा। तयोः बाजीराव-मस्तानीद्वयस्य मिलनं। मुदितानि हर्षितानि आननानि मुखानि येषाम्। किन्तु पुण्यपत्तने स्थिता आप्तजनाः न तुष्टा - अप्रसन्ना जाताः। विशेषोक्तिः।

(हिन्दी)

श्री बाजीराव और मस्तानी के मिलन से बुन्देलखण्ड राज्य की प्रजा प्रसन्न हुई। उन दोनों के संयोग को उन्होंने सौंदर्य व शौर्य का समागम माना। किन्तु पुणे नगरी में बाजीराव का परिवार नाराज हो गया।

अश्वाधिरूढः शिबिकाग्रभागे
स्वीकृत्य राज्ञार्पित-वैभवं च।
जनैश्च दृष्टो रणदारुणोऽपि
रागेण रम्यः सुखदः स रावः।।७६।।

(संस्कृतटीका)

अश्वासने - अश्वस्य पृष्ठे। राज्ञा - श्रीछत्रसालेन। (स्वपुरीं प्रयाते रावे सति) वैभवं - सम्पदामपि। दारुणः - भयङ्करोऽपि रागेण तदानीं प्रेम्णा रम्यः सौम्यः। दारुणोऽपि रम्य इति विरोधः।

(हिन्दी)

वधू मस्तानी की शिबिका के आगे घोडेपर सवार होकर तथा राजा छत्रसाल द्वारा प्रदत्त सम्पत्ति ग्रहण कर (पुणे जाने के लिए) निकले हुए बाजीराव युद्ध में भयंकर किन्तु (वहाँ) प्रेम के कारण सौम्य दिखाई देने से लोगों को सुखदायक लगे।

दृष्टा वधूः सूक्ष्ममुखांशुकात् सा
पटाच्च सूक्ष्मात् शिबिकान्तरस्था।
मधुप्रकोष्ठात् मधु निःसृतं तत्
रूपं वरं तन्मधुरं हि दूरात्।।७७।।

(संस्कृतटीका)

विवाहानन्तरं पतिगृहे वधूर्गच्छति, तदा - जनैः दृष्टा। वध्वः सूक्ष्मावरणांशुकात् तथा शिबिकायाः आवरणपटा अपि सूक्ष्मवस्त्रनिर्मिताः। एवं वध्वः किञ्चिद्दर्शनं, मधु प्रकोष्ठात् मधुसञ्चयात् निःसृतं निर्गतम् मधु। रूपं सौन्दर्यम् दूरादेव जनानां दूरत्वात् सुखदम्। अर्थान्तरन्यासः। रूपकञ्च।

(हिन्दी)

लोगों को वधू कैसे दिखाई दी? वधू के मुखपर महीन बुरखा था और शिबिका पर जो परदे थे वे भी पारदर्शी थे। क्या, मधु के छत्ते से शहद टपक पड़ा था? एक बात अवश्य है, कोई सुन्दर रूप की झलक कुछ दूरसे दिखाई दे तो वह रमणीय होती है।

अग्रेऽश्वपृष्ठे करभल्लयुक्तः
पश्चात् नवोढा-शिबिकान्वितः सः।
पश्चात् ससैन्यश्च जनैः स दृष्टः
नक्षत्र-तारानुगतः शशीव।।७८।।

(संस्कृतटीका)

श्रीछत्रसालस्य राजधानीं विहाय मस्तान्या सह पुण्यपत्तनं गच्छन् स रावः। अग्रे अश्वस्य वाजिनः पृष्ठे। करे शस्त्रं भल्लाख्यम् यस्य सः। नवोढायाः मस्तान्याः शिबिका भृत्यैः स्कंधैः वाहिता शिबिका तयान्वितः अनुसृतः। नक्षत्रताराभिः अनुसृतः अनुगतः शशी चन्द्र इव दृष्टः। उपमा।

(हिन्दी)

श्री छत्रसाल से बिदाई लेकर मस्तानी के साथ पुणे को जाते समय आगे राव घोड़ेपर सवार होकर चल रहे थे, हाथ में भाला, उन के पीछेपीछे नववधू की पालखी आ रही थी और बाद में सैन्य। ऐसे राव को लोगों ने उस प्रकार देखा जिस प्रकार नक्षत्र और तारकाएँ चन्द्रमा का अनुसरण करती दिखाई देती हैं।

दृष्टा वधूः सूक्ष्मपटाभिरामा
रावानुगा सा शिबिकानुगर्भात्।
शौर्यं यथा श्रीरनुगच्छतीह
बभौ तथा रावपदानुगा सा।।७६।।

(संस्कृतटीका)

अश्वाधिरूढं रावमनुसरन्तीं शिबिकायां मस्तानी-वधूं वर्णयति - दृष्टेति। सूक्ष्माः पटाः आवरण-वस्त्रपटाः, तैरधिकं रम्या। शिबिकाया गर्भात्। अन्तर्गतस्थानात्। श्रीः लक्ष्मीः शौर्यं पराक्रमम्। इह लोके। सा मस्तानी रावस्य पदयोः अनुगच्छन्ती। उपमा।

(हिन्दी)

लोगों ने मस्तानी नववधू को देखा जो शिबिका में बैठी थी, महीन परदों के कारण राव के पीछे अनुसरण करती हुई लोगों को दिखाई दी। पारदर्शी परदे से वह और अधिक सुन्दर दिखाई दे रही थी। जिस प्रकार यहाँ पराक्रम का अनुसरण जयश्री करती है, उसी प्रकार बाजीराव का अनुसरण करनेवाली मस्तानी वधू के रूप में सुन्दर दिखाई दी।

श्रीबाजिरावस्य कृते कृतज्ञा

स्वयं विधात्रा भुवि निर्मितासौ

धन्याभवत् पण्डितराजमाप्य

प्रिया लवङ्गी यवनीव मुग्धा।।८०।।

(संस्कृतटीका)

सा मस्तानी। कृतज्ञा तस्योपकारं स्मरन्ती। स्वयं विधात्रा नान्येन केनापीत्यर्थः। अलौकिकं सौन्दर्यं तस्याः। निदर्शयति पूर्ववृत्तम् - मस्तानी धन्या जाता तथा, यथा पूर्वं यवनकन्यका लवङ्गी नाम्नी जहाँगीर-पातशाह-प्रदत्ता पण्डितराजाय जगन्नाथाय धन्या जाता। दृष्टान्तः निदर्शनगर्भः।

(हिन्दी)

श्री बाजीराव के उपकार को मानने वाली वह मस्तानी स्वयं ब्रह्मदेव द्वारा सुन्दर रूप में निर्मित थी। और जिस प्रकार पूर्व में बादशाह जहाँगीर ने संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित और कवि श्री पण्डितराज जगन्नाथ को भेंटस्वरूप लवंगी नामक यवनकन्या दी थी और वह धन्य हो गई थी, उसी प्रकार मस्तानी भी बाजीराव को पाकर धन्य हो गई।

मस्तानिनाम्नीं दयितां गृहीत्वा
रावः प्रविष्टो निज-पुण्यपुर्याम्।
विलोक्य रत्नम् ह्यनवद्यमेतज्-
जनैः कृतं स्वागतमेव तस्य।।८१।।

(संस्कृतटीका)

दयितां प्रियमहिलां सः बाजीरावः। सहर्षम् मोदेन सह। इदं मस्तानीगतं स्त्रीरत्नम्। महिलाभूषणम्। प्रजायां पुण्यपुरीजनैः।

(हिन्दी)

प्रिय पत्नी मस्तानी को लेकर बाजीराव ने पुणे नगर में बड़ी खुशी के साथ प्रवेश किया। पुणे की प्रजा ने भी उस महिला-रत्न को देखकर बाजीराव का स्वागत ही किया। (उन दोनों को देखकर प्रजा प्रसन्न हो गई।)

पुरा पुरोर्यत् पुरुहूत-रूपम्
संयोग-रम्या भुवि सोर्वशी च।
पुनर्हि रावेण सहात्र दिव्यं
मस्तानिरूपं जनशंसितं तत्।।८२।।

(संस्कृतटीका)

पुरा वेद-पुराणकाले, पुरुहूतस्य इन्द्रस्य रूपमिव रूपं, पुरुरवा इति नाम्नः राज्ञः। भुवि लोके। दिव्यं अप्सरसो रूपं लोके पौरुषेण सह संयुक्तमिति भावः। दिव्यं - अलौकिकम् मस्तानि-रूपं सौन्दर्यम्। जनैः लोकैः कीर्तितम्। भू-स्वर्गयोः पौरुष-सौन्दर्ययोः समागमो भुवि लोकैः प्रशंसित इत्यर्थः।

(हिन्दी)

प्राचीन समय में इन्द्र के रूप के समान रूप धारण करने वाले राजा पुरुरवा के साथ इस लोक में उर्वशी का संगम हुआ था। पुनः वही (पौरुष-स्त्री-सौन्दर्य का संगम) अर्थात् श्री बाजीराव और मस्तानी के मिलन की लोगों ने बहुत सराहना की। (दिव्य सौन्दर्य और लौकिक पौरुष का मिलन दुर्लभ होता है)।

संसारसारं प्रिययोगभक्तिर्
अध्यात्मयोगो मुरलीधरेऽपि।
किं ब्रह्मणः स्यात् सगुणं न रूपम्?
स प्रेमयोगोऽपि हि योगिगम्यः।।८३।।

(संस्कृतटीका)

तस्याः प्रेमाध्यात्मिकमिति वर्णयति - संसारसारम् इति। प्रियः श्रीबाजीरावः, तेन योगः संयोगः भक्तिः श्रद्धात्मिकं प्रेम। अस्याश्च मुरलीधरेण श्रीकृष्णेन सह योगः दार्शनिकः सम्बन्धः। ब्रह्मणः परमचैतन्यस्य। सगुणं सांसारिकं रूपम्। योगः सायुज्यत्वम् एकत्व-भावः। योगिगम्यः परमात्मपदे स्थितानां गम्यः। ब्रह्मणि परमात्मनि वा योगिनां सिद्धानां गम्यः ज्ञेयः।

(हिन्दी)

उस मस्तानी का बाजीराव के मिलन के रूप में संसार का सार बन रहा था और श्रीकृष्ण के प्रति उसकी दार्शनिक भक्ति थी। क्या ब्रह्म का सगुण रूप नहीं होता? वह प्रेम का दार्शनिक भाव योगियों को ज्ञात हो सकता है। (मस्तानी की भक्ति सगुण थी। वह केवल ऐन्द्रिय आसक्ति नहीं थी।)

मस्तानि-नाम्ना 'शनिवार-वाडा' -
मध्ये हवेलीति महालयेऽस्मिन्।
श्रान्तस्य रावस्य सुखास्पदं तत्
प्रियाधिवासः स्पृहणीय एव।।८४।।

(संस्कृतटीका)

शनिवार वाडेति नाम्ना प्रसिद्धे प्रासादे श्रीबाजीरावेण। मस्तानी-महालयो हवेलीति नामधेयः। वास-गृहम्। श्रान्तस्य रणादि-कार्यकलापान्निवृत्तस्य क्लान्तस्य श्रीबाजीरावस्य श्रममपनेतुम्। भवनम्। प्रीतिकरं गेहमेव सुखकरं भवतीत्यर्थः। श्रीबाजीरावोऽपि क्लान्तोऽस्या महालये विश्रान्तिं लभते स्मेति भावः। प्रियजनस्य गृहे निवासो वाञ्छनीयो भवति। अर्थान्तरन्यासः।

(हिन्दी)

'शनिवार वाडा' में मस्तानी के नाम की एक हवेली (मस्तानी महल नाम से) बाजीराव ने बनवाई। युद्ध आदि कार्यों से थके हुए बाजीराव के लिए वह (विश्रान्ति) का सुख देनेवाला स्थान था। प्रिय व्यक्ति के साथ रहना वाञ्छनीय होता है।

रावः स्वराज्यात् प्रददौ प्रियायै
'लोणी' तथा 'केंटुर-पाबलाख्यान्'।
मस्तानि-वंशाय ददौ स्वराज्यात्
'बान्दाख्य-राज्यं' नृपछत्रसालः।।८५।।

(संस्कृतटीका)

ऐतिह्यमेतत् - रावः स्वराज्यात् निजराज्यात्। पुण्यपत्तनसमीपस्थान्। लोणी, केंटूरं तथा पाबलमिति नामका ग्रामाः, तान् - नृपः छत्रसालोऽपि आगामि-मस्तानी-वंशाय स्वस्य राज्यात् बुन्देलखण्डस्थिताद् राज्यात्। बान्देति नाम्ना प्रसिद्धं राज्यं भागरूपेण ददौ। एतेनापि व्यज्यते यत् मस्तानी राजकन्या अभूदिति। तथा रावः नृपस्य तृतीयः पुत्र इव इति छत्रसालेन मानितः।

(हिन्दी)

बाजीराव ने मस्तानी को अपने राज्य से लोणी, केंटूर तथा पाबल नाम के गाँव जागीर के रूप में दिये थे। और राजा छत्रसाल ने भी मस्तानी के वंशजों के लिए अपने बुन्देलखण्ड में स्थित राज्य से एक भाग बान्दा नामक राज्य प्रदान किया। (इस से स्पष्ट है कि मस्तानी राजकन्या थी।)

टिप्पणी - आजकल राव-मस्तानी के वंशज बांदा के नबाब हैं जो इन्दौर में रहते हैं।

शत्रुञ्जयस्यास्य महेन्द्र-कान्तिः

मस्तानि-रम्भा हृदये प्रविष्टा।

सूर्यप्रभा सर्वदिने चकास्ते

रात्रौ तु सा चन्द्रगता विभाति।।८६।।

(संस्कृतटीका)

शत्रून् जयति, शत्रुञ्जयः, तस्य श्रीबाजिरावस्य, महेन्द्रस्य इन्द्रस्य कान्तिरिव कान्तिः इन्द्रस्य तेजः। मस्तानी एव रम्भा इन्द्रस्याप्सरा। दृष्टान्तरूपेणोपन्यासः सूर्यस्य रवेः प्रभा कान्तिः। चकास्ते – प्रकाशिता भवति। सा कान्तिः। चन्द्रे सूर्यस्य कान्तिः। रात्रौ प्रविशति इति भावः। समरे विजयिनः श्रीबाजिरावस्य तेजः मस्तानी – प्रियया सौम्यं जातम् इत्यर्थः। उपमा रूपकं दृष्टान्तश्च।

(हिन्दी)

शत्रुओं की पराजय करने वाले बाजीराव इन्द्र के समान तेजस्वी थे। मस्तानीरूपी रम्भा अप्सरा राव के हृदय में प्रविष्ट हो गई। दिन में सूर्य की प्रभा रहती है और रात्रि को वह चन्द्रमा में सुन्दर दिखाई देती है।

मस्तानि-चित्ते प्रियवल्लभोऽयम्
महान्तकोऽयं समरेऽरिभिश्च।
आप्तैश्च बन्धुः स सखेति मित्रैः
एकोऽप्यनेकैर्बहुधा व्यलोकि।।८७।।

(संस्कृतटीका)

अयम् - बाजिरावः। प्रिय-वल्लभः अनुरागेण प्रियः। आप्तैः शनिवारवाडा-स्थितै बान्धवैः बन्धुः भ्राता इति मित्रैः सुहृद्भिः मित्रमिति। व्यलोकि - अवलोकितः। एकोऽपि बाजिरावोऽनेकैः जनैः बहुधा अनेकरूपेषु दृष्टः। उल्लेखालङ्कारः।

(हिन्दी)

मस्तानी के हृदय ने बाजीराव को प्रिय वल्लभ के रूप में, शत्रुओं ने मृत्यु के रूप में, सगे-सम्बन्धियों ने भाई के रूप में तथा मित्रों ने सखा के रूप में देखा। वह एक ही अनेक लोगों को भिन्न भिन्न रूपों में दिखाई दिये।

जनेषु दाक्षिण्यगुणैरूदारैः
सौन्दर्यमस्या द्विगुणीबभूव।
लक्ष्मीःस्थिता सौरभयुक्तपद्मे
गुणादिरम्या कवितेव मान्या।।८८।।

(संस्कृतटीका)

जनेषु पुण्यनगरीजनेषु। दाक्षिण्यस्य गुणः – सौजन्यगुणः तैः। उदारैस्त्यागात्मकैः। दृष्टान्तरूपेण लक्ष्मीः श्रीः। गुणालङ्कारादिभिः रम्या सरसा कवितेव सा मस्तानी स्वगुणैः जनेषु प्रिया बभूव। दृष्टान्त उपमा विकस्वरश्च।

(हिन्दी)

मस्तानी का सौन्दर्य लोगों में दाक्षिण्य उदारता जैसे गुणों से दुगने रूप में बढ़ गया। लक्ष्मी का वास सुगंध से युक्त कमल में हुआ। गुण अलंकार आदि से कविता सुन्दर होती है वैसे मस्तानी अपने गुणों से लोकप्रिय थी।

श्रीबाजिरावस्य गुणैरुदारैः
सौन्दर्यमस्याः प्रगुणत्वमाप।
श्रियोऽधिवासात् शतपत्रकान्ति-
र्जातं तया राजगृहं च रम्यम्।।८६।।

(संस्कृतटीका)

गुणैरुदारैः - दयाशौर्यादिगुणैः। अस्याः - मस्तान्याः। श्रियः - लक्ष्म्याः अधिवासात् - वास्तव्येन शतपत्रस्य कान्तिः - कमलस्य शोभा भवति। राजगृहं - राज्ञः प्रासादः रम्यम् सुन्दरं जातम्। उपमा अलङ्कारः।

(हिन्दी)

श्री बाजीराव के उदार गुणों के कारण मस्तानी का सौन्दर्य द्विगुणित हुआ। जिस प्रकार लक्ष्मी के वास्तव्य से कमलपुष्प की शोभा होती है उसी प्रकार मस्तानी के कारण श्री बाजीराव का वह महल़ रमणीय हो गया।

रूपं तदीयं ललना-ललाम -

भूतं न भूतं न भविष्यतीति।

तद्दर्शनोत्का मुदितास्तु पौरा

अनर्घरत्नं प्रियमेव लोके।।६०।।

(संस्कृतटीका)

ललनाललामभूतं ललनासु सुन्दरम्। अभूतपूर्वं भविष्यत्-कालेऽपि न भविष्यति। तस्या दर्शनेन पौराः पुण्यपुरीजनाः मुदिताः प्रसन्नाः जाताः। अनर्घम् अमूल्यं रत्नम्। अर्थान्तरन्यासः।

(हिन्दी)

मस्तानी जैसा सौंदर्य न पहले हुआ और न भविष्य में होगा। उसे देखने के लिए उत्सुक पुण्यपुरी के लोग उसे देखकर प्रसन्न हुए। अमूल्य रत्न लोकप्रिय होता ही है।

सौन्दर्यमस्या हृदये यदासीत्

तदेव दृष्टं मुखमण्डलेऽपि।

ताम्बूलमास्ये यदि चर्वितं चेत्

कण्ठे बहिश्चारुणकान्तिरस्याः।।६१।।

(संस्कृतटीका)

यत् सौन्दर्यं मनोज्ञरूपं तस्या मस्तान्याः। तदेव सौन्दर्यं तस्या मुखमण्डले वदने दृष्टम्। किञ्च, यदि सा ताम्बूलस्य चर्वणां, तदास्वादयति, तर्हि तस्याः कण्ठे कण्ठप्रदेशेऽपि ताम्बूलरसस्य अरूणकान्तिः दृश्यते स्म। ईदृशं तत् सौन्दर्यम्। काव्यलिङ्गम्।

(हिन्दी)

मस्तानी के मन में भी जो सौन्दर्य निहित था, वही उस के मुख पर दिखाई देता था। (कहते है) जब भी वह पान का आस्वाद मुख में लेती थी, तब उसके कण्ठ के बाहर से पान की अधिक लालिमा प्रकट हुई दिखाई देती थी। उसकी काया भी उतनी ही सुन्दर थी।

प्रीत्या तयोः पुण्यजनाश्च तुष्टा
स्थिताः स्वभावं हृदये निगुह्य।
आर्द्रेन्धने संस्थितसुप्तवन्हिः
धूमानुमेयो न तु दृश्यते सः।।६२।।

(संस्कृतटीका)

श्री बाजीरावमस्तानीद्वयस्य। पुण्यजनाः पुण्यपुरी - प्रजा। निगुह्य गोपयित्वा। आर्द्रंच-जलयुक्तं च तत् इन्धनं काष्ठादिवस्तु च। धूमेनानुमेयः, यत्र-यत्र धूमस्तत्र तत्र वन्हिरितिव्याप्तिग्रहात् अनुमानेन ज्ञातः। न प्रत्यक्षरूपेण दृश्यते। दृष्टान्तः।

(हिन्दी)

श्री बाजीराव तथा मस्तानी के प्रेम के विषय में पुण्यपुरी की प्रजा सन्तोष का अनुभव करती थी। किन्तु वे लोग अपनी भावना को हृदय में ही गुप्त रखते थे। जहाँ धुआँ होता है वहाँ आग अवश्य होती है इस व्याप्ति -सत्य के अनुसार, पुणे की प्रजा के मन में उन दोनों के प्रति सन्तोष था, किन्तु उसे वे प्रकट नहीं करते थे। प्रेम तो अनुमान से ज्ञात होता था। अग्निरूपी आदर भाव का लोगों के धुएँरूपी मौन से अनुमान होता है।

श्रीबाजिरावस्य पराक्रमस्य
गता सुकीर्तिः प्रति दूरदेशम् ।
सौन्दर्य-पुष्पस्य तथैव तस्याः
कीर्तेः सुगन्धोऽपि गतः सुदूरम् ।।६३।।

(संस्कृतटीका)

पराक्रमस्य शौर्यस्य। सुयशः। मस्तानि-सौंदर्यं तदेव प्रसूनं-पुष्पम् कीर्तेश्च सुगन्धः सौरभः। प्रसूनस्य सौरभो दूरदेशं गच्छति तद्वत् राव-शौर्यं मस्तान्याश्च सौंदर्यं, तयोः कीर्तिर्दूरस्थजनेषु जगाम। रूपकम्।

(हिन्दी)

श्री बाजीराव के पराक्रम की गाथा दूर दूर तक फैल चुकी थी। और मस्तानी के सौन्दर्य की बात भी दूर तक गई थी। मस्तानी के पुष्प के समान सौन्दर्य के साथ बाजीराव के पराक्रम की कीर्ति-सुगंध देश में दूर तक गई थी।

रावं गृहे प्राप्य विलासरम्या

कृष्णस्य भक्तिर्विरहे प्रियस्य।

लतादिपर्णार्पणभक्तिमग्ना

मधु-प्रतीक्षां कुरुते वनश्रीः।।६४।।

(संस्कृतटीका)

संयोग-विरहयोः काले मस्तानीरूपं वर्णयति राव इति। प्रियं श्री बाजीरावे गृहे स्थिते, (मस्तान्याः) विलासो रमणम् तेन रम्या। श्रीकृष्णं प्रति भक्तिभावः। प्रिये दूरंगते। लतादीनां वल्लरीवृक्षाणां पर्णानां समर्पणमेव भक्तिः तस्यां मग्ना। वनस्य श्रीः वनशोभा मधोः वसन्तस्य। विना वसन्तं न वने वनश्रीः। दृष्टान्तः।

(हिन्दी)

प्रिय राव के घर लौटने पर विलास होता था। श्री बाजीराव जब युद्ध के लिए बाहर पधारते थे तब मस्तानी श्रीकृष्ण भक्ति के रस में अपने आप को समर्पित कर देती थी। लता आदि अपने पतझड़ के रूप में पत्तों को न्यौछावर करती हुई वसंत की प्रतीक्षा जिस प्रकार वनश्री करती है, मस्तानी भी उस प्रकार श्री बाजीराव की प्रतीक्षा में भक्ति में डूबी रहती थी।

अग्रे गृहीत्वा निजवाजिपृष्ठे
प्रियां 'दिवेघाट'-जलाशये च।
दृष्टो विहाराय स जातु गच्छन्
यथा जयश्रीः पुरतो भटस्य।।९५।।

(संस्कृतटीका)

निजस्य स्वकीयस्य वाजिनः अश्वस्य पृष्ठेऽग्रे अग्रभागे। प्रियां मस्तानीं 'दिवेघाट' नाम्ना प्रसिद्धे जलाशये मस्तानी-सरोवरमिति ख्याते सरसि विहाराय नौकायां भ्रमण-रमणार्थम्। जातु कदाचिन्नाहि प्रत्यहम्। गच्छन् रावः कौतुकेन सह व्यलोकि अवलोकितः।

(हिन्दी)

कभी कभी (निर्भय होकर) बाजीराव अपने घोड़े के अग्रभाग पर मस्तानी को लेकर पुणे के प्रख्यात 'दिवेघाट' नामक जलाशय पर विहार करने हेतु जाते थे, तब उन्हें लोग देखते थे। जैसे किसी वीर पुरूष के आगे आगे जयश्री चल रही थी। (आज भी वह मस्तानी सरोवर कहलाता है।)

रावस्य रूपं हृदि सन्निविष्टम्

नवोदितं किं प्रथमं स्मितं तत्?

स्मितं मितंचाप्यमितप्रभावं

अपूर्वरागाभिमतं पुनश्च दृष्टम्।।६६।।

(संस्कृतटीका)

रावस्य बाजीरावस्य रूपं प्रभावशीलं स्वरूपं हृदि मस्तानी-हृदये सन्निविष्टं प्रविष्टम्। रावदर्शनसमये प्रथमं अपूर्वम्। स्मितं किंचिदेव नवं च तदुदितं च पुनः मुखे प्रकटितम्। चापि तथापि च अमितः प्रभावः प्रभूतः परिणामः यस्य न पूर्वरागः -अपूर्वरागः प्रथमं प्रेम तेनाभिमतं सम्मतम्। मितमपि तदमितप्रभावमिति विरोधाभासोऽनुप्रासश्च।

(हिन्दी)

मस्तानी के हृदय में बाजीराव का रूप पैठ गया। क्या उसी समय उस के मुख पर पहला स्मित उदित हुआ? उस का स्मित किंचित् था, याने सीमित था, किन्तु उस स्मित का प्रभाव असीम था। प्रथम प्यार की सम्मति देता हुआ वह पुनः दिखाई दिया।

स्मितं मनोहारि मनोनुकूलम्
मिथोरहस्यं विवृतं करोति।
स्मितं जनाद् गोपयितुं तु तेन
मुखं सुमुख्या पिहितं मुखेन।।६७।।

(संस्कृतटीका)

स्मितं किञ्चित् हास्यांशः। मनोहारि चेतोहरम्। मनसः अनुकूलं मनोज्ञम्। मनसः रहस्यं गोपनीयं प्रेम। तेन रावेण। गोपयितुं अन्येभ्य इति यावत्। सुमुख्याः मस्तान्याः। पिहितं आच्छादितं, चुम्बितमित्यर्थः। शृङ्गारो व्यज्यते।

(हिन्दी)

मस्तानी के मुख पर किञ्चित् स्मित आया, वह मनोहर तथा मन के लिए अनुकूल तो था ही, और वह उन दोनों के मन में उदित (प्रेम) रहस्य को भी उजागर कर रहा था। इसीलिए उस स्मित को और लोगों से छुपाने के लिए बाजीराव ने अपने मुख सें उस के सुन्दर मुख को आच्छादित कर दिया।

सामान्यलोकैरधिवासितं तत्
मस्तानि-वासान्नगरं सुरम्यम्।
न निर्झरैः क्वापि निदाघरिक्तैर्-
नद्या तु कान्तारमतीव कान्तम्।।६८।।

(संस्कृतटीका)

पुण्यपत्तनं नगरं सामान्य-लोकैः जनैरधिवासितं तत्र वसतिः कृता। तन्नगरं मस्तानी-वासात् तस्या वास्तव्यकारणात् सुरम्यम् अधिकं सुन्दरम्। क्वापि कुत्रचित् निदाघे ग्रीष्मे रिक्तैस्तोयरहितैः निर्झरैर्जलप्रवाहैर्न, अपि तु कान्तारं वनं नद्या कान्तम् विभूषितं भवति। प्रतिवस्तूपमा।

(हिन्दी)

उस पुणे नगर में सामान्य लोगों की बस्ती थी, किन्तु मस्तानी के वास्तव्य से उस की शोभा अधिक बढ़ गई। ग्रीष्म में कहीं जल्दी सूख जानेवाले झरनों से नहीं, अपितु वन की शोभा उस में बहनेवाली नदी से अधिक बढ़ती है।

ईषत्स्वनीलारुणरागयुक्तम्

भाति प्रभाते सरसश्च तोयम्।

नीलारुणेऽस्या नयनेऽपि रम्ये

श्यामस्य रावस्य च भक्ति-रागौ।।६६।।

(संस्कृतटीका)

अरुणोदये मूलतः सरसः तोयं जलं नीलम्, तदा नीलारुणौ, तयो रागेण युक्तम्। ईषत् किञ्चित्। सरोवरं नीलारुणरागः तेन युक्तम् समेतम्। तोयम् - सरोवरस्य जलम्। अस्या नेत्रद्वयम्। कृष्णे नीलस्वरूपं भवति तथा श्रीबाजीरावोऽरुणकान्तिमति प्रिये सममेवाक्षियुग्मं मस्तान्याः। भक्ति-रत्योः सङ्गमोऽस्याः नेत्रद्वये दृश्यते स्म। दृष्टान्तः।

(हिन्दी)

प्रातःकाल में सरोवर का जल किंचित् नीला और किंचित् लाल जैसा होने से सुन्दर दिखाई देता है। (नीला जल और उसमें अरुणोदय की रक्तिम छटा से सौन्दर्य बढ़ता है)। और इस मस्तानी के दोनों आंखों में (श्रीकृष्ण) भक्ति का नीला और श्री बाजीराव के प्रति प्रेम का अरुणाई रंग प्रकट हो रहा था। भक्ति और प्रीति के रंग में मस्तानी रंग गई थी। कृष्ण घनश्याम और बाजीराव की आरक्तकान्ति उसके नेत्रों में समा गई थी।

कामे विदग्धा स्मरतापदग्धा

माया स्वयं ब्रह्म-पदानुरक्ता।

जना न जानन्ति रतिं तदीयाम्

मायाविनो ब्रह्म-सुखानभिज्ञाः।।१००।।

(संस्कृतटीका)

कामे - शृङ्गारे विदग्धा - पण्डिता स्मरस्य - कामस्य तापेन - पीडया दग्धा पीडिता। विदग्धापि दग्धेति विरोधः। माया - अविद्या, सांसारिकी बुद्धिः। ब्रह्मणः पदं परमचैतन्यस्य श्रीकृष्णस्य च, पदे - स्थाने, ब्रह्मानन्दे च, अनुरक्ता - समर्पिता। ब्रह्म जानाति ब्राह्मण इति न्यायेन ब्रह्मणि श्री बाजीरावे ब्राह्मणवीरे अनुरक्ता। तदीयां रतिं - मस्तानी-प्रेमभावम्। मायाविनः - संसारे धनादिषु लिप्ताः सामान्य-जनाः। ब्रह्म-सुखस्य - चैतन्यस्वरूप-स्वानन्दस्य, अनभिज्ञा - अज्ञान-युक्ताः। ये मायाभिहता भवन्ति ते ब्रह्मानन्दं न जानन्तीत्यर्थः। अर्थान्तरन्यासः। विरोधोऽपि। विदग्धा कुशलेति परिहारः।

(हिन्दी)

शृंगार में कुशल, कामदेव के ताप से पीडित वह मस्तानी ब्रह्मस्वरूप श्रीकृष्ण की भक्ति में उनकी माया थी। ब्राह्मणवीर बाजीराव के प्रति समर्पित थी। लोग उनकी प्रीति को नहीं समझ सके थे। (जो लोग) माया के चँगुल में ही फँसे रहते हैं वे ब्रह्मानन्द को नहीं जानते।

एकाकिनी सा स्वजनैर्वियुक्ता
पुण्ये हिमाच्छादितपद्मिनीव।
प्राप्नोति सूर्यस्य करैर्विकासं
प्रत्यागते मोदमवाप रावे।।१०१।।

(संस्कृतटीका)

एकाकिनी रावे बहिर्गते विरहिणी। स्वजनैः पितृबान्धवादिभिः वियुक्ता विरहिता तत्र पुण्यनगरे। रावस्य स्वजनैरपि परित्यक्ता। हिमेन तुहिमेनाच्छादिता चासौ पद्मिनी कमलिनी च। सूर्यस्य किरणाः। विकासं उन्मीलनम्। प्रत्यागते पुनः पुण्यनगरे आगते रावे मुदं हर्षम्। उपमा।

(हिन्दी)

पुणे नगर से जब बाजीराव कहीं बाहर जाते थे तो मस्तानी वहाँ अकेली और अपने लोगों से दूर पड़ जाती थी। वह हिम से आच्छादित कमलिनी के समान थी। जिस प्रकार सूर्य के किरणों के स्पर्श से कमलिनी पुनः विकसित होती है उसी प्रकार राव के आनेपर मस्तानी प्रसन्न होती थी।

वियोगमेघावृतराव-सूर्ये
नीहारवाताहतपद्मिनी सा।
यदोदितो राव-रविः पुनश्च
तदोदितास्याः कमलाननश्रीः।।१०२।।

(संस्कृतटीका)

रावेण सह वियोगो विरह एव मेघः, तेन आवृत आच्छादितः राव एव सूर्यस् तस्मिन् सति। सा मस्तानी नीहारेण कुहेडिकया (कुहरा इति भाषायाम्) तथा वातैः शीतवायुभिः आहता आच्छादिता पद्मिनी कमलिनी सा मस्तानी। पुनश्च यदा राव एव रविः, उदितः तत्रागतः, तदा अस्याः मस्तान्याः कमलमिवाननं मुखं तस्य श्रीः कान्तिः । रूपकम्।

(हिन्दी)

वियोग के मेघ से आच्छादित राव रवि थे तब मस्तानी कुहरे से तथा हवा से आहत ऐसी पद्मिनी ही थी। किन्तु जब रावरूपी सूर्य का पुनः उदय हुआ तब मस्तानी के मुख-कमल की कान्ति दिखाई देने लगी।

सूर्यस्य तापेऽपि सरोज-रागः
खड्गं शुभं वेष्टनिकागतं च।
वीरोऽपि मस्तानि-रति-प्रशान्तः
विभाति वीरो रमणी-सहैव।।१०३।।

(संस्कृतटीका)

प्रखर-स्वभावो रावोऽपि मस्तानि-सहवासे सुखदः। सरोजस्य कमलस्य रागः प्रीतिः आरक्तता च। खड्गस्य प्रच्छदनिका वेष्टनं मृदुपेशलं भवति, तथैव, रूपवत्या मस्तान्या सह रावस्य सहवासः सुखकरः। खड्गम् रावः प्रच्छदनिका मस्तानी च। तस्यां गतं निहितम्। खड्गं तस्यावरणिका कोमला च भवति। रावः श्रीबाजीरावः। मस्तान्या रतिः प्रेम, तस्यां प्रशान्तः मधुर-स्वभावशीलः। विशेषं सामान्येनार्थेन समर्थयति, वीरः रमण्या सह शोभते इत्यर्थः। दृष्टान्तार्थान्तरन्यासौ। दृष्टान्तेन विषमो व्यज्यते।

(हिन्दी)

सूर्य के प्रखर धूप में भी कमल की कान्ति बनी रहती है। म्यान में रखा शस्त्र भी कल्याणकारी होता है। खड्ग तीक्ष्ण होता है, किन्तु मुलायम म्यान में शुभ, शान्त होता है। बाजीराव (रण में) तेजस्वी थे, किन्तु मस्तानी के प्रेम में शान्त हो जाते थे। वीर पुरुष रमणी के साथ शोभा देता है।

गृहे तु चन्द्रग्रहणं गृहिण्या
वियोग-राहुर्मुखचन्द्रलग्नः।
मस्तानि-चित्तं विरहाग्नितप्तम्
पर्जन्यवृष्टिः प्रियरावदृष्टिः।।१०४।।

(संस्कृतटीका)

गृहे शनिवारवाडा-भवने चन्द्रस्य ग्रहणम् गृहिण्या मस्तान्याः। रावस्य वियोग एव विरह एव राहुर्दुष्टग्रहः। तस्या मुखमेव चन्द्रः शशांकः तस्मिन् लग्न-ग्रहणम्। वियोगे तस्या मुखं मलिनम्। किञ्च मस्तान्याः चित्तं मनः विरह एव अग्निः तेन तप्तम्। प्रियश्चासौ रावश्च, तस्य दृष्टिः प्रत्यक्षेणावलोकनम्, मस्तान्या इति यावत्। पर्जन्यस्य वर्षायाः वृष्टिः। रूपकम्।

(हिन्दी)

घर में ही गृहिणी होकर भी मस्तानी के लिए चन्द्रग्रहण लगता था। राव के वियोग का राहू उस के मुखचन्द्र को ग्रस रहा था। और विरह की आग से झुलसी हुई मस्तानी को राव के आगमन पर उन की दृष्टि वर्षा की वृष्टि थी।

चन्द्रस्य कान्तिः सुखदा निशायाम्

सूर्यस्य तापः प्रखरो निदाघे।

सौम्यः प्रियायां प्रखरश्च शत्रौ

रूपद्वयं भास्वर-भूसुरस्य।।१०५।।

(संस्कृतटीका)

सुखदा सौम्यप्रकाशरूपेण सुखं ददाति सा। निदाघे - ग्रीष्मे। भास्वरश्चासौ भूसुरश्च तेजस्वी तथा शान्त-स्वभावो ब्राह्मणः। विषम-स्वभावयोर्यथास्थाने प्रवृत्तिरिति विशेषतादिः। विषमालङ्कारः। व्यतिरेको व्यज्यते।

(हिन्दी)

चन्द्र की चांदनी रात्रि में सुख देती है और सूर्य का ताप ग्रीष्म में तीव्र बन जाता है। बाजीराव मस्तानी के लिए सौम्य स्वभाव के थे और शत्रु के लिए प्रखर। ये दोनों रूप उस तेजस्वी ब्राह्मण में (विद्यमान) थे।

भास्वानिव प्रातरि वर्द्धमानः

स भूसुरः क्षत्रियधर्मशूरः।

सा राजकन्या यवनी-सुतापि

श्रीकृष्ण-भक्त्या शुभदा च लोके।।१०६।।

(संस्कृतटीका)

भास्वान् सूर्यः। वर्द्धमानः कार्यकलापेषु वर्द्धिष्णुः। भूसुरः ब्राह्मणः। क्षत्रिय-धर्मः, तस्मिन् शूरः युद्धभूमौ वीरः। सा मस्तानी राज्ञः श्रीछत्रसालस्य कन्या यवन्याः मुस्लिम-पत्न्याः राज्ञीसुता। श्रीकृष्णे भक्तिस्तस्याः। लोके शुभं कल्याणं ददाति स्म सा। उपमा।

(हिन्दी)

प्रातःकाल के सूर्य के समान श्रीबाजीराव वर्द्धिष्णु थे। ब्राह्मण होते हुए भी क्षत्रिय धर्म के अनुसार (लड़ने में) शूर थे। मस्तानी यवन स्त्री से उत्पन्न थी, किन्तु वह राजकन्या थी। श्रीकृष्ण की भक्ति के कारण (लोगों मे) कल्याणकारिणी थी।

तत्प्रीतिरज्वा हृदये निबद्धा

सा भक्तियोगाद् भयमुक्तिमाप।

निःश्रेयसे सा परमाणुरूपं

प्रियस्य गर्भात्मचिदंशमाप।।१०७।।

(संस्कृतटीका)

तस्य प्रीतिः राव-प्रेम, सैव रज्जुः रशना, तया बद्धा। कृष्णे भक्तिः, तस्या योगात् भयात् आप्तजनादिप्राप्तभीतेः। मुक्तिं स्वातंत्रताम्। सा मस्तानी निःश्रेयसे जनकल्याणाय, अन्यत्र मोक्षार्थम्। परमाणुरूपं अणुस्वरूपम्। अन्यत्र नित्यः परमाणुः, तद्रूपम्। प्रियस्य रावस्य। गर्भात्मनः चित् शक्तेः अंशं आप विदधौ। सा गर्भिणी जातेत्यर्थः। श्लेषः।

(हिन्दी)

राव के प्रेमरूपी रस्सी से मन में वह बँधी थी, तथापि आप्तजनों के भय से भक्तियोग के कारण मुक्त थी। जिस प्रकार न्यायशास्त्र के अनुसार परमाणु अंश मोक्ष के लिए सचेष्ट होता है उसी प्रकार राव के गर्भ का चैतन्यरूप अंश उसके (उदर में) कल्याण के लिए स्थापित हुआ। (वह गर्भवती हुई)।

मस्तानि-योगान्मधुरस्य तस्य
तेजस्विता शत्रुकृते ऽवतीर्णा।
अद्रिर्वनश्री-सहवासरम्यः
पारुष्यमन्तःस्थित-पौरुषं तत् ।।१०८।।

(संस्कृतटीका)

मस्तानि-योगात् तस्याः सहवासात्। मधुरः रमणीयः, तस्य बाजीरावस्य। तेजस्विता पराक्रमस्य शौर्यस्य वा भावः। अद्रिः पर्वतः वनश्रियः सहवासेन रम्यः आल्हाददायकः। तथापि अद्रेः पारुष्यं - काठिन्यम्। अन्तःस्थितं आभ्यन्तरे वर्तमानं पौरुषं पुरुषार्थ एव। विषमो दृष्टान्तश्च।

(हिन्दी)

मस्तानी के साथ मधुर स्वभाव के बाजीराव की तेजस्विता का शत्रुओंको अनुभव होता था। रम्य वनश्री के संयोग से पर्वत सुन्दर दिखाई देता है किन्तु अंदर से वह कठिन होता है। (प्रसंगानुसार माधुर्य तथा तेजस्विता उनमें थी)।

स्वराज्यहेतोर्भुवि राव एकः
स्वधर्मगोप्तारिवधे प्रवृत्तः।
लोकप्रियोऽभूत् प्रिययाऽपि साकम्
धीरा गुणज्ञाः प्रभवन्ति लोके।।१०६।।

(संस्कृतटीका)

स्वराज्यस्यकृते - छत्रपतेः शिवराजस्य 'हिन्दवी स्वराज्य'मिति प्रतिज्ञायाः पूर्तये श्रीबाजीरावस्य पराक्रम इति कारणात्। स्वस्य धर्मस्य भारतीय-धर्मस्य, गोप्ता संरक्षकः। अरीणां शत्रूणाम् वधाय मारणाय प्रवृत्तः सः बाजीरावः। प्रियया मस्तान्या सह। धीरा प्रगल्भसत्वा जनाः। परस्य गुणान् ये जानन्ति ते। प्रभवन्ति प्रभावशालिनो भवन्ति। अर्थान्तरन्यासः।

(हिन्दी)

छत्रपति शिवाजी महाराज द्वारा स्थापित स्वराज्य के लिए उनके बाद भारत में धर्म के संरक्षक तथा शत्रुओं को मारने के लिए सक्षम श्री बाजीराव एकमात्र वीर थे। इसीलिए मस्तानी के साथ ही बाजीराव लोकप्रिय थे। गुणों को परखनेवाले धैर्यशील व्यक्ति जनता में प्रभावशील होते हैं।

टिप्पणीः सभी युद्धों मे राव विजयी हुए थे।

उपेक्षिता सा यवनीति पुण्ये
प्रताडितान्यैर्बहुभिस्तथाप्तैः।
रावस्य प्रेमावरणं त्ववाप्य
तया मनो रक्षितमत्र तापात्।।११०।।

(संस्कृतटीका)

मस्तानी यवनी इति कारणात् पुण्ये पुण्यपत्तने। प्रताडिता दुःखिता। तस्यै कष्टं प्रदत्तम् आप्तैः स्वजनैः। प्रेम्णः आवरणम् आच्छादनवस्त्रम्। मनः स्वहृदयम्। तापात् कष्टात्। रूपकम्।

(हिन्दी)

पुणे में यवनी मस्तानी के आने पर उस की घोर उपेक्षा की गई। उसे अन्य लोगों और सगे-सम्बन्धियों ने बहुत पीड़ा पहुँचाई। एक राव के प्रेम की चादर थी जिस को ओढ़कर उस ने उन लोगों के ताप से अपने मन को बचाया। (मनोबल खोया नहीं)।

युद्धप्रसंगेष्वपि बाजिरावं
मस्तानियोगः सफलं चकार।
दक्षा हि काशी स्वपतिप्रभावात्
गृह्णाति कान्तिं हि रवेः शशीव।।१११।।

(संस्कृतटीका)

मस्तानीयोगः सहयोगः। उत्साहवर्धनादिभिरुक्तिभिरित्यर्थः। प्रभावात् तेजसः (श्रीबाजिरावस्य)। दक्षा - स्वराज्य-कुल-रक्षणे तत्परा स्वकौशल्यं धारयन्तीत्यर्थः। शशीव - उपमालङ्कारः।

(हिन्दी)

युद्ध के समय मस्तानी के कारण बाजीराव विजय प्राप्त कर रहे थे। पति के प्रभाव के कारण पत्नी (काशीबाई) राज्य व कुल रक्षणसंबंधी कार्यों में दक्ष हो गई थी जैसे चन्द्रमा सूर्य से अपनी कान्ति ग्रहण करता है वैसे ही।

रावस्य माता स्वजनाश्च बन्धुः
दग्धाः स्वयं मत्सरवन्हिना ते।
भीतिस्तु तेषां ज्वलदुल्मुकेव
दग्धं गृहं सैव करिष्यतीति।।११२।।

(संस्कृतटीका)

रावस्याप्ता आशंकया मस्तानीविषये चिन्तयन्ति - माता राधाबाई, आप्तजनाः सम्बन्धिनः बन्धुश्च चिमाजिः। मस्तानीविषये मत्सर एव अग्निः। ज्वलन्ती अग्नियुक्ता उल्मुका अग्निशलाका इव सैव मस्तानी गृहं पेशवानां कुलं दग्धं भस्मीभूतम्। इति भयम्। रूपकम्, उपमा च।

(हिन्दी)

बाजीराव की माता राधाबाई, सगे-सम्बन्धी लोग तथा भाई चिमाजी मस्तानी के प्रति मत्सर रूपी अग्नि से स्वयं दग्ध हो गये थे। (कष्ट तो उन्हें ही हो रहा था।) उन्हें डर था कि कहीं जलती शलाका के समान यह मस्तानी पूरे खानदान को राख में न बदल दे। (पत्नी काशी अवश्य समझदार महिला थी।)

पुण्ये च काशी यवनी-प्रवेशं
सुखाय पत्युर्मनसा तु मेने।
तथापि नारी पति-जीवने किम्
एकाधिकारं सहजं जहाति?।।११३।।

(संस्कृतटीका)

पुण्ये गृहे - शनिवारवाडा - नाम्नि महालये। यवन्याः मस्तान्याः। भर्तुः सुखाय - श्रीबाजिरावस्य आनन्दार्थम्। मेने स्वीचकार। एकाधिकारः पत्युः जीवने पत्न्याः एकमात्र-स्वामित्वम्। अर्थान्तरन्यासः।

(हिन्दी)

पुणे के 'शनिवारवाड़ा' महल में उस यवन स्त्री के (अवांछनीय) प्रवेश को पति-सुख के खातिर उन की पत्नी काशी ने स्वीकार तो कर लिया। फिर भी कोई नारी अपने पति पर अपने एकाधिकार को सहजता से कैसे छोड़ सकती है?

जनापवादः शमतां गतोऽपि
सापत्नभावव्यथिता तु पत्नी।
कान्ता द्वितीयापि तु साद्वितीया
भक्तिस्तदीया सुखदा जनेषु।।११४।।

(संस्कृतटीका)

जनापवादः। मस्तानी-परिणय-विषये लोकनिन्दा। शमतां गता शान्तः। कान्ता - सुन्दरी मस्तानी। अद्वितीया - अनन्यरूपा। किञ्च तस्याः श्रीकृष्णभक्तिभावेन जनाः सुखिनः जाता इत्यर्थः। विरोधः।

(हिन्दी)

यद्यपि (मस्तानी को लेकर) लोकनिन्दा (कुछ समय बाद) शांत हो गई थी तथापि श्री बाजीराव की प्रथम पत्नी सापत्नभाव के कारण व्यथित थी। मस्तानी तो द्वितीय पत्नी होने पर भी सौंदर्यादि गुणों से अद्वितीय थी। उसके श्रीकृष्ण के प्रति भक्तिभाव के कारण लोगों में सुखदायक भी थी।

वीरस्य पत्नी पति-शौर्यमुग्धा
सा सौख्यदात्री हृदि न प्रसन्ना।
अहिस्तु दूर्वास्विव नैव दृष्टस्-
तदीयरोषो मधुराननायाः।।११५।।

(संस्कृतटीका)

दूर्वासु - हरिततृणेषु। अहिरिव - सर्प इव। तदीयः - काशीबाई - नाम्न्याः पत्न्याः। मुखे माधुर्यभावः तथापि मनसि च रोषः न केनापि दृष्ट इति भावः। उपमालङ्कारः।

(हिन्दी)

वीर राव की पत्नी काशीबाई पति के पराक्रम पर मोहित थी। किन्तु माधुर्यभाव से युक्त उस के मुख के कारण उस के (मन में छिपा) रोष, हरी दूब में छिपे सर्प के समान ही, किसी कों दिखाई नहीं दिया।

मस्तानि-निष्कासनमीहमानैः
क्षुब्धः कृतस्तैः स्वजनैश्चिमाजिः।
एकाकि-रावं स जगाम शीघ्रम्
न दूरदृष्टिर्लघुचेतसां हि।।११६।।

(संस्कृतटीका)

मस्तान्या निष्कासनं निर्वासनम् ईहमानैः स्वजनैः जननी-बान्धवादिभिः क्षुब्धः उद्दीप्तः। एकाकी एकान्ते स्थितश्चासौ रावश्च, तं प्रति। शीघ्रं त्वरं, न विचार्येत्यर्थः। लघुचेतसां क्षुद्रस्वभाववतां मनुष्याणां दूरदृष्टिः परिणामविषये चिन्तयन्ती - बुद्धिर्न भवति। अर्थान्तरन्यासः।

(हिंन्दी)

मस्तानी को पुणे से बाहर निकालने की इच्छा रखनेवाले आप्त-बान्धवों ने चिमाजी को उकसाकर क्षुब्ध किया। तब तत्काल चिमाजी अकेले राव को देखकर उनके पास चला गया। जिनका मन क्षुद्र होता है उन्हें दूरदृष्टि नहीं होती है।

रावं च मस्तानि-रतिं विहातुं

प्रोवाच धूर्तो निभृतं चिमाजिः।

'नदी-प्रवाहाहृतमूलभूमिः

महान् तरुर्याति हि दुर्बलत्वम् ।११७।।

(संस्कृतटीका)

मस्तान्याः विषये या रतिः, रावस्यासक्तिः प्रेम वा तां विहातुं त्यक्तुम्। धूर्तश्चतुरः निभृतमेकान्ते प्रोवाच। नदी-प्रवाहः धारा। तेन प्रक्षालिता मूलस्था वृक्षस्याधारभूमिः मृत्तिका यस्य सः वृक्षः। महान् तरुः महावृक्षः। दुर्बलत्त्व शक्तिहीनां स्थितिम्। दृष्टान्तः।

(हिन्दी)

राव को मस्तानी के मोह से छुड़वाने के लिए उस के पास आ कर चतुर चिमाजी ने एकान्त में राव से कहा-

'यदि किसी महावृक्ष के मूल में स्थित मिट्टी को नदी का प्रवाह बहा देता है तो वह महावृक्ष भी निर्बल हो जाता है।'

नत्वा स रावं पुनरप्युवाच

'क्षमस्व बन्धो मम धृष्टतायै।

किं शुक्र-तेजोऽस्ति रवेः समक्षं?

तेजस्वितायाा न सखाथवाप्तः।।११८।।

(संस्कृतटीका)

चिमाजिः पुनः रावमुवाच - नत्वा नमस्कृत्वा। धृष्टतायै या भाविवचनेषु साहसम्, तस्यै धृष्टतायै। शुक्रो ग्रहः तस्य तेजः। रवेः सूर्यस्य समक्षम् पुरतः किम्? नैवेत्यर्थः। तद्वन्ममापि भवतां समक्षं कः प्रभाव इति भावः। तेजस्विनां स्वशौर्यादिगुणैः प्रभायुक्तानां न कोऽपि सखा मित्रं, आप्तो वा बान्धवादयो वा। अर्थान्तरन्यासः।

(हिन्दी)

चिमाजी ने प्रणाम कर आगे कहा -

'भाईसाहब, मैं जो कहने की धृष्टता कर रहा हूँ, उस के लिए मुझे क्षमा करें। भला, सूर्य के सामने शुक्र ग्रह का क्या तेज हो सकता है? जो तेजस्वी होते हैं उनका न कोई मित्र या रिश्तेदार होता है।

न चाग्निहोत्रं न च यज्ञवन्हिर्-
अग्नेः शलाका तु न धर्ममान्या।
संस्थाप्य तां किं शयनस्य कक्षे
'सा' स्त्री तु तापाय चरिष्यतीति।।११६।।

(संस्कृतटीका)

चिमाजिः स्वबन्धुमावेदयति - नेति। हवनार्थमग्नेः गृहे स्थितिः। यज्ञस्य कृते कुण्डे अग्निस्थापना मान्या। किन्तु अग्निशलाका ज्वलदुल्मुकम्। धर्मेण न मान्या स्वीकृता। सा शयनस्य प्रकोष्ठे अग्निकण्डिका भवतः तापाय दाहेन कष्टाय चरिष्यति कष्टं जनयिष्यतीति चिमाजेर्भयसूचना। न तु 'सा' (मस्तानी) पालनीया गृहदहनार्थम् इति भावः। दृष्टान्तः।

(हिन्दी)

'भाईसाहब, घर में अग्निहोत्र हो या यज्ञशाला हो, अग्नि की उपासना धर्ममान्य तो है। किन्तु जलती हुई शलाका मान्य नहीं है जिसे अपने शयन के कमरे में रखेंगे तो आप को ताप देगी।' (घर में धर्मपत्नी को धर्म की मान्यता है, किन्तु मस्तानी को नहीं।)

राकासु चन्द्रस्य कलाभिवृद्धिः

तस्यैव चन्द्रस्य कलङ्क-वृद्धिः।

श्रेष्ठं पदं प्राप्य गुणप्रकर्षात्

नरस्य दोषाः प्रगुणीभवन्ति।।१२०।।

(संस्कृतटीका)

राकासु पूर्णिमासु कलाः शोडषकलाः तासां वृद्धिः। कलङ्कस्य वृद्धिः कलङ्कोऽपि वर्द्धते। दृष्टान्तेन समर्थयति - गुणानां उदारैर्गुणैः अधिगम्योच्चं पदं तत्। प्रगुणीभवन्ति दोषाः वर्द्धन्ते। दोषा कथं 'प्रगुणी' भवन्तीति। दोषाणां गुणत्वे विरोधो व्यज्यते। दृष्टान्तोऽर्थान्तरन्यासोऽप्रस्तुतप्रशंसा च। (अनेक-गुणेषु सत्वेष्वपि रावस्य दोषा अपि प्रकटी-भवन्ति लोक इति भावः।)

(हिन्दी)

पौर्णिमा में चन्द्रमा की सभी कलाएँ बढ़ती हैं, उसी प्रकार उसके कलंक की भी वृद्धि होती है। अपने अनेक गुणों के प्रभाव से श्रेष्ठ स्थान पाने पर भी मनुष्य के दोष लोगों को वृद्धिंगत दिखाई देते हैं। (राव के श्रेष्ठ पद पर पहुँचने पर भी कुछ दोष दिखाई देने लगे थे यथा मस्तानी का प्रेम)।

क्षणार्धरम्या न सुखाय नार्यः
रक्षन्ति वंशं कुलयोषितस्तु।
क्षणप्रभायास्तडितो न पातम्
इच्छन्ति लोका जलमेव मेघात्।।१२१।।

(संस्कृतटीका)

अर्धे क्षणे अत्यल्पसमय एव। रम्या रन्तुं योग्याः। न सुखाय मोदाय। कुलस्य वंशस्य योषितः स्त्रियः। कुलाङ्गना वंशं तथा तदीयं यशो वर्द्धयन्तीति भावः। क्षणमात्रं दीप्ता तडितः - विद्युतः। पातं - पतनम्। मेघात् जलमेव, वर्षणमेव। न लोकाः विद्युतः पतनं, अपितु जलवृष्टिमेव इच्छन्ति जना इत्यर्थः। मस्तानी यद्यपि स्वसौन्दर्यवशाद् रम्या, तथापि कुलस्त्री एव वंशवृद्धिं करोति। दृष्टान्तः। अप्रस्तुतप्रशंसा च।

(हिन्दी)

क्षणमात्र सुन्दर स्त्रियाँ नित्य सुख नहीं दे सकतीं। कुलवधुएँ वंश की रक्षा करती हैं। क्षणमात्र चमकनेवाली बिजली का लोक गिरना नहीं चाहते अपितु मेघ से जल की वर्षा चाहते हैं।

लोकापवादः किमुपेक्षणीयः?

पापं सहन्ते न जना हि पुण्ये।

विषौषधेः किं ग्रहणं हिताय?

न रक्षणीया विषकन्यका 'सा'।।१२२।।

(संस्कृतटीका)

लोकापवादः जनैः कृता निन्दा मस्तानी-संहवास-विषयें। पुण्ये पुण्यपत्तने। पुण्ये सदाचरणे पापं कदाचरणं कथं सोढुं शक्यते। विषस्यौषधिः अखण्डरूपेण न ग्राह्या हिताय हानिप्रदा। या मस्तानी सा विषकन्यकैव अन्ततो गत्वा हानिमेव करिष्यतीत्यर्थः 'सा' इति तस्याः नाम न गृहति। दृष्टान्तः।

(हिन्दी)

लोगों में निन्दा की कोई व्यक्ति कैसे उपेक्षा कर सकता है? इस पुणे में (पुण्य में) पाप को कोई सहन नहीं करेगा। विषैली औषधि लेना भी पड़े तो भी निरन्तर उसे लेते रहना हानिकारक होता है। मस्तानी एक विषकन्या ही है। (मस्तानी के चंगुल में मत फँसिए भाईसाहब)।

सदुत्तरीयं मलिनं यदि स्यात्
मालापि कण्ठस्य विदारिणी स्यात्।
सुराप्रभावादसुरो नरः स्यात्
न 'सा' स्वकीया सुखदा भवेन्नः।।१२३।।

(संस्कृतटीका)

उत्कारीयम् अङ्गवस्त्रम् मराठी भाषायामुपस्त्री 'अंगवस्त्रमिति' कथ्यते। मलिनं कलंकयुक्तम्। माला कण्ठे हारः। सुरा मद्यं, तस्याः प्रभावात् उन्मादयोगात् नरः असुरः दैत्यः। दृष्टान्तः। तथैव सा मस्तानी न स्वकीया विधर्मिणी नः अस्माकं कृते।

(हिन्दी)

यदि उत्तरीय वस्त्र (अंगवस्त्र) पर दाग पड़ गये, गलेकी माला यदि गला काटने लगे, सुरा (मद्य) भी मनुष्य को यदि असुर बना दे तो उन विषयों को छोड़ना होगा। उसी प्रकार मस्तानी हमारे लिए सुख देनेवाली न होगी क्यों कि वह पराई स्त्री है। (उस से दूर होने में ही भलाई है)।

राज्ये प्रभुत्वं च विवेकहीनं
स्वपक्षहानिं कुरूते तदेव।
प्रमत्तबुद्धिः समरे गजोऽपि
हन्ति स्वसैन्यम् ह्यविचारतश्च।।१२४।।

(संस्कृतटीका)

प्रभुत्वमधिकारः। विवेकेन हीनम् सदसन्निर्णायकबुद्धिशून्यम्। स्वपक्षस्य स्वजनस्य। प्रमत्ता मदेन सन्तुलनहीना बुद्धिर्यस्य सः गजः। अविचारतः अविमृश्य। भवतां विवेकशून्यत्वं आत्मघातकमिति भावः। दृष्टान्तानुप्राणितोऽर्थान्तरन्यासः।

(हिन्दी)

राज्य में अधिकार प्राप्त होने पर बुद्धि विवेकशून्य हो जाती है और वही अपने पक्ष के लिए घातक सिद्ध होती है। युद्ध में पागल हाथी भी बिना सोचे समझे अपने ही सैन्य को कुचल देता है। (आप को विवेक रखना चाहिये।)

किं नागिणीशीर्षमणिर्न रम्यः?
शय्यापदे सा न तु पालनीया।
दृश्यं गिरेः सुन्दरकन्दरायाः
शृंगात्तु तस्यां पतनं वरं किम्?।।१२५।।

(संस्कृतटीका)

नागिण्याः शीर्षस्य फणाया मणिः रत्नम्। शय्याया पदे शयनपर्यंके देया पालनार्थम्। सुन्दररूपा चासौ कन्दरा च गिरिश्रेणिमध्यभागः। तस्यां कन्दरायाम्। पतनं भृगुपतनमिति यावत्। वरं समीचीनम् किम्? अप्रस्तुतप्रशंसा। दृष्टान्तश्च।

(हिन्दी)

नागिन की फणापर दिखाई देनेवाला मणि सुन्दर तो होता है। किन्तु क्या उस नागिन को अपने शयन घर में पालना उचित होगा? पर्वत के शिखर से कोई घाटी सुन्दर दिखाई देती है, क़िन्तु पहाड़ की चोटी से उस घाटी में कूद पड़ना अच्छी बात है? (अर्थात् सुन्दर है किन्तु मस्तानी को घर में रखना उचित नहीं है)।

अनिन्द्यरूपा मम बन्धुजाया
गृहे न योग्या परिरक्षितुं सा।
या छूरिका कांचननिर्मितापि
किमर्हति स्वोरसि सा प्रवेष्टुम्?'।।१२६।।

(संस्कृतटीका)

ज्येष्ठबन्धो, मस्तानी अनिंद्यंदोषरहितं रूपं सौन्दर्यं यस्या सा। तथापि गृहेऽत्र शनिवारवाडाभवने परिरक्षितुं पालयितुं न योग्या अनर्हा। रक्षारूपेण न स्वीकर्तव्या इति ध्वनिः। दृष्टान्तमुखेन समर्थयति - काञ्चननिर्मिता स्वर्णमयी. छूरिका। स्वस्य आत्मनः उरसि वक्षःस्थले प्रवेष्टुम् अर्हति योग्या भवति किम्? नैवेत्यर्थः। दृष्टान्तः।

(हिन्दी)

(बड़े भाई), भाभीजी के सौन्दर्य की सर्वत्र प्रशंसा है। किन्तु उन्हें घर में रखना उचित नहीं है। जो छूरी सोने की हो तो भी क्या उसे छाती में घुसाना उचित होता है? कदापि नहीं।' (मराठी में एक कहावत है - *'सोन्याची झाली सुरी, म्हणून काय घालावी उरी?)'*

मध्ये तु रावो निजगाद बन्धुम् -
'मस्तानिरेषा मम भाग्यरेषा।
निन्दन्तु मां ये कृपण-स्वभावाः
न निन्दकानां वचनं प्रमाणम्'।।१२७।।

(संस्कृतटीका)

मध्ये चिमाजिवचनं श्रुत्वा मध्ये। एषा मस्तानी मम भाग्यस्य यशसः रेषा। ये कृपणा अनुदारसत्त्वाः। निन्दकानां ये परान्निन्दन्ति तेषां वचनं न प्रमाणम् सत्यरूपेण गृह्णन्ति जनाः। अर्थान्तरन्यासः।

(हिन्दी)

चिमाजी के वचन सुनते हुए बीच में राव ने उसे कहा-

'देखो, मस्तानी मेरी भाग्य की रेखा है। जो क्षुद्र लोग होंगे वे भले ही मेरी निन्दा करें। जो दूसरों की निन्दा करते हैं उन की बातों पर किसी का विश्वास नहीं होता है।

निशम्य बन्धोर्वचनं स रावो
मस्तानि-निन्दा-वचनाहतोभूत्।
विरम्य तूष्णीं च नियम्य मन्युम्
उवाच बन्धुं कटुभाषिणं सः।।१२८।।

(संस्कृतटीका)

बन्धोः चिमाजेः। मस्तान्याः निन्दा अपवादः, तस्याः निन्दायाः वचनं उक्तिः, तेन आहतः प्रताडितोऽभूत्। बाजीरावः तूष्णीं मौनं धृत्वा मन्युं क्रोधम्। मस्तानी-विषये श्रुत-निन्दया इति भावः। सः रावः कटुभाषिणं अप्रियभाषिणं बन्धुं चिमाजिम्।

(हिन्दी)

चिमाजी के कथन में मस्तानी के लिए उसने जो निन्दा वचन कहे थे, उस से बाजीराव व्यथित हुए। कुछ क्षण के लिए वे स्तब्ध हो गए और फिर अपने क्रोध को उन्होंने नियन्त्रित किया। बाजीराव ने उस कटुभाषी भाई से कहा -

'सम्माननीया तव बन्धुजाया
तस्या विवाहोऽपि मयेति सत्यम्।
उदेति सूर्यो नितरां प्रभाते
करण्डकाच्छादितकुक्कुटेऽपि।।१२६।।

(संस्कृतटीका)

बाजीरावः स्वबन्धुं वदति - सम्माननीया आदरणीया। बन्धोः मम जाया भाभीति भाषायाम्। विवाहः, मया सा परिणीतेति। दृष्टान्तमुखेन कथयति - करण्डके पिटके आच्छादिते पिहिते कुक्कुटे। प्रभाते कुक्कुटो रौतीत्यर्थः। तदापि नितरां अवश्यरूपेण। सूर्योदयो मा भवेदित्यर्थं करण्डकेन कुक्कुटमाच्छादयति काचिद् वृद्धेति वाक्प्रचारः। दृष्टान्तः।

(हिन्दी)

'देखो, मस्तानी तुम्हारी भाभी है, उस का आदर तुम्हें करना चाहिये। (व्यर्थ के अपवाद में मत पड़ना), वह मेरी विवाहिता पत्नी है। सत्य तो सत्य ही होता है। किसी बुढ़िया ने अपने मुर्गे को सूर्योदय न हो इसलिए टोकनी से ढाक दिया, फिर भी सूर्योदय प्रातः समय पर हो गया। (मराठी में एक कहावत)।

का नागिणी? कश्च मणिस्तु तस्याः?
मणिर्हरेश्च प्रियकौस्तुभः सः।
किं कन्दरा सा जननी न नद्याः?
लोकास्तु मज्जन्ति न नगात् पतन्ति।।१३०।।

(संस्कृतटीका)

नागिणी-मणि-विषये भयं दर्शयसि, किन्तु का नागिणी सा? कश्च तस्या मणिः शीर्षरत्नं वा? न दृश्यते सा। हरेः श्रीकृष्णस्य दिव्यः देदीप्यमांनः कौस्तुभ इति नामधेयो दर्शनयोग्य इति भावः। कन्दरायां पतनं शंकसे, किन्तु सा कन्दरा। लोकमातुः नद्यः जननी माता, यतः जलस्त्रोतस्तंस्यामुद्गच्छति। जनाः मज्जन्ति स्नानं कुर्वन्ति, न नगात् पर्वतात् पतन्ति। दृष्टान्तः।

(हिन्दी)

ऐसी कोई नागिन भी है जिसकी फणापर मणि किसीने देखा हो? हमें तो ज्ञात है वह कौस्तुभ नाम का दिव्य मणि जो भगवान् श्रीकृष्ण ने धारण किया था। और घाटी में गिरने की बात करते हो? उस घाटी में जल का उद्गम होता है और वहाँ से नदी निकलती है जो लोकमाता है, घाटी उसकी माता है। उस में लोग स्नान करते हैं। पर्वत से घाटी में छलाँग नहीं लगाते।

श्रुतः प्रयोगो विषकन्यकाया
राज्ञो वधार्थं क्रियते तथेति।
मस्तानिरूपामृतदायिनीयम्
विषं गदघ्नं यदि पीयुषं तत्।।१३१।।

(संस्कृतटीका)

रावः विषकन्या-प्रयोगविषये कथयति - शत्रवः राज्ञः नृपस्य वधाय विषकन्यायाः प्रयोगम् गुप्तप्रकारेण कुर्वन्ति। किन्तु मस्तानीरूपम् अमृतमेव। यदि गदं रोगं नाशयति तर्हि तद् विषं न विषं, अपि तु पीयूषमेव तत्। दृष्टान्तः।

(हिन्दी)

तुम मस्तानी को विषकन्या न कहो। राजा को मारने के लिए शत्रु विषकन्या का प्रयोग करते हैं यह मैंने सुना है, किन्तु मस्तानी के रूप में अमृत देनेवाली कन्या प्राप्त हुई है। यदि रोग को नष्ट करने में विष सक्षम है तो वह विष नहीं अपितु अमृत है।

न केवलं स्त्री, नवचन्द्रिका सा
न हास्यमस्यास्तु रतेश्च लास्यम्।
स्वरो न तस्याः कलकूजितं तद्
दृष्टिर्न तस्या अमृतस्य वृष्टिः।।१३२।।

(संस्कृतटीका)

मस्तानी-विषये रावः - सा मस्तानी। नवा चासौ चन्द्रिका च नवकौमुदी। अस्या मस्तान्या रतेः कामदेवस्य पत्न्याः लास्यम् विभ्रमः। कलं कर्णमधुरं कूजितं पक्षिरवः। दृष्टिः अवलोकनम् वृष्टिः वर्षा। अपह्नुतिः।

(हिन्दी)

'मस्तानी के विषय में क्या कहा जाय। वह केवल एक स्त्री नहीं, अपितु (आकाश में उदित) नई चाँदनी है। उस की हँसी हँसी नहीं, अपितु रति देवी का विलास है। उस का स्वर स्वर नहीं, अपितु मधुर कूजन है। उसकी दृष्टि भी दृष्टि नहीं, अपितु अमृत की वृष्टि है।

न लाभ-लोभार्जित-वासमत्र
करोति नूनं तु मदर्थमेव।
न बान्धवानामहितं करोति
द्वेषो न तस्यास्तु ममैव मन्ये।।१३३।।

(संस्कृतटीका)

स्वार्थस्य लोभः तस्मै अर्जितो वासः स्वार्थवशात् न तस्या अत्र पुण्यपुर्याम्। न तया स्वीकृतम् वास्तव्यम्। बान्धवानां स्वजनानाम्। न तस्यै अपि तु मह्यमेव ते द्विषन्तीत्यर्थः।

(हिन्दी)

यहाँ वह स्वार्थ के लिए नहीं, अपितु मेरे लिए रह रही है। हमारे सगे-संबंधियों का वह अहित नहीं करती है। आप लोग उसका नहीं, अपितु मेरा द्वेष करते हैं। (वह राजकन्या है, मेरे ही लिए यहाँ रह रही है)।

न स्वार्थयोगादिह संस्थिता सा
न्यासो मदर्थं सुखपालनाय।
ममाङ्गणे सा तुलसीव मान्या
कृष्णार्पिता सापि ममौषधिश्च।।१३४।।

(संस्कृतटीका)

स्वार्थस्य लाभस्य प्राप्तेः लोभः स्वार्थपरायणत्वम्। इह शनिवारवाडा इति भवने। न्यासः रक्षणीयोऽर्थः जनकेन छत्रसालेन मदर्थं बाजीरावांय। सुखपूर्वकं पालनाय परिरक्षणाय। प्रदत्त इत्यर्थः। स तु मया परिरक्षणीय एवेति भावः। मम बाजीरावस्य अङ्गणे गृहे सा मस्तानी तुलसी-रूपास्ति। तुलसी यथा कृष्णस्य प्रिया अपि च मम बाजीरावस्य कृते औषधिरूपेण मस्तानी वर्तत इत्यर्थः। उपमा।

(हिन्दी)

चिमाजी, स्वार्थ के कारण मस्तानी यहाँ पुणे में नहीं रहती है। उसके पिताश्री ने सुखपूर्वक पालन करने हेतु दी हुई वह धरोहर है। कन्या ऐसी धरोहर होती है जो वापस लौटाई नहीं जाती है। मेरे आंगन की तुलसी है मस्तानी। कृष्ण की भक्त और मेरे लिए औषधि के समान प्रेरक और शक्तिवर्धक है।

न नर्तकी सा न च रक्षितापि।
सा राजकन्या यवनी-सुकन्या।
श्रीछत्रसालो जनकोऽस्ति तस्याः
सम्मानयोग्या स्वजनैरिहापि।।१३५।।

(संस्कृतटीका)

नर्तकी नृत्याङ्गना। रक्षिता भोगदासी। यवन्या मुस्लिम-राज्ञी, तस्याः सुकन्या दुहिता। राज्ञः कन्या राजपुत्री। स्वजनैः आप्तबान्धवैः कुलजैः। इह पुण्यपत्तनेऽपि। सुचरित्ररूपा मस्तानी गृहे चाप्तैः सम्मानं प्राप्नोतु। न तस्या द्वेषः कर्तव्य इत्यर्थः।

(हिन्दी)

मस्तानी न तो कोई नृत्यांगना है और न ही रखेल। वास्तव में एक मुस्लिम रानी से जन्मी राजा छत्रसाल की वह राजकन्या है। मैं चाहता हूँ, हमारे रिश्तेदार और घर के लोग उसके साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार करें। (उसका द्वेष न करें)।

किमर्थमस्या विषये विवादः?

सा त्वेकनिष्ठा मयि राजकन्या।

बुन्देलराजः शिवराजमित्रम्

स्वराज्यशत्रुः परचक्रमेव।।१३६।।

(संस्कृतटीका)

अस्याः मस्तान्याः। मयि रावे एकनिष्ठा पतिव्रता। बुन्देलराजः बुन्देलखण्डस्य नृपतिः स्वराज्यस्य छत्रपतिना स्थापितस्य मित्रम्। स्वराज्यस्य शत्रुः परचक्रमेव परदेशादागता आक्रमणकारिण एव सन्ति।

(हिन्दी)

आप लोग मस्तानी के विषय में क्यों व्यर्थ का विवाद खड़ा कर रहे हैं? मेरे प्रति उस का प्रेम अनन्यसाधारण है और वह एक राजकन्या है। बुन्देलखण्ड के वे राजा छत्रसाल छत्रपति शिवाजी के मित्र रहे हैं। वास्तव में स्वराज्य के शत्रु तो बाहर से आये हुए आक्रमणकारी लोग हैं।

किं लौकिकं बन्धनमेव सत्यम्?
क्व पेशवाहं यवनी क्व चेऽयम्?।
तस्यास्तु जन्मापि मदर्थमेव
नटोऽस्मि, देवः स च सूत्रधारः।।१३७।।

(संस्कृतटीका)

लौकिकं बन्धनं विवाहादिसंबंध एव सत्यम्। परमार्थतः अलौकिकं बन्धनमपि सत्यम्। कयोश्चित् संयोगः अलौकिकोऽपि भवतीत्यर्थः। तथावयोः सः। क्व पेशवा राज्यस्य प्रधानः सचिवः। यवनी मस्तानी सापि बुन्देलखण्डस्थिता क्व? कथमावयोः संगमः? तस्या मस्तान्याः। मदर्थमेव बाजीरावस्य कृते एव। नटोऽस्मि नटवत् चरित्रमभिनयं करोमि। देव ईश्वरः एव सूत्रधारः। यथा नाटके सूत्रधारस्य निर्देशमनुसृत्य नटादिभिर्वृत्तमभिनीयते तथैव मया सह मस्तान्याः संयोगोऽपि ईश्वरनियोजितः अलौकिक एव। देव एवावयोर्विवाहस्य निर्देशक इत्यर्थः।

(हिन्दी)

क्या विवाह आदि सम्बन्ध केवल लौकिक होते हैं? अलौकिक नहीं होते? वैसे देखा जाय तो, कहाँ मैं यहाँ पेशवा हूँ और कहाँ बुंदेलखण्ड की एक यवनी? किन्तु मस्तानी का जन्म ही मेरे लिए हुआ था। मैं तो जीवन के इस नाटक में एक नट हूँ और ईश्वर इस नाटक का सूत्रधार है। हम दोनों का सम्बन्ध अलौकिक है।

तद् भौतिकं प्रेम महत्वपूर्णम्

देहं विना किं परमात्मभक्तिः?।

सौन्दर्यमग्रे सगुणत्वमाप

तत्सन्निधिः सन्निधिरात्मनो मे।।१३८।।

(संस्कृतटीका)

भौतिकं ऐहिकं शारीरिकमिति यावत्। परमात्मनः ईश्वरस्य भक्तिः समर्पणम्। अग्रे मिलनानन्तरं सगुणत्वं साकाररूपा भक्तिः तद्रूपम्। तस्याः सन्निधिः सत्सङ्गः मे बाजीरावस्य आत्मनः स्वस्यात्मनो न तु केवलं देहस्य सन्निधिः कल्याणप्रदो निधिः धनं सर्वस्वम्। रूपकम्।

(हिन्दी)

(हमारा) वह भौतिक प्रेम भी महत्वपूर्ण है। भला, कन्या शरीर के विना ईश्वर की (सगुण) भक्ति सम्भव है? देखो, मस्तानी का सौन्दर्य आगे चलकर (भक्ति के) सगुण रूप को धारण कर गया है। अब तो उस का साथ मेरी आत्मा की धरोहर बन गया है जो मेरे लिए सुकून देता है।

भीमो हिडिम्बाम् परणीय पत्नीम्
अभून्न सः किं ननु पाण्डुपुत्रः?।
किमर्जुनस्याप्युलुपेर्विवाह
आचार्यभीष्मादिसमक्षमेव? ।।१३६।।

(संस्कृतटीका)

भीमो मध्यम-पाण्डवः। हिडिम्बां महाभारतोक्तकथानुसारं भीमेन हिडिम्बा नाम्नी कन्या परिणीता। पाण्डोः राज्ञः पुत्रः। महाभारतस्यनुसारं अर्जुनेन 'उलुपी' नाम्नी पूर्वदेशीया कन्यां विवाहिता इति। आचार्याः पितामहाः भीष्मास्तथान्येऽपि तयोर्विवाहम्। पुराकालेप्येतादृशा विवाहाः शिष्टसम्मता इति भावः। अप्रस्तुतप्रशंसा।

(हिन्दी)

भीम ने हिडिम्बा से विवाह किया था। क्या वह पाण्डु राजा का पुत्र नहीं था? उधर अर्जुन ने पूर्व देश की उलुपी नामक कन्या से विवाह रचा था और आचार्य पितामह भीष्म आदि वरिष्ठ लोगों ने उसे देखा। अर्थात् हम दोनों के विवाह के विषय में ही क्यों विवाद खड़ा किया जा रहा है?

किं सैनिकोऽहं वनितापहर्ता?

किं निन्दनीया यवनीति सात्र?।

युद्धे जयं मे तु जनाः स्तुवन्ति

निन्दन्ति केचिन्मम चेतनां ताम्।।१४०।।

(संस्कृतटीका)

रावः पृच्छति, अहं सैनिकः वनितानां स्त्रीणाम् अपहर्तास्मि बलात् पलायिता कापि स्त्री किम्? यवनी कन्या, अतः। जनाः लोकाः स्तुवन्ति। किन्तु मे जयार्थं कारणीभूतां चेतनां प्रेरणामेव निन्दन्ति।

(हिन्दी)

राव आगे पूछते हैं -

'क्या, मैं ऐसा सैनिक हूँ जिसने किसी अबला का अपहरण किया हो? क्या, उसकी माता एक यवनी है इसलिए वह निन्दा के योग्य है? (वह तो एक राजकन्या है।) लोग मेरी प्रशंसा करते हैं, क्यों कि मुझे युद्ध में विजय प्राप्त होती है, किन्तु कुछ ऐसे भी लोग हैं जो (मेरे विजय के लिए कारणीभूत) चेतना की ही निन्दा करते हैं।

न छूरिका सा, तु कृपाणिका मे।
शत्रोर्वधार्थं मम हस्तलग्ना।
सा नेच्छति स्वीयजनाभिहन्तुं
रणेऽपि मां प्रेरयतीव मन्ये।।१४१।।

(संस्कृतटीका)

सा मस्तानी। कृपाणिका – खड्गम्। न क्षुद्रा छुरिकेति भावः। मम बाजीरावस्य हस्ते लग्ना। दैवादित्यर्थः। स्वीयजनाः बान्धवाः, तेषाम् अभिहन्तुं मारणार्थम् प्रवृत्ता। प्रेरयति प्रोत्साहनदात्री। रूपकम्। खड्गधारेव रणोपकारिणी सेति भावः।

(हिन्दी)

भाई चिमाजी, तुम मस्तानी को छूरी कहते हो, वास्तव में मस्तानी छुरी नहीं है, वह है मेरी तलवार। (सौभाग्य से) शत्रुओं को मारने के लिए वह मेरे हाथ लगी है। मगर मेरे सगे-संबंधियों के लिए वह घातक नहीं है। मैं तो मानता हूँ कि, युद्धभूमि पर भी मुझे वह प्रेरणा देती है।

तस्याश्च गङ्गाजलवत् पवित्रं
शुद्धं चरित्रं जन-संस्तुतं च।
श्रीकृष्ण-पूजां कुरुते च नित्यम्
सा योगपत्नी तु पतिव्रतैव।।१४२।।

(संस्कृतटीका)

गङ्गायाः भागीरथ्याः जलं तोयं, तद्वत्। पवित्रं पूतं। स्वच्छं निर्मलम्। जनैः लोकैः संस्तुतं प्रशंसयानुमोदितम्। योगेन सौभाग्येन पत्नी। पतिव्रतैव - निश्चितरूपेण पत्युः श्रीबाजिरावस्य एकनिष्ठा। अतः पवित्रोऽनया मे सम्बन्ध इत्यर्थः।

(हिन्दी)

भाई, उसका चरित्र गंगा के जल के समान पवित्र और निर्मल है। जनता भी उसकी प्रशंसा करती है। वह नित्य श्रीकृष्ण भगवान् की पूजा करती है। संयोग से वह मेरी पत्नी है और है पतिव्रता भी।

भाग्यं विधाता विदधाति नूनम्
अज्ञातयोगादुपकारकः सः।
तीक्ष्णा हि धारा नवखड्गशोभा
ममाथ सा मूर्तिमती जयश्रीः।।१४३।।

(संस्कृतटीका)

विदधाति - निर्धारयति, करोति वा। अज्ञातं न तर्कितं नापेक्षितं वा रूपं स्वरूपं यस्य सः योगः तस्मात्। सः विधाता। उपकारकः इष्टलाभप्रदः तीक्ष्णा तीव्राघातक्षमा, धारा असिधारा खड्गस्य असि-शस्त्रस्य शोभा - कान्तिर्भवति, तथा तथैव सा। जयश्रीः विजयस्य लक्ष्मीः। रूपकम्। काव्यलिङ्गम् च।

(हिन्दी)

विधाता सचमुच भाग्य का विधान करता है। वह अनपेक्षित रूप में उपकारक होता है। जिस प्रकार तीक्ष्ण धार तलवार की शोभा होती है वैसी ही यह मस्तानी मेरी मूर्तिमती विजयलक्ष्मी है। (युद्ध में साक्षात् विजयश्री ही मुझे प्राप्त हो रही है)।

काशी प्रिया मे गृहधर्मपत्नी
मस्तानि-साकं सुखदा मदर्थम् ।
अन्यासु नारीषु न मे प्रसक्तिः
द्वयोर्भगिन्योः पतिरस्मि मान्यः ।।१४४।।

(संस्कृतटीका)

काशी काशीबाईति नाम्नी। गृहधर्मपत्नी गृहस्थ-पत्नी। मस्तान्या साकं सह। मदर्थम् मयि तस्याः प्रेम, मत्सुखार्थम्। प्रसक्तिः अनुरागो भोगे रुचिर्वा। भगिन्योः काशी-मस्तानी-द्वयस्य। मान्यः तयोः पत्न्योरहं मान्यः स्वीकृतः। तयोः सख्यं मे सौख्यमिति भावः। काव्यलिङ्गम्।

(हिन्दी)

काशी मेरी गृहस्थ धर्म की प्रिय पत्नी है और मेरे सुख को ध्यान में रखकर ही काशी का मस्तानी के साथ व्यवहार सुखद है। अन्य महिलाओं में मेरी कोई रुचि नहीं होती है। दोनों बहनें जैसी रहतीं हैं और मैं उनका पति हूँ जो मान्य हूँ।

क्रुद्धापि वृद्धा जननी तु सेव्या
पत्नी च काशी भगिनी प्रियायाः।
निन्दन्तु ते कापुरुषा प्रियां मे
न काकशापात् तु मृगा म्रियन्ते।।१४५।।

(संस्कृतटीका)

जननी माता, राधाबाईति नाम्नी। क्रुद्धा मस्तानीकारणात् रुष्टा। ज्येष्ठा प्रथमा-पत्नी। भगिनी स्वसा प्रियायाः मस्तान्याः। निन्दन्तु
कापुरुषा कुत्सिताः पुरुषा बान्धवाः। प्रियां मस्तानीम्। काकस्य वायसस्य शापात् मृगाः हरिणः पशवो वा। अर्थान्तरन्यासः।

(हिन्दी)

मेरी माताजी वृद्ध हैं, वह नाराज भी होगी तो भी-उसकी सेवा करनी चाहिये। और मेरी बड़ी पत्नी (मस्तानी की जेठानी) काशी मस्तानी की बहन जैसी है। क्षुद्र लोग यहाँ मस्तानी की निन्दा करते हैं। किन्तु कौओं के शाप से पशु मरते नहीं। {यहाँ मराठी में एक कहावत है '*कावळयाच्या शापाने गुरे (पशु) मरत नसतात*'}

आत्मा शरीरं च सुखान्वितौ मे
सा ब्रह्मशक्तिः सुखदास्ति माया।
श्रुतं मया, तां प्रकृतिं विनैव
तत् पौरुषं किं पुरुषस्य सत्यम्?।।१४६।।

(संस्कृतटीका)

तत्त्वज्ञानमाश्रित्य रावो वदति – 'मम आत्मा देहश्च – उभयमपि। माया सदसद्रूपेणावर्णनीया अविद्या सुखदा मह्यं सुखमेव ददातीत्यर्थः। श्रुतं विद्वद्भ्यः मया श्रुतम्–। सांख्ये प्रतिपादितस्य पुरुषस्य चैतन्यस्य। प्रकृतिं प्रधानं सत्वरजस्तमसां साम्यावस्था प्रकृतिः। पुरूषस्य भावः पौरूषमस्तित्वरूपं तत्वम्। सांख्ये पुरूषोऽपि प्रकृति-निर्मित-विश्वं पश्यतीत्यर्थः। मम पराक्रमोऽपि यद्यपि स्वतन्त्रः, तथापि मस्तानीं विना न सः सार्थक इति ज्ञेयम्। अप्रस्तुत-प्रशंसा।

(हिन्दी)

मेरी चिन्ता न करो। मेरे आत्मा और शरीर दोनों का कुशल है। वह एकमेव ब्रह्म की शक्ति माया भी मुझे सुख देती है। मैने विद्वानों से सुना है, उस के अनुसार क्या, सांख्य में जो प्रकृति है, उस के बिना पुरुष (चैतन्य) का कोई पौरूष होता है? अर्थात्, अध्यात्म के अनुसार भी मेरी प्रेरकशक्ति मस्तानी है, उस के बिना मेरा पराक्रम सार्थक नहीं है।

प्रीतिर्वियोगेऽप्यनुवर्तते सा
प्रेमानुबन्धो जननान्तरेऽपि।
मुक्ता रतेर्येऽपि रतेर्न मुक्तास्
ते योगिनोऽप्यात्मरता भवन्ति।।१४७।।

(संस्कृतटीका)

सामान्येन प्रीतिमहत्वं दर्शयति -प्रीतिरिति। सा विशिष्टा। जननान्तरे - अन्यजन्मनि। लौकिकीं प्रीतिं विहाय विशिष्टां रतिं न मुंचन्ति ते। आत्मनि ब्रह्मणि ब्रह्मविदः। रतेः प्रेम्णः सकाशान् मुक्ता वियुक्ता अपि ते रतेः प्रेम्णः सकाशान्न मुक्ताः। मोक्षं प्राप्यापि न मुक्ता इति विरोधाभासः। ते योगिनः मुक्ता अपि रतिं न मुंचन्ति। ते आत्मनि ब्रह्मणि रता एव। अर्थान्तरन्यासः।

(हिन्दी)

प्रीति वियोग होने पर भी दूसरे जन्म में (प्रिय का) अनुसरण करती है। रति को छोड़ने वाले मुक्त योगी भी रति से छुटकारा कहाँ पाते हैं? रति से विरक्त भी रति से मुक्त नहीं होते। वे योगी भी 'आत्मरत' होते हैं। मस्तानी का प्रेम भी अमर है। (सूफी मत में भी यह प्रेमयोग आध्यात्मिक होता है)।

शिवाजिराजेन कृतं स्वराज्यं
तस्यैव वृद्ध्यर्थमयं प्रयासः।
शौर्येण तामुत्तरभारताशां
प्रवेष्टुकामोऽरि-विनाश-हेतोः ॥१४८॥

(संस्कृतटीका)

आशां - दिशाम्। अरीणां - स्वराज्यस्य शत्रूणां विनाशार्थम्। उत्तरभारते प्रवेष्टुमिच्छामि। तत्र मस्तानी-संबंध उपकारकः इति ध्वनिः।

(हिन्दी)

छत्रपति शिवाजी महाराज ने स्वराज्य-स्थापना की। उसे आगे, बढ़ाने के लिए यह प्रयास है। शत्रु के विनाश के लिए मैं शौर्य के साथ उत्तर भारत में प्रवेश करना चाहता हूँ। (अर्थात् इस कार्य में मस्तानी द्वारा छत्रसाल से जोड़ा गया संबंध उपकारक है)।

स्वार्थेन्धनप्रज्वलिताग्निनैव
रणे विदग्धोऽपि गृहे तु दग्धः।
राज्यं नवं देशहिताय कुर्याम्
क्षुद्रा न रक्षन्ति कदापि देशम्।।१४६।।

(संस्कृतटीका)

स्वार्थ एव इन्धनं काष्ठादिसाधनं, तेन प्रज्वलितः प्रेरितः स्वार्थेन्धनप्रज्वलितः अग्निः वह्निः, तेन। रणे विदग्धः प्रवीणः वीरः गृहे तु स्वराज्ये गृहे तु दग्धः ज्वालाहतो भवति। गृहे कलहः वीरमपि हतोत्साहं करोतीत्यर्थः। नवं - पुण्यपुरी-शासनादन्यत्। देशस्य हिताय कल्याणार्थम्। क्षुद्राः कार्पण्यादिदोषापहता जनाः। अनुप्रासः रूपकमर्थान्तरन्यासश्च।

(हिन्दी)

स्वार्थ के इन्धन से ज्यादा भड़कनेवाली आग के कारण कोई वीर रण में प्रवीण होने पर भी घर के ;कलह की आग से झुलस जाता है। देश के हित के लिए मैं नये राज्य की भी स्थापना कर सकता हूँ (मेरा लक्ष्य व्यापक है)। क्षुद्र लोग अपने देश की रक्षा नहीं करते। (ये लोग मेरे देशहित के महान् कार्य को नहीं जानते इसका मुझे दुःख है)।

नारी हि शक्तिर्निजधर्मरक्षां
करोतु राष्ट्रे नवचेतनां च।
शक्तिं विना वीरवरो नरोऽपि
शक्नोति किं राष्ट्रहिताय कार्यम्? ।।१५०।।

(संस्कृतटीका)

नारी - स्त्री। शक्तिः समर्था। निजश्चासौ धर्मश्च, तस्य रक्षा रक्षणम्। राष्ट्रे-भारते। नवं चैतन्यं - नवोत्साहमयं शक्तिशालि कार्यम्। वरोऽपि श्रेष्ठोऽपि वीरः शूरः। राष्ट्रे नारीं विना चैतन्यं निर्मातुं प्रथयति किम्? काव्यलिङ्गम्।

(हिन्दी)

नारी एक शक्ति है। वह अपने धर्म की रक्षा करें तथा भारत में नया. चैतन्य निर्माण करें। कोई बड़ा वीर व्यक्ति भी शक्ति के बिना राष्ट्रहित का कार्य कैसे कर सकता है?

सातारपुर्यां नृपतिश्च शाहुः

प्रेमावयोः किं न समर्थकोऽस्ति?।

किं भ्रातृजाया गृहबन्दिनीव?

गृहे गृहिण्या अपमान एव।।१५१।।

(संस्कृतटीका)

सातारा-नगरी छत्रपतेः शाहुराजस्य राजधानी प्रसिद्धा। आवयोः राव-मस्तान्योः। भ्रातुः रावस्य जाया पत्नी। गृहे बन्दिनीव क्कारायां पातिता। गृहे हवेलीति नाम्नि मस्तानी-महालये गृहिणी गृहस्वामिनी। अपमानो मानखण्डना।

(हिन्दी)

सातारा के नरेश शाहूराजा ने भी हम दोनों के प्रेम को मान लिया है। भाभी को घर में कैद जैसा क्यूँ रखा है? इस घर की बहू होकर भी? यह अपमान है। (और मेरा भी।)

टिप्पणी - चिमाजी ने छत्रपति शाहू महाराज से मस्तानी-राव के सम्बन्ध में शिकायत की थी। किन्तु राजा ने राव को इस सम्बन्ध में राव स्वतंत्र रूप से जो चाहते हैं उसे करने हेतु आदेश दिया। आपत्ति नहीं की।

प्रत्यर्पणीया न, विवाहिता सा

पित्रा प्रदत्ता वचनैर्गृहीता।

प्रिया सुखायैव कुलद्वयस्य

कन्या हि विश्वासधनं वराय'।।१५२।।

(संस्कृतटीका)

सा मस्तानी विवाहिता परिणीता मया। न प्रत्यर्पणीया जनकाय छत्रसालाय न पुनर्देया। वचनैः प्रतिज्ञा-वचनैः गृहीता पत्नीरूपेण स्वीकृता। प्रिया पत्नी मस्तानी कुल-द्वयस्य छत्रसाल-पेशवाकुलयोः। कन्यादाने पितुः कन्या वराय पत्युः कृते धनम् विश्वासस्य। महता विश्वासेन पिता वराय कन्या ददातीत्यर्थः।

(हिन्दी)

मस्तानी से मेरा विवाह हुआ है, उसे वापस लौटाया नहीं जा सकता। पिता छत्रसाल ने उसे दिया और मैंने वचन देकर उसका स्वीकार किया है। प्रिय पत्नी, पिता और पति दोनों कुलों को सुख देती है। वर के लिए कन्या विश्वास का धन होती है जो उसका पिता वर को सौंपता है।'

उवाच सोऽन्ते नयने निमील्य -
'न केवलं रूप-गुणात् प्रिया सा।
मदर्थमेवास्ति तदीय-जन्म
प्रेमावयोर्देवकृतानुबन्धः' ।।१५३।।

(संस्कृतटीका)
अन्ते - सम्वादस्य अन्ते। नयने - नेत्रे। नेत्र-निमीलनाद् हृदय-गतं भावं स्मरति। रूप-गुणात् सौन्दर्य-गुणवशात्। तदीयं मस्तान्या जन्म। आवयोः - मम मस्तान्याश्च प्रेम-प्रीतिः। देवेन - ईश्वरेण कृतः विहितः अनुबन्धः पूर्वसम्बन्धः। ईश्वरप्रदत्ता मस्तानी, अत एव सा प्रियेत्यर्थः।

(हिन्दी)
श्रीबाजीराव ने अन्त में अपनी आँखें बंद कर ली और कहा -

'मस्तानी के केवल सौन्दर्य के कारण ही वह मुझे प्रिय नहीं है। मेरे लिए ही उसका जन्म हुआ है। हम दोनों का प्रेम भगवान् की देन है। (आप लोग इसे समझ नहीं पाएंगे।)।'

प्रियां चिमाजिं च ततो गृहीत्वा
गतः स जेतुं युधि दक्षिणाशाम्।
प्रिया स्वबन्धुश्च सहायकौ तौ
गृहे कुबन्धुः समरे सुशूरः।।१५४।।

(संस्कृतटीका)

ततः चिमाजिना कृतस्य सम्भाषणस्य पश्चात्। प्रियां मस्तानीम्। दक्षिणाप्रान्तम्। सः रावः। तत्र प्रिया स्वबन्धुश्चिमाजिश्च। समरे युद्धे सहायकौ, प्रिया प्रेरणाशक्तिरूपेण तथा बन्धुर्वीररूपेण। गृहे शनिवारवाडाभवने कुत्सितः बन्धुः भ्राता चिमाजिः रणे युद्धे सुशूरः सुवीरः।

(हिन्दी)

चिमाजी से सम्भाषण करने के उपरान्त राव मस्तानी और चिमाजी को लेकर दक्षिण दिशा में स्थित प्रान्तों को जीतने के लिए निकल पड़े। मस्तानी और चिमाजी युद्ध में दोनों उनके सहायक रहे। घर में बुरा सोचनेवाले भाई चिमाजी युद्ध में अच्छे शूर(सहायक) थे।

मस्तानि-साकं प्रियवल्लभोऽयम्
भयानकः शत्रुकृतेऽपि वीरः।
संरक्षको दीनकृते कृतज्ञ
एकोऽपि दृष्टो बहुरूपवान् सः।।१५५।।

(संस्कृतटीका)

एकस्यास्य रावस्यानेकरूपत्वं वर्णयति कविः- प्रियश्चासौ वल्लभश्च कान्त इति। भयानकः प्रचण्डः। दीनानां पामराणां कृते संरक्षकः। सः रावः एकोऽपि बहुषु अनेकेषु रूपेषु दृष्टः लोकैरित्यर्थः। उल्लेखलङ्कारः।

(हिन्दी)

एकही राव को लोगोंने अनेक रूपों में देखा : मस्तानी के साथ वह प्रिय पति थे, शत्रुओं के लिए भयंकर थे तथा दीन-दुःखी लोगों के वह संरक्षक और कृतज्ञ थे।

तदैकदान्यत्र विजेतुरस्य
रावस्य मित्रत्वकृते निजामः।
रावं तदा प्रार्थितवान् सखेव
शत्रुः सुहृद् वा समयानुसारम्।।१५६।।

(संस्कृतटीका)

एकदा अन्यस्थानात् प्रत्यागते विजयिनि रावे मार्गे निजामस्य निवेदनम् - युद्धेषु विजेतुः जयं अस्य रावस्य मित्रत्वस्य सख्यभावस्य लाभः, तस्य कृते। तं रावम्। पुरीं राजधानीम्। शत्रुः मित्रं वा समयं प्रसंगमनुसृत्य स्वीक्रियते लोके राजभिश्च। अर्थान्तरन्यासः।

(हिन्दी)

एक समय की बात है -

किसी युद्ध से लौटते समय मार्ग में राव आ रहे थे, उन्हें सभी युद्धों में विजयी देखकर निजाम ने उन से मित्र बनकर प्रार्थना की कि वे उस की राजधानी में पधारकर आतिथ्य ग्रहण करें। शत्रु क्या और मित्र क्या? ये तो समय के अनुसार होते हैं।

एकाकिनो वीरवरस्य देशे
मित्रत्वमाप्तुं विनतो निजामः।
तस्याध्वनि प्राप्य निमन्त्रणं च
रावो निजामस्य पुरीं जगाम।।१५७।।

(संस्कृतटीका)

देशे भारते राव एकाकी वीर इति विचार्य। निजामो मित्रत्वं सख्यम्। विनतः प्रार्थितवान्। तस्य निजामस्य अध्वनि अन्यात्स्थानादागते रावे मार्गे। निमन्त्रणम् आतिथ्य-ग्रहणार्थम्।

(हिन्दी)

भारत में एकमात्र श्रेष्ठ वीर के रूप में राव को देखकर निजाम ने विनम्र हो कर उस की राजधानी में पधारने हेतु प्रार्थना की। अन्य स्थान से लौटते समय मार्ग में राव को निजाम का निमन्त्रण प्राप्त हुआ। तब वे निजाम की राजधानी पहुँचे।

स्ववाजिराजोपरि बाजिरावो
स निर्भयोऽपि प्रभयंकराऽपि।
सरत्नमुष्णीषमसौ दधानः
स मूर्तिमानर्जुन एव दृष्टः।।१५८।।

(संस्कृतटीका)

रावं वर्णयति स इति। वाजिनः राजा, तस्मिन्नारूढः। भयरहितोऽपि भयंकर इति विरोधः। रत्नैः सह उष्णीषं शिरोधारितम् भूषणम् दधानः। मूर्तिमान् अर्जुनः साक्षात्। विरोधः रूपकञ्च।

(हिन्दी)

अपने श्रेष्ठ घोड़े पर सवार वह बाजीराव भय रहित थे, फिर भी भय देनेवाले थे। रत्नों से जड़ित पगड़ी धारण करनेवाले वे साक्षात् अर्जुन के समान दिखाई दिए।

काचित् सुकन्या तमनङ्गमेव
मेने पुनश्चाङ्गयुतं च रावम्।
अन्या तु मेने पुरमागतं तम्
अश्वेऽश्विनीयं सुकुमारमेव।।१५६।।

(संस्कृतटीका)

निजामस्य राजधान्यां पथसंचलने अश्वाधिरूढं रावं विलोक्य अनङ्गम् कामदेवम्। पुनश्च शिवस्य तृतीयनेत्राग्निना भस्मीभूतस्य कामस्य अनन्तरं शरीराङ्गयुतं रूपम्। पुरं राजधानीं आगतम्। अश्विनीकुमारम्। अश्वे वाजिनः पृष्ठे। उत्प्रेक्षा रूपकं च।

(हिन्दी)

उस नगर में बाजीराव को चल-समारोह में देखकर किसी सुकन्या को लगा कि उस नगरी में पुनः शरीर से युक्त मदन आ गये हैं। और अन्य युवती ने माना कि, अश्व पर आरूढ होकर स्वयं अश्विनीकुमार आ गये हैं।

नवाङ्गनाभिः पुरुषोत्तमोऽयम्

दृष्टोऽप्यदृष्टः पुनरीक्षणाय।

राजस्त्रियस्ताः ददृशुः सुखेन

पटं मुखेभ्योऽप्यवार्य रावम्।।१६०।।

(संस्कृतटीका)

नवाङ्गनाः युवत्यः ताभिः पुरुषेषु उत्तमः श्रीकृष्ण एव। दृष्टः अवलोकितः, तथापि न दृष्ट इति विरोधः। पुनःपुनः द्रष्टुम्। राजस्त्रियः निजामस्य बेगमाः। मुखेभ्यः पटं आवरणम्। अपवार्य उत्सारयित्वा।

(हिन्दी)

उस श्रीकृष्ण जैसे पुरुषश्रेष्ठ बाजीराव को युवतियों ने देखा किन्तु नहीं देखा, क्योंकि पुनः उसे देखने की प्रबल इच्छा रह गई। निजाम की बेगमों ने अन्तःपुर से अपने मुखों से बुरक़ा उठाकर राव को देख लिया।

यासां मुखेभ्यो रविरश्मयोऽपि
तिरस्कृता आस्यतिरस्करिण्या।
पटं मुखेभ्यस्त्वपसार्य ताभि-
र्दृष्टः स, ताभिर्निजसत्क्रियास्य।।१६१।।

(संस्कृतटीका)

यासां नवाब-बेगमानाम्। रवेः सूर्यस्य रश्मयः किरणाः। आस्यानि मुखानि तेषां तिरस्करिणी पटाक्षेपः असूर्यंपश्या राजदारा इति भावः। तिरस्कृताः अपवार्य प्रवेशात् दूरीकृताः। रविस्तिरस्कृतः, तथापि न राव इति भावः। अस्य बेगमाभिः निजसत्क्रिया सम्मानः निभृतरूपेण कृतः रावस्य। दृष्टान्तरूपेणातिशयोक्तिः। व्यतिरेक - ध्वनिः।

(हिन्दी)

पथसंचलन देखनेवाली परदानसीन बेगमों ने रवि की किरणों को भी अंदर न जाने देने हेतु परदा अपने मुँह पर डाल रखा था, अपना परदा हटाकर राव को बखूबी देख लिया, वह उन की ओर से राव का निजी स्वागत सम्मान था।

विलोक्य त्रैलोक्यनरोत्तमं तम्
निजामपत्न्यो ददृशुः सहर्षम्।
स्वान्तःपुरात् स्वागतमस्य चक्रुर्
अमूल्यमुक्ताफलवर्षणेन।।१६२।।

(संस्कृतटीका)

त्रैलोक्यस्य त्रिभुवनस्य नराः पुरूषाः तेषु उत्तमं श्रेष्ठम् अतीवसुन्दरम् तम् बाजिरावम्। निजामपत्न्यः बेगमाः। अस्य रावस्य स्वागतम्। अमूल्यानि अनर्घाणि मुक्ताफलानि मौक्तिकरत्नानि, तेषां वर्षणेन वृष्टिं विधाय चक्रुः।

(हिन्दी)

त्रिभुवन में पुरूषोत्काम उस राव को निजाम की बेगमों ने बड़े हर्ष के साथ देखा। अपने अन्तःपुर से ही उन्हों ने राव का स्वागत मूल्यवान् मोतियों की वर्षा से किया।

स्त्रियो स्वगेहात् पुरवासिनश्च
त्यक्त्वा स्वकार्यं ददृशुस्तमेकम्।
राजस्त्रियश्चापि हि निर्निमेषम्
विस्मृत्य सम्भाव्य-निजामरोषम्।।१६३।।

(संस्कृतटीका)

स्त्रियः स्वभवनात्। स्वकार्याणि स्व-स्वकार्यं विहाय। राज्ञः निजामस्य स्त्रियः बेगमाः। सम्भाव्यः निजामस्य रोषः क्रोधः तम्। रावस्य दर्शनेन बेगमानां विषये निजामः कोपं करिष्यतीति सम्भावनां विस्मृत्य।

(हिन्दी)

महिलाओं ने अपने घर से तथा नगरवासियों ने अपने सब काम छोड़कर (चल समारोह में जा रहे) बाजीराव को देखा। उधर निजाम नवाब की बेगमें भी अपने अन्तःपुर से उन्हें एकटक सी होकर देखने लगी तब निजाम का रोष हो सकता है इस आशंका को भी वे भूल गईं थीं।

कश्चिद् विपश्चिन्नयनाभिरामं
रामं समायान्तममुं च मेने।
अन्यश्च पौरः पुरुहूतमेनम्
वृत्रं विजित्यागतमेव मेने।।१६४।।

(संस्कृतटीका)

विपश्चित् पण्डितः। नयनयोः अभिरामं सुन्दरम्। इह निजामस्य राजधान्याम्। पौरः पुरवासीजनः। पुरुहूतम् इन्द्रम्। अमुम् रावम्। वृत्रम् असुरं जित्वा। रूपकम्।

(हिन्दी)

कोई विद्वान् बाजीराव के सुन्दर रूप को देखकर मान रहा था कि उस नगरी में स्वयं सुन्दर भगवान् राम ही पधार रहे हैं। अन्य एक नगरवासी को लगा कि, वृत्र असुर को मार कर इन्द्र ही इस नगरी में आ गये हैं।

अन्याश्च मुग्धा नवयौवनास्तु
दृष्ट्वातिमुग्धा पुरुषोत्तमं तम्।
दृष्टो जनैर्भूमि-पुरन्दरोऽयम्
कृष्णो यथा गोकुल-गोपिकाभिः।।१६५।।

(संस्कृतटीका)

अन्याः पूर्वोक्तस्त्रियः, ताभ्योऽन्याः मुग्धाः मधुराभाः। मुग्धत्वं सुन्दरत्वम्। नवं यौवनम्, तद्वत्यः। पुरुषोत्तमं श्रीकृष्णसमं रावम्। अतिमुग्धाः अतीव सौन्दर्यं प्रापुः। भूमिमागतः पुरन्दरः इन्द्रः। पुनः कृष्णो यथा गोकुले गोपिकाभिः दृष्टः तथा युवतीभिः स दृष्टः। उपमा।

(हिन्दी)

नये यौवन से सुन्दर दिखाई देनेवाली युवतियाँ राव जैसे पुरुषोत्तम को देखकर अधिक सुन्दर दिखाई देने लगीं। लोगों ने तो पृथ्वीपर प्रकट हुए इन्द्र को देखा। और स्त्रियों ने उन्हें गोकुल में गोपिकाओं द्वारा देखे गये श्रीकृष्ण के समान देखा।

निजाम - सख्यातिशयं विलोक्य
तत् स्वागतं सः प्रकृतं न मेने।
प्रीतिर्भयादेव तु राजनीत्याम्
विज्ञाय शत्रुं कृतमद्य सख्यम्।।१६६।।

(संस्कृतटीका)

निजामाविष्कृतं सम्मानं वीक्ष्य रावश्चिंतयति। मे रावस्य तत् अतिशयम्। नम्रः विनीतः। पूर्वमुद्धतोऽधुना तु विनीतः। राजनये या प्रीतिः सख्यं सा भयादेव। अत एव मनसि नवाबं शत्रुं विज्ञाय। अद्यास्मिन् आतिथ्यस्वीकृतिसमये।

(हिन्दी)

राव सोचने लगे -

'यहाँ के नवाब द्वारा किया हुआ वह अति स्वागत, मेरे प्रति दर्शाया गया सख्यभाव स्वाभाविक नहीं लगता। राजनीति में प्रेम भय से ही पैदा होता है। मैं ने भी शत्रु को मन में पहचान तो लिया है, किन्तु आज यहीं नवाब की मित्रता स्वीकार कर रहा हूँ।'

नवाब-राज्यस्य स राजधानीं
विहाय, पुण्यं च ततो जगाम।
विधाय निष्कण्टकदक्षिणाशाम्
स उत्तरस्यां दिशि गन्तुमैच्छत्।।१६७।।

(संस्कृतटीका)

नवाबस्य निजामस्य। पुण्यं पुण्यपुरीम्। दक्षिणां आशां दिशां, निष्कण्टकां शत्रुरहिताम् विधाय कृत्वा। भारतस्य उत्तरदिशि पराक्रमार्थम्।

(हिन्दी)

नवाब निजाम की राजधानी को छोड़कर बाजीराव वहाँ से पुणे गए। और इस प्रकार दक्षिण भारत को शत्रुओं से निर्विघ्न करने के बाद उन की उत्तर भारत में पराक्रम के लिए जाने की इच्छा हुई।

।। इति श्री - 'बाजीराव-मस्तानीयम्' इति
संस्कृत-काव्ये डॉ. प्रभाकर नारायण कवठेकर -
द्वारा विरचिते पूर्वरागः प्रथमो भागः।।

अपूर्वरागः

।। श्रीः ।।

बाजीराव-मस्तानीयम्

अ पू र्व रा गः

अथैकदा प्रोषितभर्तृकाया
मस्तानि-देव्याः सुमहालयेऽत्र।
श्रीबाजिरावस्य कनिष्ठबन्धुः
चिमाजि अप्पेति समागतोऽभूत् ।।१६८।।

(संस्कृतटीका): बाजीराव-मस्तानीयमिति नामधेयस्य संस्कृतकाव्यस्य द्वितीयोऽन्तिमश्च भागः 'अपूर्व-राग' इति प्रारभ्यते। विश्वं रङ्गभूमिरिति कविभिर्वर्णितं तत्रानेक-पुरुष-नारीभिः स्व-स्व-समये स्वकर्तृत्वशालिनो जीवितस्य चरितान्याचरितानि, तेषु स्वकार्यं ते सुचारुरूपेण सम्पादयन्तः लोकरसं पोषयन्ति स्मेति तेषां तासां वा भूमिकां रङ्गावतरणसमा इति। अतः नायकस्य श्रीबाजीराव-पेशवाख्यस्य चरिते तस्य मस्तान्याश्च नाट्य-भूमिकाया रति-स्थायीभावेन सरसतामापन्नोऽयमपूर्वरागः। भारते स्वराज्य-स्थापनारूपं महत्कार्यं सम्पादयितुमपि नायकस्य रावस्य राष्ट्रधर्म-वीरत्वमपि। शृङ्गार-वीररसयोः सम्मिश्रणे कविवाङ्निर्मितिः। राष्ट्रधर्मेण रति-योगे न विरोधः। वीरधर्मस्य रत्यादेः पोष्य-पोषकभावत्वात्। यः न पूर्वरागः जीवनस्य पूर्वार्द्ध-विषयस्य भागस्योत्तरार्द्धगतं जीवनं 'अपूर्वरागः' प्रस्तूयते अपूर्वश्चायं रागः नाट्यं वा प्रस्तूयत इत्यर्थः। यस्याः पतिरन्यदेशं गतः सा प्रोषितभर्तृका।

हिन्दी - अनन्तर में एक बार बाजीराव के कनिष्ठ भाई श्री चिमाजी आप्पा, बाजीराव पुणे से बाहर गये थे तब उनकी विरहिणी अर्धांगिनी मस्तानी के सुन्दर महल में आये। (*इस काव्य का यह उत्तरार्ध है*)।

स्वराज्यकार्ये कुशलोऽपि वीरः
श्रीपेशवाकीर्तिकुलाभिमानी।
मस्तानिवास्तव्य - महालये स
आदौ तु तस्थौ विनतश्चिमाजिः।।१६६।।

(संस्कृतटीका)

तस्थौ। आदरद्योतनार्थम्। श्रीचिमाजी-अप्पा-नामधेयः स्वराज्य-प्रशासने दक्ष इति यावत्। पेशवानां कीर्ति-विषये कुलस्य च विषयेऽभिमानी। मस्तान्या महालयः स्वतन्त्रः। राजनये सामोपचारोऽस्य लक्ष्यते।

(हिन्दी)

अपने राज्य के प्रशासन कार्य में दक्ष, शूर और पेशवा कुल के यश के प्रति गहरी आस्था रखनेवाले श्री चिमाजी आप्पा शनिवारवाड़ा के प्रांगण में निर्मित मस्तानी के महल में जा पहुँचे, और वह प्रथम मस्तानी के सामने विनम्र होकर खड़े रहे।

युद्धे गते बन्धुवरे तु रावे
निगुह्य चित्ते निजरोषभावम्।
प्रणम्य तां नम्रतया नयज्ञः
तस्थौ स तूष्णीमपि वक्तुकामः।।१७०।।

(संस्कृतटीका)

बन्धुवरे श्रीबाजीरावे। नयज्ञः राजनीतिनिपुणः। निगुह्य गूढं रोषभावं गोपयित्वा। रोषः मस्तानीविषये। तूष्णीं मौनं धारयित्वा। वक्तुं कामयते तां स्ववचनं श्रावयितुम् इच्छन्। सः। तूष्णीं स्थित्वापि वक्तुमैच्छत्।

(हिन्दी)

बाजीराव जब युद्ध पर बाहर गये थे तब अपने मन के गूढ गुस्से के भाव छिपाते हुए मस्तानी को नम्र प्रणाम कर राजनीति के जानकार चिमाजी ने कुछ बोलने की इच्छा रखकर भी कुछ मौन धारण किया और खड़े ही रहे।

अलौकिकं प्रेम तयोर्विचिन्त्य
चिमाजि-चित्ते तु भयं निगूढ़म्।
मस्तानि-पुत्रः कुलसम्पदाया
दायाधिकारी तु भविष्यतीति।।१७१।।

(संस्कृतटीका)

ज्येष्ठबन्धो रावस्य मस्तान्याश्च प्रेम रतिः अलौकिकं, न सामान्यजन-सङ्गतम्। विचिन्त्य विमृश्य। भयम् भीतिः। विवाहिताया मस्तान्याः पुत्रः। दायाधिकारी पुत्रत्वेन पितुः रावस्य परिवार-सम्पदायाः दायविधिरूपेण प्राप्तं धनं, तस्य अधिकारी स्वामी। धर्मशास्त्रमनुसृत्य विवाहितायाः पुत्रः पितुः सम्पत्तेः स्वत्वाधिकारं धारयति।

(हिन्दी)

बन्धु बाजीराव और मस्तानी के असाधारण प्रेम को देखकर चिमाजी के मन में यह भय छुपा हुआ था कि आगे मस्तानी का पुत्र कहीं पेशवा कुल की सम्पत्ति का वारिस के रूप में हकदार न बन जाए। *(धर्म शास्त्र के अनुसार विवाहिता पत्नी का पुत्र पिता की सम्पत्ति का अधिकारी होता है)*।

मस्तानि-निर्देशमवाप्य तत्र
सुखासनं प्राप्य जगाद देवीम् -।
'किमत्र पुण्ये कुशलं भवत्या?
भृत्यादिसेवाकरणे त्रुटिर्वा? ।।१७२।।

(संस्कृतटीका)

निर्देशः संकेतः, तम्। सुखप्रदे आसने। पुण्ये पुण्यपत्तने नगरे। सेवासु भृत्यानामुपेक्षा भवति किमित्यर्थः। पुण्यशीलानामेवात्र वास्तव्यं भवतीति भवती जानातु इति गर्भितार्थोऽपि।

(हिन्दी)

मस्तानी देवी द्वारा बैठने के लिए संकेत दिये जाने पर श्री चिमाजी आप्पा (देवर) आरामदेह आसन पर बैठ गये और उन्होंने पूछा - 'इस पुण्यपुरी में आपका कुशल तो है ना? सेवक लोग आपकी सेवा में कोई उपेक्षा करने की गलती तो नहीं करते हैं? (*यह पुण्यनगरी है।*)

श्रीबाजिरावो मम पितृतुल्यः
स भारते वीरवरोऽस्ति नूनम्।
स्वराज्य-हेतोः स करोति यत्नं
कुर्वन्तु सर्वे सहयोगमस्य।।१७३।।

(संस्कृतटीका)

चिमाजिर्मस्तानीं वदति - सः मम पितृतुल्यो ज्येष्ठबन्धुत्वात्। भारते राष्ट्रे वीरेषु वीरः श्रेष्ठवीरः। स्वराज्यस्य हेतोः - कृते। अस्य रावस्य सहयोगं साहाय्यम्। तस्य महत्कार्ये सर्वे सहायका भवन्त्विति भावः।

(हिन्दी)

बड़े भाई श्री बाजीराव मेरे पिता के समान (आदरणीय) हैं और निश्चित रूप से (आज) भारत में सबसे श्रेष्ठ वीर पुरुष वे हैं। वे भारत में स्वराज्य के लिए प्रयत्नशील हैं। इसीलिए उनकी सहायता करना हम सब लोगों का कर्तव्य है। (आप भी सहायक बन सकती हैं)।'

न स्मर्यते किं निजजन्मभूमिर्?
नात्र स्वभाषा न च बान्धवास्ते।
जनाः प्रसन्ना न भवादृशीभिः
प्रियोऽपि रावः परकीय एव।।१७४।।

(संस्कृतटीका)

(राजनीतिं मनसि निधाय सः उवाच) भवत्याः मस्तान्याः। जन्मभूमिः बुन्देलखण्ड-प्रदेशः। अत्र पुण्यपत्तने स्वभाषा मातृभाषा। न हि भवदीया भाषा मराठी। बान्धवाः पितृ-भ्रातृ-मातृरूपाः। भवादृशीभिर्महम्मदीया जातिः तत्र जन्मवशात् भवती परकीया। प्रियः भवत्याः प्रणयं करोत्यपि। परकीयः अन्य एव। न स भवत्या अधीनो चिरकालं भविष्यतीत्यर्थः। काव्यलिङ्गम्।

(हिन्दी)

राजनीति का अवलम्बन कर चिमाजी कहते हैं - 'आपको अपनी जन्मभूमि बुन्देलखण्ड की याद नहीं आती? इस पुणे में भाषा भिन्न है तथा आप के सम्बन्धी भी नहीं हैं। यहाँ के लोग भी आप जैसी (यवन स्त्रियों) को पसंद नहीं करते हैं। बाजीराव आप को प्यारे लगते हैं, फिर भी वे पराये ही हैं। (उनका प्रेम चिरकाल तक नहीं रहेगा)।

भोगाय दास्यं न च ते प्रशस्तम्
यद् यौवनं ते क्षणभंगुरं तत्।
रावोपकाराय भवद्वियोगः
कन्दर्पदर्पो न सुखाय चान्ते।।१७५।।

(संस्कृतटीका)

भोगाय रक्षितारूपेण रावेण सह सहवासाय। न प्रशस्तम् - न समीचीनम्। क्षणाद् भंगुरं नश्वरम्। कन्दर्पस्य कामदेवस्य दर्पः उन्मादोऽन्ते अन्तिमे जीवने न सुखाय। यौवनं कामबाधा च न सुखं दास्यतः। अर्थान्तरन्यासः।

(हिन्दी)

भोग-विलास के लिए (राव की) दासी होकर रहना आप के लिए समीचीन नहीं है। आप का जो यौवन है वह क्षणभंगुर है। यदि आप वियोग अपनाओ तो वह राव के लिए उपकार होगा। कामदेव का गर्व जीवन के अन्त में सुखदायक नहीं होता है। (आप जैसी भोगदासियों का क्या महत्त्व है?)

कुलाङ्गनाधिष्टितवैभवं तु
न रक्षिताभिः परिभोगयोग्यम्।
स्वक्षेत्रवासोऽस्तु भवत्सुखाय
लताः स्वभूमौ विकसन्ति नूनम्'।।१७६।।

(संस्कृतटीका)

कुलाङ्गना रावस्य मातृपत्न्यादिराजस्त्रियः, ताभिः भोग्यं वैभवम्। राज्यस्येति यावत्। रक्षिताभिः भोगदासीभिः। स्वस्य मस्तान्याः क्षेत्रम् बुन्देलखण्डप्रदेशः, तत्र वासः। भवत्याः मस्तान्याः सुखाय हिताय। तत्र गच्छतु भवतीत्यर्थः। स्वभूमौ लतानामुत्पादनक्षेत्रे। बुन्देलखण्ड एव भवत्याः सुखदो वासो भवेदित्यर्थः। दृष्टान्तः।

(हिन्दी)

और अच्छे कुल की महिलाओं के योग्य सुख-सम्पत्ति का उपभोग भोग-दासियों के द्वारा होना समीचीन नहीं है। आप को तो अपना क्षेत्र बुन्देलखण्ड ही रहने के लिए योग्य है। लताएं अपनी भूमि में ही विकसित होती हैं। (अर्थात्, आप का भला यहाँ नहीं होगा। अपने देश में ही होगा।)'

श्रुत्वा तदीयं वचनं विषाक्तम्

मस्तानि-वाक्यं सहसागतं तत् -।

'धनं महारावपदे स्थितं मे

लता हि रम्या निजपादपेन'।।१७७।।

(संस्कृतटीका)

विषाक्तं दुर्भावपूर्णम्। महारावस्य - श्रीबाजीरावस्य, पदे - चरणे, तथा तदीयराज्येऽपि। लताः स्वभूमौ विकसन्तीति पदं श्रुत्वा कथयति - निजः पादपः - श्रीबाजिरावरूपः, लताहं रम्यास्मि। न च कापि क्षतिरित्यर्थः।

(हिन्दी)

चिमाजी आप्पा का विषैला भाषण सुनकर मस्तानी के मुख से सहसा वाक्य निकले -

'मेरा धन श्री बाजीराव के चरणों में है। कोई भी लता अपने वृक्ष के साथ सुन्दर दिखती है। अर्थात् धन की लालच से मैं यहाँ नहीं हूँ। राव के साथ यहाँ मैं सुखी हूँ।'

उवाच साग्रे - 'कुल-विग्रहोऽयम् !
लता स्ववृक्षेण विकासमेति।
मत्तो गजो वृक्षलतावनानाम्
उत्पाटयन्नार्हति दण्डमेव? ।।१७८।।

(संस्कृतटीका)

मस्तानी वदति - 'अयम् गृह-कलहोऽस्ति। लता स्वभूमौ विकसन्तीति चिमाजेर्वचनस्योत्तरम् - स्ववृक्षेण लतायाः पादपेन सह। वृक्षान् लताः, वनानि च उत्पाटयन् भंजयन् गजः हस्ती। मां अस्मात् स्थानात् रावं विहाय गन्तुमिच्छन् भवान् वनान्तको गज इव दण्डनीयः इत्यर्थः। दृष्टान्तः। रूपकम्।

(हिन्दी)

मस्तानी ने चिमाजी से आगे कहा - 'यह तो गृह-कलह है। (तुम कहते हो लता अपनी भूमि में ही विकसित होती है) किन्तु यह जान लो कि, लता अपने वृक्ष के साथ पनपती है, अकेले नहीं। वास्तव में वृक्षों, लताओं और वन को उजाड़नेवाले किसी पागल हाथी को क्या दण्डित नहीं करना चाहिए? (मुझे यहाँ से निकालकर मुझे तबाह करनेवाले आप को ही दण्ड मिलना चाहिए)।

सौजन्य-संस्कार-समन्वयैश्च
प्रेमावयोः पुष्टमलौकिकं तत्।
कार्यं महद् ये गुणिनां विदुर्न
ते तु प्रबुद्धा अपि बुद्धिहीनाः'।।१७८।।

(संस्कृतटीका)

सौजन्यं-सज्जनत्वं, संस्काराः सम्यक्-कृतिशीलाः तेषां धर्मः, समन्वयः सहयोगात्मको भावः, तेषाम् आवयोः मस्तानी-रावयोः। पुष्टं समृद्धं। अलौकिकं, न साधारणम्। महतां महापुरुष-स्त्रीणां। न विदुः न जानन्ति। ते प्रबुद्धाः जागृतात्मनोऽपि। अर्थान्तरन्यासः।

(हिन्दी)

सौजन्य, संस्कार तथा समन्वय के गुणों के कारण हम दोनों का प्रेम समृद्ध और असाधारण हो गया है। जो लोग महान् व्यक्तियों के महत्वपूर्ण कार्य को नहीं जानते वे प्रबुद्ध होने पर भी बुद्धिहीन ही होते हैं। दुःख की बात है कि आप राव के महत्वपूर्ण कार्य को नहीं जान पाये।'

श्रुत्वा च देवीवचनं गभीरं
प्रोवाच देवीं चतुरश्चिमाजिः।
'राज्ये तु राज्ञः खलु राजनीतिः
प्रजानुरागः प्रथमश्च कल्पः'।।१८०।।

(संस्कृतटीका)

गंभीरं तर्कवशाद् चिन्तनीयम्। राजनीतिः नृपनीतिः। प्रजाया लोकस्यानुरागः प्रेम, तस्या अनुरंजनाद् राजा इति भावः। प्रथमः कल्पः आद्यं कर्तव्यम्। अर्थान्तरन्यासः।

(हिन्दी)

मस्तानी देवी के गंभीर वचन सुनकर चतुर चिमाजी ने उसे कहा –

'राज्य में तो राजा के लिए राजनीति होती है। प्रजा का प्रेम सम्पादन करना राजा का प्रथम कर्तव्य होता है।'

उवाच देवी – 'न भवेद् वियोगः
संयोग एषः परमोऽस्ति दिव्यः।
रावः प्रमाणं मनुते स पुण्ये।
रणेऽपि रावस्य च शक्तिरस्मि।।१८१।।

(संस्कृतटीका)

मस्तान्युवाच – अस्मद्वियोगः – आवयोः श्रीबाजीराव-मस्तानी-द्वयस्य दिव्यः अलौकिकः। रावः श्रीबाजीरावः स्वयं प्रमाणं साक्षी। प्रेरकशक्तिरूपाहम् – प्रोत्साहनदात्री शक्तिः। श्रीबाजीरावस्य पराक्रमेऽहं प्रेरकशक्तिरस्मीत्यर्थः।

(हिन्दी)

मस्तानी ने *कहा* – 'हम दोनों का वियोग कभी संभव नहीं है, क्योंकि हमारा संयोग परम अलौकिक है। श्री बाजीराव इस बात को प्रमाणित करेंगे कि, यहाँ और रण में भी मैं उनके लिए प्रेरणा देने वाली शक्ति हूँ। (अतः मैने रणभूमि पर भी उन्हें प्रोत्साहित किया है)।

न मे स्पृहा राज्य-पदे धने वा
सापत्न्यरूपो न तु मत्सरो मे।
भवेऽस्ति भक्तिर्न तु वैभवे मे
सर्वं धनं रावपदे निमग्नम्'।।१८२।।

(संस्कृतटीका)

राज्य-पदे स्वराज्यस्य पदे स्थाने। सापत्न्यभावः काश्याः सपत्नीति भूत्वा। भवे भगवति न वैभवे ऐश्वर्ये। वै तथा भवे इति - पाठे विरोधाभासः। रावपदे रावस्य चरणस्थाने।

(हिन्दी)

राज्य में किसी अधिकार के पद या धन की मेरी कामना नहीं है। ईश्वर के प्रति मेरी भक्ति है, भव (अर्थात् संसार के कामों में है), वैभव में नहीं है। मेरा सारा धन तो राव के चरणों में निहित है। (मेरा ऐश्वर्य राज्यपद में नहीं, अपितु राव-पदों में है)।'

क्षणं विहस्याथ जगाद बन्धुः -

'द्विजाः प्रवादं विवदन्ति लोके।

विधर्मिणी त्वं गृहिणीत्यमान्या

न निम्नगाद्रौ स्थिरतामुपैति'।।१८३।।

(संस्कृतटीका)

रावस्य बन्धुः चिमाजिः। प्रवादं निन्दाम्। प्रकर्षेण वदन्ति कुर्वन्ति। विधर्मिणी यवनीति न हिन्दुः। गृहिणी धर्मपत्नी तु अमान्या। निम्नप्रदेशं या गच्छति सा नदी अद्रौ पर्वतस्य शिखरे। स्थिरा न भवतीत्यर्थः। एवं निम्नजातीया भवती श्रेष्ठपदे स्थातुं नार्हतीति भावः। दृष्टान्तः।

(हिन्दी)

कुछ क्षण हँसकर चिमाजी बोले -

'देखिए, यहाँ द्विज (ब्राह्मण आदि लोग तुम्हारे सम्बन्ध में) निन्दा करते हैं। तुम दूसरे धर्म की लड़की हो अतः गृहिणी के रूप में यहाँ तुम मान्य नहीं हो सकती। नीचे बहनेवाली नदी पर्वत के शिखर पर स्थिर नहीं रह सकती। (अतः तुम्हें भी इस श्रेष्ठ स्थान को छोड़कर जाना होगा)।'

उवाच देवी - 'शिव-मूर्ध्नि गङ्गा
विराजते कल्मषनाशिनी सा।
पृच्छस्व रावं समरेऽपि नूनं
प्रेमावयोर्नास्ति कदापि विघ्नम्।।१८४।।

(संस्कृतटीका)

मस्तानी, नदी निम्नदेशं गच्छतीति दृष्टान्तविषये स्वोत्तरं ददाति - गङ्गा (निम्नगापि) शिवस्य भगवतः शंकरस्य मूर्ध्नि शीर्षे स्थित्वा लोकानां पापं नाशयतीति। रावं पृच्छस्व आवयोः बाजीराव-मस्तान्योः प्रेम। दृष्टान्तः।

(हिन्दी)

मस्तानी ने कहा -

'वह पाप नष्ट करने वाली गंगा (निम्नगा-नदी होने पर भी) भगवान् शंकर महादेव के शीर्ष पर विराजमान है। अच्छा होगा, राव से ही पूछो, युद्ध में भी हम दोनों का प्रेम कभी विघ्न नहीं होता है।

इच्छन्ति ये पूर्वजधर्महेतोः
अर्हन्ति ते धर्ममिह प्रवेष्टुम्।
सायन्तनेऽस्तंगत-भानवेऽपि
सूर्योदयेऽर्घ्यं न हि दीयते किम्?।।१८५।।

(संस्कृतटीका)

ये मानवाः। पूर्वजानां भारतीयानाम् धर्मस्य हेतोः कारणात्। स्वेच्छयेत्यर्थः। इह भारते धर्मम् प्रवेष्टुम् पुनः पूर्वधर्मग्रहणम्। नः अस्माकं। अस्तंगतः भानुः सूर्यः, तस्मै अर्घ्यदानम्। अर्घ्यं पुण्यजलम्। समयोचितम् काले योग्यम्। धर्मान्तरणं स्वेच्छया। दृष्टान्तः।

(हिन्दी)

जो लोग अपनी इच्छा से अपने पूर्वजों का धर्म स्वीकारना चाहते हैं वे धर्म को अपनाने के लिए योग्य होते हैं। सायंकाल में सूर्य का अस्त होने पर भी दूसरे दिन प्रातःकाल में सूर्योदय होनेपर भक्त उसे अर्घ्य प्रदान करते हैं।

खड्गं हि युद्धेऽप्यरिघातकं यत्
शान्तं च तद्वेष्टनिकात्मगर्भे।
जित्वा रणं शाम्यति राव-शौर्यम्
तत् मत्समीपे सुखमातनोति।।१८६।।

(संस्कृतटीका)

मस्तानी स्वभूमिकां दृष्टान्तेन दर्शयति खड्गमासिधाराशस्त्रम्। अरीणां शत्रूणां घातकं मारकम् अपि। वेष्टनिकायाः शस्त्रस्यावरणम्, तस्य आत्मनः स्वस्य गर्भे आभ्यन्तरे। रावस्य शौर्यमपि पराक्रमोऽपि। मम मस्तान्याः समीपं सन्निधिं प्राप्य सुखं विश्रान्तिपूर्वकमानन्दम्। दृष्टान्तः।

(हिन्दी)

मस्तानी दृष्टान्त के रूप में अपनी भूमिका स्पष्ट करती है –

'किसी वीर पुरुष की युद्ध में विजय प्राप्त करानेवाली तलवार को म्यान में आकर शान्ति मिलती है। राव के शौर्य का भी यही होता है। रण में विजय प्राप्त करने वाले राव के शौर्य को भी शत्रु को मारने के बाद मेरे पास आकर शान्ति प्राप्त होती है।

स्वान्तर्हितं श्रेष्ठजनः स्वदोषं

नियम्य लोके स्वगुणान् ददाति।

रावस्य कीर्तिः शशि-चन्द्रिकेव

न चन्द्रिकायां तु कलङ्कलेशः ।।१८७।।

(संस्कृतटीका)

स्वस्य आत्मनि अन्तर्हितं आभ्यन्तरे स्थितं दोषं नियम्य। कीर्तिः यशः। लोके जनेषु। स्वस्य गुणान् उपयुक्त-धर्मान्। सर्वेभ्य इति यावत्। शशिनः चन्द्रस्य चन्द्रिकेव न कलंङ्कस्य लेशोपि। दृष्टान्तः उपमा च।

(हिन्दी)

महापुरुष अपने दोष अपने ही अंदर नियन्त्रित कर अपने गुण ही लोगों में प्रकट करते हैं। राव की कीर्ति चन्द्रमा की चन्द्रिका के समान (आल्हाददायक) है। चन्द्रिका अपनी चान्दनी में कलंक का लेश भी नहीं देती है।

गिरौ जलौघो गजवत् प्रमाथी
भूमौ च गत्वा स्थिरतामुपैति।
यो दुर्जनानां तु विनाशकोऽपि
स कृष्ण-भक्त्या भवति प्रसन्नः।।१८८।।

(संस्कृतटीका)

शत्रूणां कृते रावस्तु मस्तान्याः कृते सुखद इति भाव दृष्टान्तरूपेण दर्शयति मस्तानी - गिरौ पर्वतस्य शृङ्गेषु। प्रमाथी उत्तांगतरंगः प्रपातरूपो वा। भूमौ समतलप्रदेशे। 'विनाशाय च दुष्कृतानाम्' इति न्यायेन स एव श्रीकृष्णः भक्तानां भक्त्या। तथैव दुर्जन-घातकोऽपि रावः मयि प्रीतिं करोतित्यर्थः। दृष्टान्तः।

(हिन्दी)

नदी का जलप्रवाह पर्वत की चोटी पर उछलता है, भूमिपर आनेपर वह स्थिर हो जाता है। भगवान् श्रीकृष्ण दुष्टों का नाश करते हैं, किन्तु भक्तों की भक्ति से प्रसन्न होते हैं। राव भी राष्ट्र के शत्रुओं को नष्ट करते हैं किन्तु मुझपर उनका प्रेम है।

शिवस्य गङ्गा कलिदोषभंगम्
सा निर्गता विष्णुपदाब्जयोश्च।
ईशस्य कृष्णः परमावतारो
द्वैतं तथाद्वैतमिदं सदेकम्।।१८६।।

(संस्कृतटीका)

शिवस्य भगवतः। गङ्गा कलिदोषं कलियुगस्य पापम्। तस्य भङ्गम् नाशम्। विष्णोः पदयोः कमलयोः। तस्य विष्णोः। इदं विष्णुतत्त्वम् शिव-विष्णोः द्वैतं रूपं द्विविधं, तदद्वैतमपि परमात्मरूपेणैकमेव। एकमेवाद्वितीयं ब्रह्मेति श्रुतिवचनात्।

(हिन्दी)

भगवान् शिव की गंगा नदी कलियुग में उत्पन्न पापों का नाश करती है और वह भगवान् विष्णु के चरणकमलों से निकली है। भगवान् श्रीकृष्ण उन्हीं ईश्वर के सम्पूर्ण अवतार हैं। ये दो भगवान् है और यथार्थ में दो नहीं है। वह तो एक परब्रम्ह ही है। (मैं ऐसे परमात्मा की भक्त हूँ)

न निर्धनत्वादिह मेऽत्र वासः

राज्ये पितुर्मेऽस्ति च भूमिभागाः।

दास्ये द्विजेभ्योऽपि ममाग्रहारान्

द्विजा द्विजिह्वास्तु विषं वमन्ति।।१६०।।

(संस्कृतटीका)

मस्तानी वदति - अत्र पुण्यपत्तने न निर्धनत्वात् अहं धनविहीना इति कारणात्। मे मस्तान्याः। पितुः श्रीछत्रसालस्य राज्यें। भूमिभागः विवाहे रावाय तदा च अनन्तरं च बांदानगरस्य तेन प्रदत्तं राज्यम्। द्विजेभ्यः ब्राह्मणेभ्यो दानरूपेण मम भूमिभागात् अग्रहारान् उपजीविकार्थम् दास्यामि। दानरूप-भूमिभागाम् दास्ये दातुमुत्सहे। किन्तु द्विजाः ब्राह्मणा द्विजिव्हाः सर्पाः सन्ति ये निन्दारूपं विषं वमन्ति। रूपकम्।

(हिन्दी)

मैं निर्धन हूँ इसलिए पुणे में आप के यहाँ पड़ी हूँ ऐसा मत समझिए। मेरे पिता श्री छत्रसाल से मुझे बुन्देल-राज्य में जागीर तथा राज्य प्राप्त है। मैं ब्राह्मणों को उन की उपजीविका के लिए मेरी अग्रहार (इनामी जमीनें) दूंगी। किन्तु ये ब्राह्मण जो सर्प हैं, निन्दा का विष उगलते रहते हैं।

टिप्पणी- श्री छत्रसाल ने मस्तानी के विवाह के प्रसंग पर बाजीराव को कुछ गाँव अपने राज्य से दिये थे और बाद में मस्तानी और उसके वंशजों के लिए राज्य का भाग 'बांदा' राज्य दिया था।

ते ब्राह्मणा मे परिपूजनीया
जानन्ति ये ब्रह्म च पुण्यभाजः।
केचिन्निशायां स्वगृहं त्यजन्ति
जानन्ति ताँश्चापि तु पण्यनार्यः।।१६१।।

(संस्कृतटीका)

परिपूजनीया, आदरपूर्वकम् अर्चनीयाः। ब्रह्म परमचैतन्यस्वरूपं सत्यम्। पुण्यं भजन्ते शुभाचरणशीलाः। ब्रह्म जानाति स ब्राह्मण इति न्यायेन। किन्तु केचित्, न हि सर्वे विप्राः स्वगृहं स्वपत्न्यादियुक्तं गेहम्। तान् काँचिद् विप्रान्। पण्यनार्यः वेश्याः। केचिद् ब्राह्मणब्रुवा अपि वेश्यागमनं कुर्वन्तीत्यपि ज्ञायते, इत्यर्थः।

(हिन्दी)

जो ब्राह्मण पुण्यशील हैं और ब्रह्म को जानते हैं वे मेरे लिए पूजनीय हैं। किन्तु कुछ लोग रात्रि को अपना घर छोड़ते हैं, उन्हें वेश्याएँ भली भाँति पहचानतीं हैं।

श्री छत्रसालो नृपतिः पिता मे
विधर्मिणी किं जननी कुमाता?।
स चन्द्रगुप्तो यवनीं स्वपत्नीं
चकार चाणक्य-गुरोर्निदेशात्।।१६२।।

(संस्कृतटीका)

नृपतिः राजा। विधर्मिणी - परधर्मं इस्लामधर्मं, आचरन्ती मम माता कथं कुमाता दुराचारिणी भवति? सः इतिहासे प्रसिद्धः। चन्द्रगुप्तो मौर्यः। यवनीं अलेक्झांडरस्य सेनापतेः यूनानकन्याम्। चाणक्यश्चासौ गुरुश्च। आचार्य-चाणक्यः चन्द्रगुप्तस्य गुरूरिति ऐतिह्मम्। स यवनी-परिणयो गुरूसम्मतः।

(हिन्दी)

राजा छत्रसाल मेरे पिता हैं। मेरी माता मुस्लिम है, किन्तु क्या दूसरे धर्म मात्र की होने से माता दुष्ट माता होती है? उस इतिहास प्रसिद्ध चन्द्रगुप्त मौर्य ने भी अलेक्झांडर के सेनापति सेल्यूकस की यूनान-कन्या (हेलन) से आचार्य चाणक्य की अनुज्ञा से विवाह किया था।

वनाद् वनश्रीर्विलयं गता चेद्

वा पूर्णचन्द्रादपि चन्द्रिका सा।

ममापि रावेण भवेद् वियोगो

रावः प्रमाणं यदि तत् करिष्ये'।।१६३।।

(संस्कृतटीका)

वनात् उपवनात्। विलयं गता नष्टा चेत्। अथवा चन्द्रिका कौमुदी। ममापि मस्तान्या अपि। वियोगः विरहः। यदि रावः प्रमाणम्, स एव निश्चयं करोति। तत् तदनुसारं करिष्ये। अस्मात् स्थानाद्यदि रावो मम गमनमिच्छति तर्हि तदपि करिष्ये इति भावः। दृष्टान्तः।

(हिन्दी)

उपवन से यदि वन की शोभा निकल जाती है या पूर्ण चन्द्रमा से उसकी चन्द्रिका नष्ट होती है तो मेरा भी राव से वियोग हो सकता है। किन्तु निर्णय रावजी के हाथों में होगा। वे जो चाहेंगे वैसा मैं करूंगी।'

हतप्रभः प्राह चिमाजिरेवम् -
'ख्याता पुरी पुण्यपुरीति नाम्ना।
केचित् कुमार्गाचरणे प्रवृत्ता
न दोषहीनं जनजीवनं तु।।१६४।।

(संस्कृतटीका)

हता नष्टा प्रभा तेजः यस्य सः तेजोहीनत्वमनुभवन्। ख्याता प्रसिद्धा। केचित् जनाः। कु-मार्गाणामाचरणे पापाचरणं कुर्वाणाः। जन-जीवनं लोकवृत्तं दोषेण हीनं मुक्तं न भवतीत्यर्थः। अर्थान्तरन्यासः।

(हिन्दी)

मस्तानी के वचन सुनकर चिमाजी हतप्रभ हो गया। उसने कहा -

'यह नगरी 'पुण्यपुरी' के नाम से विख्यात है। कुछ लोग पापाचरण करते होंगे। किन्तु जन-जीवन (सर्वथा) दोषहीन नहीं होता है।

या मेघमाला रविमावृणोति
सा जायते दुर्दिनकारिणीव।
त्वद्विभ्रमात् सुन्दरतागुणाच्च
मन्दायते रावगतं तु तेजः।।१६५।।

(संस्कृतटीका)

चिमाजिर्वदति - मेघानां जलदानां माला पंक्तिः। दुर्दिनं प्रकाशहीनं दिनं करोतीति, अशुभं दिनं करोति इति। त्वद्विभ्रमात् तव हास्यलास्यादिलीलया तथा सुन्दरतागुणात् च तव सौन्दर्यस्य गुणात्। रावगतं बाजीरावस्य। मन्दायते। धूमिलं तस्य यशो भवति। तेजः पराक्रमः। त्वयि तस्यासक्तिवशात्तस्य पराक्रमो मन्दतां भजत इत्यर्थः। दृष्टान्तः।

(हिन्दी)

जो मेघमाला सूर्य को आच्छादित करती है उसके कारण 'दुर्दिन' हो जाता है। तुम्हारे लिए विलास तथा सौन्दर्य के गुण के कारण आसक्त बाजीराव का पराक्रम कम हो रहा है। (तुम्हारे कारण यह दुर्दिन है)।

सौभाग्यमेतन्मम बन्धुराजः
प्रशस्यते वीरवरः स्वदेशे।
त्वद्‌योगदुष्टं तु यशस्तदीयम्
सा पद्महानिर्हिमवृष्टयेव।।१६६।।

(संस्कृतटीका)

बन्धुराजः श्रीबाजीरावः। प्रशस्यते प्रशंसां प्राप्नोति। वीरेषु वीर इति। तव योगः सम्बन्धस्तेन दुष्टं कलंकितम्। भवत्संयोगवशात्तस्य यशो मलिनं भवतीत्यर्थः। यथा कमलस्य हानिः हिमवृष्टिकारणाद् भवति तथा राव-यशो मलिनम्। उपमा।

(हिन्दी)

यह मेरा सौभाग्य है कि मेरे बड़े भाई श्री बाजीराव की हमारे देश में श्रेष्ठ वीर के रूप में प्रशंसा होती है। किन्तु (खेद है कि) आप जैसी महिला के साथ (अवांछनीय) सम्बन्ध होने के कारण उनका यश मलिन हो गया है। (उनका हित आपको देखना चाहिए)। वह तुम्हारा सम्बन्ध हिमवृष्टि के कारण हुई कमल की हानि के समान है।

देशे विदेशेषु जनप्रियः सः
यशस्तदीयं मलिनं भवेत् किम्?
स तेजसा सूर्य इवास्तु मुक्तः
सूर्योपरागस्तु तवानुरागः'।।१६७।।

(संस्कृतटीका)

चिमाजिराह - जनप्रियः लोके प्रियः सः रावः। मलिनं कलंकितम्। तेजसा पराक्रमेण शौर्येण वा। तव मस्तान्याः रागः प्रेम सूर्यस्य कृते उपराग एव ग्रहणमेव। सूर्यग्रहणवत् त्वद्‍योगात् रावयशो दूषितं भवतीत्यर्थः। उपमा रूपकं च।

(हिन्दी)

देश-विदेशों में बाजीराव की लोकप्रियता काफी है। क्या, उनका यह यश मलिन होना चाहिये? राव का तेज सूर्य के समान है। और तुम्हारा अनुराग (प्रेम) उस सूर्यरूपी राव के लिए ग्रहण है। (ग्रहण अच्छा नहीं होता है।')

श्रुत्वा चिमाजेर्वचनं निगूढं
मस्तानिदेवी निजगाद तं च। –
'महान् स रावो मम देव एव
रावार्पितं जीवनमेव सर्वम्।।१६८।।

(संस्कृतटीका)

निगूढम् राजनीति-प्रेरितम्। रावः बाजीरावः। मम मस्तान्यः देवः ईश्वरः। सर्वं समस्तं जीवनं मज्जीवितम्। रावस्य सेवायां समर्पितम्। तस्यैव प्रति ममैकनिष्ठत्त्वमिति भावः। अर्थात् अत्रापि पुण्यपत्तने। जीवनं समर्पितम्।

(हिन्दी)

चिमाजी आप्पा के (राजनैतिक ढंग से कहे गये) रहस्यमय वचन सुनकर मस्तानी ने कहा –

'वे महान् बाजीराव मेरे परमेश्वर हैं। मेरा सारा जीवन उन्हें समर्पित है। (अतः यहाँ उनके साथ मैं सुखी हूँ)।

किं भाषसे त्वं? न च दुर्दिनं तत्
तप्ता धरा वाञ्छति मेघमालाम्।
सूर्यस्य तेजो न विलुप्यते तत्
या मेघमाला सुदिनं तयैव।।१६६।।

(संस्कृतटीका)

चिमाजिं प्रति देवी उवाद - मेघमालया दुर्दिनं जायते इत्येवं वदसि। तप्ता सूर्यातपात् तृष्णार्ता। न विलुप्यते लुप्तं भवति। मेघमालां दृष्ट्वा शोभनं दिनमिति लोका आमनन्ति। अप्रस्तुतप्रशंसा।

(हिन्दी)

भाई चिमाजी, तुम क्या कह रहे हो? वह दुर्दिन नहीं कहलाता। गर्मी से तपी हुई भूमि मेघमाला को चाहती है। मेघमाला के कारण सूर्य का तेज नष्ट नहीं होता। मेघमाला के द्वारा दुर्दिन नहीं, अपितु सुदिन हो जाता है। (अर्थात् बाजीराव का तेज मेरे द्वारा नष्ट नहीं हो जाता है।)

ये स्वार्थदृष्ट्यान्धतमास्तु लोकास्-
ते नैव पश्यन्ति रवेश्च तेजः।
कृष्णप्रसादान्मम राव-बन्धो
गृहे च युद्धे च सुखाय तस्य।।२००।।

(संस्कृतटीका)

'ये स्वजनादयः स्वार्थदृष्ट्या स्वार्थबुद्ध्या। अन्धतमाः स्वार्थवशात् न सत्यं दृष्टुं शक्नुवन्तीत्यर्थः। अन्धानां कृते दुर्दिनमेव, ते सूर्यस्य तेजो न दृष्टुं शक्नुवन्ति। रावेण बाजीरावेण सह मम बन्धः सम्बन्धः पत्नीरूपेण संयोगः। गृहे पत्नीरूपेण, युद्धे च प्रेरणाशक्तिरूपेण च। तस्य बाजीरावस्य सुखाय। सर्वत्र तस्य कृते सुखप्रदाहमित्यर्थः।

(हिन्दी)

जो लोग (स्वजन) स्वार्थ की दृष्टि से अंधे हैं, वे सूर्य के तेज को नहीं देख पाते हैं। उनके लिए वह दुर्दिन ही है। भगवान् श्रीकृष्ण की कृपा से बाजीराव के साथ मेरा यह बन्धन हुआ है। उस से घर में और युद्ध में भी वे सुखी हैं। (मेरे कारण बाजीराव सुखी हैं, घर में और रणभूमि पर भी)।

भवत्कृपाणं कृपणत्वमेव
हन्तुं समर्थं स्वजनान् तदेव।
स्वराज्यसंस्थापकराजसिंहः
ख्यातः शिवाजिर्मम पितृ-मित्रम्'।।२०१।।

(संस्कृतटीका)

कृपणत्वमनुदारत्वम्, 'अयं निजः परो वेतीति' न्यायेन। कृपाणं शस्त्रम्। उक्तिरियम् - 'कृपणस्य च कृपाणस्य केवलमाकारतो भेद' इति। कृपणत्वं शस्त्रं स्वजनमेव हन्ति स्वजनास्तेन शस्त्रेणाहता भवितुमर्हन्ति, नाहम्। शिवराजः मित्रम् सखा।

(हिन्दी)

आप लोगों की अनुदारता एक शस्त्र है। किन्तु कहीं वही शस्त्र अपने ही लोगों को मारने में सक्षम होगा। स्वराज्य के संस्थापक छत्रपति शिवाजी महाराज मेरे पिताश्री छत्रसाल के मित्र थे। (मैं पराई नहीं हूँ। मुझ पर वह शस्त्र मत चलाओ।)'

पुनश्चिमाजिर्निजगाद चैनाम् -

'पुरोः समो राव इवोर्वशी त्वम्।

प्रीतिस्तदीया त्वयि विश्रुतैव

त्वयैव रावः परिरक्षणीयः।।२०२।।

(संस्कृतटीका)

निजगाद उवाद। त्वं मस्तानी, उर्वशी अप्सरा इव सौन्दर्यशालिनी तथा सः बाजीराव पुरूरवसा समः प्रतापशाली। त्वयि मस्तानीं प्रति। विख्यातं प्रेम। अत एव त्वयैव प्रियत्वात् परिरक्षणीयः तस्य रक्षा। उर्वशी यथा पुरूरवसम् विहाय निर्जगाम स्वर्गं तथैव त्वमपि रावं विहाय गच्छत्विति व्यज्यते। उपमा।

(हिन्दी)

चिमाजी ने मस्तानी से पुनः कहा -

'आप उर्वशी के समान (सुन्दर) हैं और बाजीराव पुरूरवा के समान पराक्रमी हैं। आप के प्रति बाजीराव का प्रेम विख्यात है। (अतएव मैं मानता हूँ कि) आप उसकी प्रिया हो, इसलिए आप ही बाजीराव की रक्षा कर सकती हैं। (राव की रक्षा आपके हाथों में है। उर्वशी ने भी पुरूरवा को छोड़ दिया था)।

तद्गच्छतां पुण्यपुरात् स्वगेहम्

आप्ताशिषैरद्य धनैश्च सद्यः।

त्यागो भवत्याः प्रियरावहेतोः

रणेषु रावः प्रभुतामुपैतु।।२०३।।

(संस्कृतटीका)

तत् तस्मात् कारणात्। स्वस्य गेहं बुन्देलखण्डम्। आप्ता अस्मद्विधास्तेषाम्। प्रियश्चासौ रावश्च तस्य हेतोः कारणात्। तव त्यागस्य परिणामः - रणेषु युद्धभूमिषु प्रभुतां स्वामित्वम्।

(हिन्दी)

इसलिए पुणे नगर से आप को बुन्देलखंड के घर जाना चाहिए। आप अपने साथ हम सगे-सम्बन्धियों के आशीर्वाद और धन लेकर जाइए। आप के प्रिय राव के लिए (इतना त्याग आप को करना है।) क्योंकि (उस के फलस्वरूप) राव को युद्धभूमि पर विजय प्राप्त होती रहेगी। (वह आप से मुक्त होकर राज्य का विस्तार कर सकेंगे)।

धनेन तुष्टा भवती भवेत् किम्?
दास्यामि दास्यै कुलमुक्तिहेतोः।
भवद्विमुक्तिर्भटवंशमुक्तिः
प्रियस्य रावस्य कृतेऽप्यभीष्टा।।२०४।।

(संस्कृतटीका)

पुनः धनं प्रदातुं वदति सः - निजमुक्तिः - आप्तजनानां मुक्तिः मस्तानियोगादित्यर्थः। दास्यै - त्वं दासीति मत्वा। भट-रावमुक्तिः - भटः - वीरः, स चासौ वंशः कुल स्वयं पेशवा च तस्य मुक्तिः - त्वयि प्रयाते भटवंशस्य। सोऽपि मुक्तो भविष्यतीति वीरस्य तस्य कृतेऽपि लाभ एव। कारणद्वयं दर्शयति। तव बन्धनात्तस्य कुलस्य च मुक्तिः तथा पराक्रमाय - रावस्य युद्धे शत्रुविनाशेऽपि लाभ एव भविष्यति। भटस्य वंशस्यापि मुक्तिः।

(हिन्दी)

आप धन से प्रसन्न होंगी क्या? दासी के रूप में आप को हमारी मुक्ति के लिए (धन) देंगे। आप से छुटकारा मिलने पर शूरवीर बाजीराव को भी मुक्ति मिलेगी जिस से प्रजा भी प्रसन्न होगी। पेशवा कुल में व्याप्त चिन्ता भी दूर होगी, और शूरवीर श्री बाजीराव का पराक्रम भी बढ़ेगा। (ये सब लाभ ही लाभ हैं)।

धनं तथा ज्येष्ठजनाशिषं च

प्राप्य स्वगेहं गमनं वरं ते।

कालेन विस्मृत्य रणे गृहे च

रावस्तु सर्वप्रभुतामुपैतु।।२०५।।

(संस्कृतटीका)

ज्येष्ठा जनाः माता, पत्नी तथान्ये बान्धवास्तेषाम्। स्वगेहं बुन्देलखण्डदेशम्। विस्मृत्य त्वामिति शेषः। सर्वेषां प्रदेश-नृपाणाम् प्रभुत्वं स्वामित्वम्। भवत्यास्त्यागेनैवेदं प्रभुत्वं सम्भवेत्।

(हिन्दी)

यहाँ से आप धन और बड़ों का आशीर्वाद लेकर अपने घर बुन्देलखण्ड जाइए। समय बीतनेपर राव आप को भूल जाएंगे, क्योंकि वे युद्ध में तथा घर में रहकर सर्वत्र प्रभुत्व प्राप्त करें यही अच्छा होगा। (आप के यहाँ से चले जाने से राव सारे देश के मालिक बनें)।

नृपापकीर्तिं सहते न कोऽपि
यशस्तु मुख्यं, मलिनं न तत् स्यात्।
प्रजा प्रसन्ना यदि पुण्यकार्यात्
सा राजनीतिर्यशसे च राज्ञे'।।२०६।।

(संस्कृतटीका)

सामान्यतया राजा नृपः अपवादं निन्दां। यशः कीर्तिः मुख्यं प्रधानम्। तत् यशः मलिनम् अपकीर्त्या धूमिलं न स्यात्। पुण्यं च तत् कार्यं च, तस्मात् शुभकर्मप्रभावात्। राज्ञः कस्यापि नृपस्य। सा राजनीतिः नृपनयः। पुण्यकर्मणा प्रजा प्रसन्ना भवतीति राज्ञः राजनयः।

(हिन्दी)

कोई भी राजा लोगों में अपनी निन्दा सहन नहीं करता है। राजा के लिए यश मुख्य होता है। वह मलिन न होने पाए इसका ध्यान रखना पड़ता है। राजा अगर पाप न करें और पुण्यकार्य करें तो प्रजा प्रसन्न होती है, इस प्रकार की राजनीति है और वही राजा यशस्वी होता है। (राजनीति के अनुसार भी तुम्हें यहाँ से जाना उचित होगा)।'

सा दारुणं तस्य वचश्च श्रुत्वा
प्रोवाच संयम्य मनश्चिमाजिम्।
'न वैभवे कापि तु लालसा मे
रूपं न मे प्रेमधनं प्रधानम्।।२०७।।

(संस्कृतटीका)

सा मस्तानी दारुणं - भयावहम्। चेतः मनः। त्वरया तत्कालमेव। वैभवे धन-सम्पत्तौ। लालसा लोभः। प्रेम एव धनं वैभवम्। रूपं सौन्दर्यम्। न धनार्थमहमत्रास्मीत्यर्थः।

(हिन्दी)

चिमाजी के वह दारुण वचन सुनकर भी मस्तानी ने अपने मन को संयमित किया और वह तुरन्त चिमाजी को बोली -

'किसी धन-सम्पत्ति के प्रति मेरी कोई लालसा नहीं है। रूप नहीं, अपितु मेरा धन तो राव के प्रति मेरा प्रेम है।

का राजनीतिः? क इहास्ति राजा?
श्रीमान् स योगी शिव एव राजा।
विस्मर्यते किं वचनं तदीयम्?
'श्री-राज्यमेतत्' परमं पवित्रम्।।२०८।।

(संस्कृतटीका)

राजनीतिः राजधर्मः। इह पुण्यनगर्याम्। कः? न कोऽपीत्यर्थः। राजा श्रीमान् दिव्यगुणयुक्तः सः प्रसिद्धः योगी राजकार्येऽपि लोक-कल्याणाय त्यागशील इति। सः शिवराजः छत्रपतिः शिवाजिः। वचनं - प्रसिद्धं वाक्यम्। एतत् - स्वराज्यं श्रीपरमेश्वरस्य राज्यमिति। तत् परमं पवित्रम् परिपूतं राज्यं ईश्वरस्येति भावः।

(हिन्दी)

तुम राजनीति की बात करते हो! कौन सी राजनीति? यहाँ कौन राजा है? वास्तव में वह श्रीमान् योगी छत्रपति शिवाजी राजा है। फिर भी उनका वह प्रसिद्ध वाक्य भूल गये क्या? उन्होंने कहा था - 'यह श्री का राज्य है।' अतः यह परम पवित्र है। (राजा और राजनीति की बात मत चलाओ)।

न नर्तकी वा न च रक्षितास्मि

स छत्रसालो नृपतिः पिता मे।

प्रणामिधर्मे न च भेदभावो

मान्या मदीया यवनी सुमाता'।।२०६।।

(संस्कृतटीका)

न रक्षिता भोगदासी। सः प्रसिद्धः। प्रणामिधर्मे प्राणनाथस्वामिना प्रणीते धर्मे। न भेद-भावो हिन्दु-मुस्लिम-जाति-भेदः। अत एव सुमाता जननी यवनजातीयापि मान्यास्ति लोके। प्रणामि-धर्ममनुसृत्य ईश्वर-अल्लयोर्मध्ये न भेदभाव इत्यर्थः।

(हिन्दी)

मैं कोई नाचनेवाली या रखेल नहीं हूँ। मेरे पिता वे विख्यात राजा छत्रसाल हैं। प्रणामि धर्म में ईश्वर-अल्ला में कोई भेदभाव नहीं माना जाता। इसीलिए मेरी मुस्लिम माता अच्छी माता है, और लोगों में मान्य है। (मेरे विषय में आप की धारणा गलत है)।'

विहस्य किञ्चिच्च चिमाजिराह -

'योगेश्वरोऽभूत् मथुरां स कृष्णः।
ययौ स्वधर्माय विनैव राधाम्
विहाय रावं भव योगिनी त्वम्।।२१०।।

(संस्कृतटीका)

किञ्चित् - छद्महास्यम्। योगस्य परमार्थसाधकत्वम् तस्य। ईश्वरः स्वामी। राधां विना गोकुल-त्यागावसरे राधां तत्रैव विहाय परित्यज्य मथुरां ययौ गतवान्, अत एव योगेश्वरोऽभूत्। त्वमपि रावं विहाय योगिनी संन्यासिनी भव। यथा राधां विनैव आराध्य-देवो भगवान् श्रीकृष्णो योगेश्वरोऽभूत् तथैव त्वमपि रावं विहाय च योगमाचरेत्यर्थः।

(हिन्दी)

इस पर कुछ हँसी के साथ चिमाजी बोले -

'आप के आराध्य देव भगवान् श्रीकृष्ण राधा को गोकुल में छोड़कर अपने धर्म के लिए मथुरा गये थे तभी वे योगेश्वर बन पाये थे। आप भी बाजीराव को छोड़कर योगिनी बन जाइए।'

प्रीतिः कथं सा? भवदीय-भक्तिः
रावं विना पितृगृहेऽपि शक्ता।
प्रिये भवेन्निर्गुणभक्तिरेव
गत्वापि दूरं भज भक्ति-योगम्'।।२११।।

(संस्कृतटीका)

चिमाजिर्भक्तिभावमुपदिशति ताम् - न सा प्रीतिः प्रेम। भवत्या भक्तिरेव रावं प्रति। पितृगृहे श्रीछत्रसालस्य निवासगृहे बुन्देलखण्डेऽपि। पुण्यपत्तनं विहायापि भक्तिः सम्भवति - इति भावः। प्रिये रावे भवती निर्गुणरूपां विदेहरूपां भक्तिं करोतु। दूरं बुन्देलखण्डं गत्वा। कन्दर्पस्य मदनस्य दर्पः अन्ते जीवितान्तिमे क्षणे। भक्तितत्त्वस्य योगमाचरतु भवतीति भावः।

(हिन्दी)

चिमाजी ने आगे कहा -

'राव के प्रति प्रेम नहीं वह आप की भक्ति है। आप भक्ति की बात करती हैं। यह भक्ति राव को छोड़ देने के बाद पिता के घर में रह कर भी सम्भव है। प्रिय राव के प्रति आप की भक्ति निर्गुण रूप की होनी चाहिए। दूर रह कर भी निर्गुण भक्ति आप कीजिए'।

सा त्वाहताभूद् वचसा चिमाजे
रावं स्मरन्ती नयने निमील्य।
स्थित्वा तु तूष्णीम् तमुवाच देवी -
'नाहं सहे किन्तु ममापमानम्।।२१२।।

(संस्कृतटीका)

सा मस्तानी। आहता व्यथिता। नयने निमील्य - रावं अन्तर्मनसि ध्यात्वेत्यर्थः। बन्धुम् - पति-बन्धुं चिमाजिम्। मम मस्तान्याः। मामपनेतुमिच्छसीति मेऽपमान इति भावः।

(हिन्दी)

चिमाजी के वचनों से मस्तानी दुःखी हुई। अपनी आँखे मूँदकर उसने बाजीराव का स्मरण किया, कुछ देर तक चुप रहकर उसने चिमाजी से कहा -

'मैं यहाँ अपना अपमान सहन नहीं कर सकती हूँ।

ध्याने प्रियस्यापि वियोगिनी किम्?

संयोगशून्यस्तु कथं स योगः?।

भक्तेश्च योगान्मम योगिनीत्वम्

भक्तौ विभक्तो न भवेत्तु देवात्।।२१३।।

(संस्कृतटीका)

मस्तानी प्रत्युत्तरं ददौ - प्रियस्य रावस्य ध्याने चिन्तनेऽपि वियोगः अस्याः अस्तीति वियोगिनी विरहिणी किम्? कथमू? संयोगेन सहवासेन शून्यो रहितो योगः कथम्? भक्तेः समर्पणभावस्य योगः तत्त्वम्। मम मस्तान्या योगिनीत्वम् योगस्याचरणम्। देवात् आराध्यात् भक्तः न विभक्तो दूरं गच्छति। अर्थान्तरन्यासः।

(हिन्दी)

प्रिय राव के चिन्तन में डूबी रहनेपर मैं कैसे वियोगिनी हो सकती हूँ? (वह सदा मेरे हृदय में रहेंगे।) जिस में संयोग नहीं होगा वह 'योग' कैसा? एक भक्तियोग जो है, उस से मेरा योगिनी होना है तो ठीक ही है। (ध्यान में रखिए-) भक्त कभी भगवान् से विभक्त नहीं होता है। (व्यर्थ का मुझे उपदेश न दीजिए)।

राधां तथा तां मुरलीं विहाय
गतो विधिज्ञो मथुरां मुरारिः।
कथं स राधा-मुरलीद्वयेन
विराजतेऽद्यापि तु मन्दिरेषु?।।२१४।।

(संस्कृतटीका)

राधां विहाय गतस्य श्रीकृष्णस्य विषये प्रत्युत्तरम् - राधां तथा मुरलीं वंशीं गोकुले विहाय परित्यज्य, कर्तव्यज्ञः। मुरारिः - श्रीकृष्णः। किन्तु, अद्यापि कलियुगेऽपि मन्दिरेषु देवालयेषु। कृष्ण-कथामनुसृत्य यद्यपि भौतिकरूपेण राधा तथा मुरली गोकुल एव वर्तेते, तथापि श्रीकृष्णेन सह तयोः सम्बन्ध आध्यात्मिकरूपेण नित्यमेव। भारते मन्दिरेषु राधा-मुरलीः सहितः श्रीकृष्णः।

(हिन्दी)

(आप कहते हैं राधा को श्रीकृष्ण ने छोड़ दिया था, तो बतलाइये) राधा और मुरली को गोकुल में छोडकर श्रीकृष्ण मथुरा को गये वे कर्तव्यबोध के कारण। (यदि छोड़ कर चले जाते तो) राधा और मुरली के साथ आज भी भगवान् श्रीकृष्ण मन्दिरों में कैसे विराजते? (अर्थात् ये दोनों हमेशा के लिए उनके साथ रहीं हैं। मुझे राव को छोड़ने का आग्रह व्यर्थ है।)

अद्यापि राधा हरिसङ्गिनी सा

राधां विना कृष्णपदं न पूर्णम्।

राधा विलीना प्रियकृष्णरूपे

माया यथा ब्रह्म-पदे विलीना'।।२१५।।

(संस्कृतटीका)

सा राधा अद्यापि वर्तमान-समयेऽपि हरेः कृष्णस्य सङ्गिनी सहचरी अस्ति। राधां विना कृष्णपदं श्रीकृष्णस्य स्वरूपं न पूर्णम्। राधा प्रियस्य कृष्णस्य रूपे स्वरूपे चैतन्यरूप इत्यर्थः। ब्रह्मपदे, अद्वितीये ब्रह्मतत्त्वे माया अविद्या। सदसद्रूपेण अनिर्वचनीया माया विलीना वस्तुनि अवस्त्वारोपस्य निरसने जाते मायापि विलीना इति भावः। उपमा। यदि माया अस्ति राधापि अस्ति, सा नास्ति राधापि कृष्णपदे विलीना, यथा माया ब्रह्मणीत्यर्थः।

(हिन्दी)

वह राधा आज भी कृष्ण के साथ है। (यह आप नहीं जान सकते।) श्रीकृष्ण राधा के बिना पूर्ण नहीं है। राधा तो प्रिय श्रीकृष्ण के स्वरूप में ही विलीन है। जैसे सत्स्वरूप ब्रह्म का ज्ञान होने पर उसी ब्रह्म में माया विलीन होती है। (यदि माया नहीं है तो राधा भी नहीं है। यदि माया है तो राधा भी है। नहीं होने पर भी वह श्रीकृष्णरूप चैतन्य में विलीन है ही)।'

शूरोऽपि युद्धे, चतुरो गृहेऽपि
स बाजीरावस्य सहोदरोऽपि।
नोदारसत्त्वः खलु राव-तुल्यः
चिमाजि अप्पा पुनरप्युवाच।।२१६।।

(संस्कृतटीका)

गृहे परिवारविषयेऽपि चतुरः प्रज्ञावान्। सहोदरः बन्धुः। उदारसत्त्वः औदार्यशीलः। बाजीरावसमं चिमाजेः औदार्यं न।

(हिन्दी)

चिमाजी युद्ध में शूर तो थे ही, वे घर के अंदर भी चतुर बुद्धि के धनी थे। बाजीराव के वे सगे भाई तो थे, किन्तु राव के समान वे उदार स्वभाव के नहीं थे। वे पुनः बोले :

"गृहे तु पापं न कदापि सह्यम्
रोगः शरीरे परिहार-योग्यः।"
उवाच देवी रभसाच्चिमाजिम् -
'कुत्रास्ति पापं मम जीवनेऽपि?'।।२१७।।

(संस्कृतटीका)

गृहे शनिवारवाडेति भवने कुले वा भटानाम्। शरीरे देहे रोगः व्याधिः। तत्कालमिति यावत्। ममापि पुण्यशीलं जीवनमिति भावः। रभसात् तत्कालम्।

(हिन्दी)

'घर में पाप को आश्रय नहीं देना चाहिए। जैसे शरीर में कोई रोग हो तो उसे दूर करना चाहिए।'

इसपर तुरन्त मस्तानी ने कहा -

'मेरे जीवन में कहाँ पाप है?'

प्रोवाच देवी तु नियम्य मन्युम् -
'करोति पापं स्वजनो न कश्चित्?।
द्रुह्यन्ति मह्यं भवदाप्तलोका
मान्यास्मि राज्ञो दुहितेति लोके।।२१८।।

(संस्कृतटीका)

मन्युं - क्रोधम्। स्वजनः - अस्मिन् महालये केऽप्याप्ताः। द्रुह्यन्ति - द्विषन्ति। राज्ञः - श्रीछत्रसालस्य दुहिता-कन्या। आप्ता द्विषन्ति, लोके तु मान्यास्मि - इति भावः।

(हिन्दी)

मस्तानी देवी क्रोध को नियन्त्रित कर बोली -

'इस महल में कोई अपने परिवार का व्यक्ति पाप नहीं करता क्या? (अर्थात् सब लोग धुले हुए नहीं है।) बात यह है कि, अपने परिवार के लोग मेरा द्वेष करते हैं, अन्य लोग नहीं। मेरी तो मान्यता लोगों में राजकन्या के रूप में ही है।

पुण्यं न पण्यं न धनेन लभ्यम्
पुण्येऽपि सर्वे किमु पुण्यभाजः।
भाग्याच्च मे रावपदेऽस्ति पुण्यम्
शनेस्तु पीडा शनिवारसौधात्।।२१६।।

(संस्कृतटीका)

न पण्यम् न क्रयवस्तु। धनेन वित्तेन न लभ्यम् प्राप्यम्। पुण्यभाजः पुण्यवन्तः। ये पुण्ये निवसन्ति ते सर्वे न पुण्यभाज एवेति सोल्लुण्ठनं वचनम्। राव-पदे बाजीरावचरणे। किन्तु शनेः शनैश्चर-दुष्ट-ग्रहस्य पीडा बाधा शनिवार-नाम्नः सौधात् प्रासादात् अस्ति। अस्मिन् प्रासादे गृहकलहरूपः। शनैश्चरो दुष्टग्रहः, तस्य पीडा। शनि-बाधामेवानुभवामीत्यर्थः।

(हिन्दी)

पुण्य कोई खरीदनेवाली वस्तु नहीं जो धन से प्राप्त होगी। इस पुण्यपुरी में रहनेवाले सभी लोग क्या पुण्यवान् नहीं हैं। यह पुण्य नगरी जो है, क्यों नहीं? जहाँतक मेरा प्रश्न है, मेरा पुण्य बाजीराव के चरणों में निहित है। (पाप तो नहीं) किन्तु शनि की पीड़ा अवश्य मुझे सताती है और वह है इस शनिवारवाड़ा से ही।

हलेन हेम्नः शिशुना शिवेन
भूः कर्षिता पुण्यपुरीसमृद्ध्यै।
वातायने लाल-महालयस्य
शाएस्तहस्ताङ्गुलिघातकः सः।।२२०।।

(संस्कृतटीका)

हेम्नः सुवर्णस्य हलेन। शिशुना-बालकेन शिवेन छत्रपति-शिवराजेन। भूःक्षेत्रम्। कर्षिता पुण्यपुर्याः समृद्ध्यै धनधान्याद्यैश्वर्यलाभार्थम् सः छत्रपतिः शिवराजः। पुण्यनगर्यामेव लालमहालयस्य तन्नाम्ना प्रसिद्धस्य भवनस्य वातायने गवाक्षे शाएस्तः औरंगजेबस्य सेनापतिः, तस्य हस्ताङ्गुलीनां घातकः मारकः। अभूदित्यर्थः। तेन पवित्रीकृतं पुण्यनगरमिति मे श्रद्धा।

(हिन्दी)

सुवर्ण के हल से इसी पुणे की खुशहाली के लिए बालक शिवाजी ने खेत जोता था। और यहीं (औरंगजेब द्वारा भेजे गये) शाएस्ताखान पर छत्रपति ने धावा बोल दिया था जिससे उसके निवास लालमहल की खिडकी में से उसके भागते समय छत्रपति शिवाजी की तलवार से उस की उंगलियाँ कट गई थीं। (मैं पुणे को पवित्र नगर इसलिए मानती हूँ। उसे छोड़ने का प्रश्न ही नहीं उठता।)

शिवेन साकं शिशुना जिजाई -
मातुर्निवासाज्जनितं हि पुण्यम् ।
कथं विहातुं भवदाग्रहोऽयम्
पुण्येऽप्यपुण्यं न कदापि कुर्याम् ।।२२१।।

(संस्कृतटीका)

जिजाईति शिवाजेः माता। बाल-शिवेन शिशुना शिवराजेन। जनितं जातम्। पुण्यम् - शुभफलप्रदम्। 'पुण्यं' नगरं वा। भवदाग्रहः भवतां चिमाजिप्रभृतीनां आग्रहः परामर्शः। पुण्यपुरे न च कदापि अपुण्यम् - पापं न कुर्याम्, नाहं करिष्यामि। श्लेषः काव्यलिङ्गम् च।

(हिन्दी)

इसी पुणे नगरी में बालक शिवाजी के साथ उन की माताजी जिजाबाई रहती थीं। उन के निवास से यह पुण्य-नगरी हुई। ऐसे पुणे नगर को छोड़ने का आप कैसे आग्रह मुझे कर रहे हैं? इस पावन नगरी को छोड़ने का पाप मैं कभी नहीं करूंगी। (पुण्य में भी पाप करने का आग्रह कैसा?)

लक्ष्यं शिवाजेः खलु हिन्दवीयम्
स्वराज्यमूल्यं मनसि प्रधानम्।
क्षुद्रा न जानन्ति समानलक्ष्यम्
पितुश्च रावस्य च मित्रभावम्।।२२२।।

(संस्कृतटीका)

शिवाजेः छत्रपति - शिवराजस्य। हिन्दवीयं भारतीयम्। उभयोः मे पितुः रावस्य च तदेव लक्ष्यम्। क्षुद्राः कृपणाः समानं लक्ष्यम् ध्येयम्। पितुः श्रीछत्रसालस्य। मित्रभावोप्युपकारकः स्वराज्यायेत्यर्थः।

(हिन्दी)

छत्रपति शिवाजी का लक्ष्य था हिन्दवी स्वराज्य और मेरे पिता और राव का भी वही लक्ष्य है। किन्तु (खेद है,) क्षुद्र लोग उनके इस लक्ष्य को नहीं जानते और मेरे पिता और राव के मित्रभाव को भी नहीं जानते। (इन दोनों के महान् कार्य को यहाँ के क्षुद्र लोग नहीं जानते हैं)।

इक्षोरसोऽयं मधुरोऽस्ति मत्वा
तस्यैव मूलं किमु भक्षणीयम्?।
रावो विजेता विभवं ददाति
तस्यैव तेजोहननं न कार्यम्।।२२३।।

(संस्कृतटीका)

सा दृष्टान्तेन कथयति - इक्षोः रसः मधुरः। मत्वा विचार्य। मूलं इक्षोर्मूलम्। रावो विजेता विजयं प्राप्नोति। विभवं - सम्पत्तिम्। तेजः दीप्तिः। शौर्यम्। हननं न करणीयं। दृष्टान्तः।

(हिन्दी)

ईख (गन्ने) का रस मधुर होता है यह समझकर उसकी जड़ को भी खाना उचित नहीं होता है। राव विजय प्राप्त करते हैं, और सम्पत्ति, वैभव लाते हैं, किन्तु उन्हीं के तेज का हनन करना उचित नहीं है। (*मराठी में कहावत है - ऊस गोड झाला म्हणून काय मुळासकट खायचा?*)

रावात्म-शौर्यार्जितवैभवं तत्
गृह्णन्तु सर्वे कुलजा यथेच्छम्।
ते विस्मृताः स्युर्धनमीहमानाः
प्रेमावयोः किन्तु न विस्मृतं स्यात्।।२२४।।

(संस्कृतटीका)

रावस्य आत्मनः स्वकीयं शौर्यं, तेनार्जितं सम्पादितं च तत् वैभवं सम्पत्। कुले जाताः पेशवा-वंश-जाताः। धनं वैभवम् ईहमाना धनाभिलाषिणः। विस्मृता नष्टाः अपि न स्युः लोका विस्मरिष्यन्ति तान्। आवयोः मस्तानी-रावयोः प्रेम। तत् प्रेम अमरं भवेत्।

(हिन्दी)

बाजीराव जी ने अपने पराक्रम से यह सारी दौलत कमाई है। उसे आपके कुल (पेशवा) के लोग स्वेच्छापूर्वक बाँट लो। (मुझे उस के लिए कोई आपत्ति नहीं है।) यह बात अवश्य है कि आज जो धन की इच्छा करने वाले लोग हैं वे भुला दिये जाएंगे। किन्तु हम दोनों के प्रेम को कोई भूलेगा नहीं।

वीरस्तु यो गच्छति दूरदेशम्
स्वराष्ट्ररक्षार्थमसौ वियोगी।
पुरोलुपीम् तां दयिता चकार
सा कृष्णमान्या च तथैव चाहम्।।२२५।।

(संस्कृतटीका)

युद्धे वीरः। दूरदेशं शत्रुवधार्थमित्यर्थः। स्वस्य निजस्य राष्ट्रस्य-देशस्य रक्षणार्थम्। असौ वीरः। वियोगी स्वपत्नीसकाशात् दूरं गच्छतीत्यर्थः। सः महाभारतादौ प्रसिद्धः पाण्डवोऽर्जुनोऽपि (दूरस्थाम्) उलुपिं पूर्वदेशीयां कन्यां पत्नीरूपेण स्वीचकार। सोलुपी कृष्णेनापि अनुमोदिता अहमपि रावस्य पत्नीति सम्मतास्मि जनैरिति यावत्। काव्यलिङ्गम्।

(हिन्दी)

कोई वीर पुरुष अपने देश की रक्षा के लिए दूर देश को जाता है तो वह (पत्नी से) बिछुड़ जाता है। (इस प्रकार के उदाहरण पुराणों में मिलेंगे।) भारतवर्ष के प्रसिद्ध पाण्डव अर्जुन ने (पूर्व देश की) कन्या उलुपि से विवाह किया था और उसे श्रीकृष्ण ने स्वीकृति दी थी। लोगों में मैं भी बाजीराव की पत्नी के रूप में मान्य हूँ। (क्या, अर्जुन को उलुपि-विवाह के लिए कोई कोसता है? फिर मैं यवनी-कन्या होने से मुझे क्यों दोष देते हो?)।

'राज्यं धनं वा पतिपादपद्मे
निन्दन्ति मां ते स्वजना, जना न।
श्रीपेशवानां कलहो गृहेऽयम्
रावस्य सौख्यस्य तु घातकः स्यात्।।२२६।।

(संस्कृतटीका)

पत्युः बाजीरावस्य पादावेव पद्मे, रावचरणकमलयोः। ते स्वजनाः बान्धवाः न जनाः प्रजाजनः। गृहे बान्धवा मयि रुष्टाः, न प्रजेति भावः। गृहे परिवारे अयं कलहः विरोधरूपः संघर्षः। घातकः विनाशकः स्यात्। गृह-कलहोऽयं रावस्य कृतेऽशुभं करिष्यतीत्यर्थः।

(हिन्दी)

राज्य अथवा धन मेरे लिए पति बाजीराव के चरण-कमलों में निहित हैं। सगे-सम्बन्धी लोग मेरी निन्दा करते हैं, प्रजाजन नहीं। (याद रखिये) यह पेशवा कुल का गृह-कलह बाजीराव के लिए घातक सिद्ध होगा।

नत्वा गणेशं समरे स रावो

ददाति श्रेयो यशसेऽपि मह्यम्।

सा प्रेमशक्तिस्तदुदारचित्तम्

तत् पृच्छतां राववचः प्रमाणम्।।२२७।।

(संस्कृतटीका)

श्रीगणेशं कुलदैवतम्। यशसे युद्धे जयाय। प्रेम-शक्तिः प्रीतिबलम्। रावस्य तम् उदारं चित्तं मनः। रावस्य वचनम्।

(हिन्दी)

कुलदेवता श्री गणेश को नमस्कार करने के उपरान्त राव युद्ध में प्राप्त विजय का श्रेय मुझे देते हैं। वह उन के प्रेम की शक्ति और वह उनके मन की उदारता ही है। (यदि शंका हो तो) राव को ही पूछ लीजिए। उन का शब्द मेरे लिए प्रमाण है।

स्त्रियः पवित्रा अपि निन्दितास्ताः
सीतापि निन्दां सहते स्म शुद्धा।
किं निन्दकानां हृदये न पापम्?
पतिव्रताया मम पुण्यमेव।।२२८।।

(संस्कृतटीका)

स्त्रीणां निन्दाविषये वदति पवित्राः शुद्धाचरणशीलाः। सीतापि जानकी अपि। निन्दकानां अपवादं प्रकुर्वाणाः, तेषाम्। मम मस्तान्याः। पुण्यमेव, न हि पापाचरणम्।

(हिन्दी)

हमेशा नारियों की निन्दा होती रही है। निन्दा करनेवालों ने पवित्र सीताजी को भी नहीं छोड़ा। क्या निन्दा करनेवाले लोगों का हृदय पवित्र है? मेरा तो पतिव्रता का धर्म है और वह मेरा पुण्य है। (अतीत में नारी की निन्दा होती रही है, मेरी निन्दा उसी की एक कड़ी है। मैं तो पतिव्रता हूँ। पुण्य मेरे पास निहित है)।

भवाँस्तु जानाति विशुद्धरागम्?
आप्ता न जानन्त्यनुदारसत्वाः।
द्रष्टुं न शक्ता गृहगर्भसर्पा
रवेरुषःसङ्गमकुंकमाभाम् ।।२२६।।

(संस्कृतटीका)

मस्तानी चिमाजिं कथयति –'भवान् चिमाजिः। विशुद्धं रागश्च पवित्रं प्रेम। चिमाजिर्जानाति प्रेम-तत्त्वमित्यर्थः। किन्तु अनुदारं सत्त्वं स्वभावा येषां ते कूपमण्डूका इव कृपणस्वभावाः आप्ताः स्वजनाः। गृहस्य गर्भे तले स्थिताः सर्पाः सूर्यस्य उषसश्च संगमः मिलनं तस्य कुंकुमवर्णीयारक्ता आभा कान्तिः ताम्। तस्य पूर्वदिशि समुदितां रक्तिमाम्। सौन्दर्यरूपं। न शक्ताः असमर्थाः। संकुचिता जना दिव्यं प्रेम न जानन्ति। दृष्टांन्तः।

(हिन्दी)

आप जानते हैं प्रेमतत्त्व क्या होता है? किन्तु संकुचित स्वभाव के आप के रिश्तेदार उसे नहीं समझ पा रहे हैं। किसी घर के तहखाने में रेंगनेवाले साँप पूर्व दिशा में उदित सूर्य और उषा के (प्रेम) रक्तिमा से रंजित मिलन की शोभा को नहीं देख पाते हैं।

ये बान्धवाः सत्यविरोधिनः स्युः
तेषां कृते का परिवेदना च?।
तत् सात्विकं कर्म विना फलेच्छाम्
नाद्यापि किं राष्ट्रहितं प्रधानम्?।।२३०।।

(संस्कृतटीका)

(भगवद्गीताया उपदेशं स्मारयति)। बन्धो चिमाजे ये बान्धवा आप्ताः। सत्यं यथार्थरूपेण स्वार्थं विहाय कर्तव्यं धर्मो वा, तत्। तेषां कृते का परिवेदना शोकः। गीतामनुसृत्य स्वार्थं विना कृतं कर्म सात्विकम्। राष्ट्रं संकटे वर्तत इति कृत्वा अद्यापि अस्मिन् समयेऽपि राष्ट्रहितं भारतस्य संरक्षणरूपं कार्यम् प्रधानम् वरं नास्ति किम्?।

(हिन्दी)

भाई, (भगवद्गीता को याद करो।) - जो आप्त लोग सत्य (स्वधर्म) का विरोध करते हैं उन के प्रति कोई शोक नहीं करना चाहिए। स्वार्थ को मन में न रखकर किये हुए कार्य को सात्विक कर्म कहते हैं। आज की घड़ी में राष्ट्र का कार्य ही प्रधान है। (राव को यह सत्कर्म करने दीजिए)।

आरक्षकाणां स्वगृहेऽपि चौराः

स्वसैन्यमध्येऽप्यरिगुप्तचाराः।

उदारसत्वस्य कुलेऽपि क्षुद्राः

त्रीण्येव दुःखाय, कुतो यशः स्यात्?।।२३१।।

(संस्कृतटीका)

मस्तानी अप्रस्तुतरूपेण प्रस्तुतार्थं व्यंजनया सूचयति - "बन्धुवर, आरक्षकाणां नगररक्षकाः, तेषामपि गृहे चौराः। युद्धे वर्तमानस्य सैन्ये सेन्तयाम् अरीणां शत्रूणाम् गुप्ताश्च ते चाराश्च शत्रूणां गुप्तचराणां गुप्तरूपेणावस्थानम्। बाजीरावसदृशस्य उदारसत्वस्य औदार्यगुणोपेतस्य। क्षुद्राः कृपणाः नीचा वा। दुःखाय कष्टोत्पादका नराः। यशः साफल्यं कुतः? अप्रस्तुतप्रशंसा।

(हिन्दी)

भाई, मेरे लिए ये तीन तथ्य कष्ट देते हैं: एक तो नगररक्षकों के घर में चोर, युद्धरत किसी वीर के अपने सैन्य में शत्रु के गुप्तचर तथा (बाजीराव जैसे) उदार अन्तःकरणवाले महान् व्यक्ति के घर में क्षुद्र लोग, ये तीनों दुःख देनेवाले हैं। तब भला यश कैसे मिल सकता है?

तप्तं रसं स्वोरसि धारयित्वा
करोति पृथ्वी प्रकृतिं फलाढ्याम्।
यथा न विद्युत्, जलमेव मेघात्
जनस्तथा शं लभते हि रावात्'।।२३२।।

(संस्कृतटीका)

मस्तानी वदति - पृथिव्या उपकारकत्वमेव। पृथ्वी धरा तप्तं रसं अग्निरसम्। फलैः शस्यादिभिः आढ्याम् सम्पन्नां प्रकृतिं सृष्टिम्। सोपकारमेव कुरूत इति भावः। मेघात् न विद्युत् तडित्, अपि तु जलम् वर्षाजलम्। तथैव जनः लोकः रावात् संरक्षकरूपात् तस्मात् शं कल्याणम् लभते।

(हिन्दी)

पृथ्वी भी कैसी उपकारक होती है, देखो। पृथ्वी के उदर में कितनी आग का रस उबलता है, किन्तु पृथ्वी धनधान्य से सृष्टि को सम्पन्न बनाती है। जिस प्रकार मेघ से बिजली नहीं, अपितु वर्षाजल की लोग अपेक्षा करते हैं, उसी प्रकार संरक्षक राव से कल्याण की प्राप्ति लोगों को होती है।'

बन्धुः प्रियो राजनये प्रवीणः
स आहतस्तद्वचसा चिमाजिः।
सेनाबलं व्यर्थमभूत् तदीयम्
मनोबलेनैव जयन्ति नार्यः।।२३३।।

(संस्कृतटीका)

प्रियः बन्धुः रावस्य भ्राता। राजनये राजनीतिविषये। तस्याः मस्तान्याः वचसा आहतः। प्रताडितः। तदीयं चिमाजेः व्यर्थम् प्रभावहीनम्। मनसः चेतसो बलं शक्तिः तेन। मनःशक्तिकारणात्। अबला जयन्तीत्यर्थः। अर्थान्तरन्यासः।

(हिन्दी)

बाजीराव के प्रिय भाई और राजनीति में निपुण चिमाजी आप्पा मस्तानी के वचनों से आहत हुए। यहाँ उनके सैन्यबल का भी कोई उपयोग नहीं था। अपने मनोबल से महिलाओं की जीत होती है। (मस्तानी का मनोबल कमजोर नहीं था)।

आप्तप्रदत्तं वचनं समाप्तम्
न तद्वचो वृश्चिक-दंश एव।
एकाकिनी सा सहते स्म दुःखम्
स्त्रीभिर्हि दुःखं मनसैव सह्यम्।।२३४।।

(संस्कृतटीका)

आप्तैः जनन्यादिभिः प्रदत्तम् प्रशिक्षितम् चिमाजिं प्रति। तद्वचः तस्य चिमाजेः वचः सम्भाषणं न, अपितु तद् वृश्चिकस्य दंश एव। वृश्चिकदंश इव विषाक्तम् पीडाजनकंच। एकाकिनी वियोगे स्थिता मस्तानी। मनसैववान्तःकरणेनैव सह्यम् कथंचित् सह्यते स्त्रीभिः। अपह्नुतिरलंकारः। अर्थान्तरन्यासश्च।

(हिन्दी)

सगे-सम्बन्धियों द्वारा चिमाजी को सिखाये गये वचन अब समाप्त हो गए। वे चिमाजी के वचन नहीं थे, अपितु बिच्छू का दंश ही था। वियोग में मस्तानी इस प्रकार पीड़ा सहती रही थी। नारियाँ अपना दुःख मनोबल से ही सह लेती हैं।

मार्गे गिरेः प्रस्तरभेदनेऽपि
शान्ता सरित् सा क्षमते तु वेगात्।
शमात्मना भक्तिपरायणापि
तदात्मशक्त्या तु जितश्चिमाजिः।।२३५।।

(संस्कृतटीका)

सरितः नद्याः मार्गे प्रवाहः – अवरोधकानां प्रस्तराणां पाषाणानां भेदने विदारणे। शान्ता सरित् नदी। वेगात् प्रवाहस्य। शमः शान्तिः आत्मबलेन सा भक्तिपरायणा। तदात्मशक्तेः तस्या मस्तान्या आत्मनः शक्तेः बलात्। दृष्टान्तः।

(हिन्दी)

यदि कोई पहाड़ बीच में आड़े आता है तो शान्ति से बहनेवाली नदी भी अपने वेग से उस पहाड़ की चट्टानों को तोड़ देती है। उसी प्रकार शान्ति के साथ अपनी भक्ति में मग्न मस्तानी ने अपनी आत्मा की शक्ति से (कठोर) चिमाजी को भी हरा दिया।

श्रुत्वा तदीयं वचनं मनस्वी
हतप्रभोऽभूत् स तु राव-बन्धुः।
दृढप्रतिज्ञामवगम्य तस्याः
प्रत्यागतो वासगृहं चिमाजिः।।२३६।।

(संस्कृतटीका)

तदीयं मस्तान्याः! मनस्वी स्वाभिमानशीलः। हतप्रभः विगलितकान्तिः। तस्याः नस्तान्याः दृढा चासौ प्रतिज्ञा च, ताम् दृढनिश्चयम्। वासगृहं स्वभवनम्। प्रत्यागतः प्रतिनिवृत्यागतः।

(हिन्दी)

उस स्वाभिमानी राव-बन्धु चिमाजी आप्पा ने मस्तानी के वचन सुने। उसके वचनों से चिमाजी हतप्रभ रह गया। मस्तानी के दृढ़ निश्चय को देखकर अपने भवन में वापस आ गया।

मस्तानि-निर्वासनरूप-कार्ये
माता च बन्धुः सफलौ न जातौ।
रावार्पितायाः हृदि निश्चयोऽस्याः
हेतुर्दृढं प्रेम हि निश्चयस्य।।२३७।।

(संस्कृतटीका)

मस्तान्याः निर्वासनं पुण्यनगराद् बहिःप्रेषणरूपम्। माता राधाबाई बन्धुः चिमाजिश्च। अस्याः मस्तान्याः। दृढमविचलं प्रेम। अर्थान्तरन्यासः।

(हिन्दी)

मस्तानी को पुणे नगर से निकालने के (षडयंत्ररूप) कार्य में राव की माता राधाबाई और भाई (चिमाजी) सफल नहीं हुए। मस्तानी राव के प्रति समर्पित थी, अतः उस का निश्चय दृढ़ था। दृढ़ प्रेम निश्चय का कारण होता है।

एकाकिनी प्रोषितभर्तृका सा
संकीर्णधीसंकुलिते कुलेऽस्मिन्।
तस्यास्तु निष्कासनमीहमानाः
निष्कासने रावरतेर्हताशाः।।२३८।।

(संस्कृतटीका)

अन्यदेशे भर्ता यस्याः सा - वियोगिनी नायिकेव तस्मिन्, स्वजनाः केचिदित्यर्थः। तस्याः मस्तान्याः। संकीर्णा क्षुद्रा धीः बुद्धिः तया संकुलिते व्याप्ते कुले कुटुम्बे। पेशवावंश इत्यर्थः। रावे रतिःप्रेम। हता आशा येषां ते निराशाः जाताः।

(हिन्दी)

वियोगिनी नायिका के समान मस्तानी अकेली वहाँ रहती थी। (उस समय) पेशवा के परिवार के कुछ क्षुद्र लोग उसको वहाँ से बाहर भिजवाने की इच्छा रखते थे। किन्तु श्रीबाजीराव का प्रेम उसके मन से निकाल नहीं सके। बाजीराव के मन से भी उसका निष्कासन सम्भव नहीं था। इसीलिए वे निराश हुए।

रावस्तु पुण्येऽपि विलासमग्नस्
तथापि राष्ट्रस्य कृतेऽस्य चिन्ता।
सौधे पताकास्य विराजतेऽत्र
यशःपताकास्य गता सुदूरम्।।२३८।।

(संस्कृतटीका)

पुण्ये पुण्यपत्तने। मस्तान्या सह विलासे मग्नः रतिक्रीडायाम्। राष्ट्रस्य भारतस्य कृते परचक्राद् रक्षणं कर्तव्यमिति चिन्ता। पुरे नगरे। सौधः शनिवारवाडा-नामा प्रासादः, अस्मिन् तस्य यशसः कीर्तेः पताका ध्वजः। रूपकम्।

(हिन्दी)

पुणे नगर में बाजीराव जब रहते थे तब वे मस्तानी के साथ विलास में मग्न हो जाते थे, तथापि उनके मन में भारत राष्ट्र का संरक्षण करने की चिन्ता भी रहती थी, क्योंकि परचक्र बढ़ रहा था। नगर में उन के प्रासाद शनिवारवाडा पर उन की पताका फहरा रही थी, और उनके यश की पताका सारे भारत में दूर तक पहुँच चुकी थी।

शत्रुप्रदेशेषु जितेषु सोऽयम्
तया विलासार्पित-मानसोऽभूत्।
गृहे रणे वाप्रतिबाध्यशक्तिः
सौन्दर्य-सामर्थ्य-गुणान्वितोऽभूत्।।२४०।।

(संस्कृतटीका)

शत्रूणाम् अरीणाम् प्रदेशाः राज्यानि। सति सप्तमी। तया मस्तान्या सह। विलासे रतिक्रीडादिषु। अर्पितं मग्नः तत्परः। अप्रतिबाधा शत्रुभिः संघर्षे अप्रतिरोध्यमाना। न प्रतिबाध्यमाना - अप्रतिरोध्यमाना। सौन्दर्यं चारुत्वं सामर्थ्यं शक्तिशालित्वम्। द्वयोरपि गुणयोश्च तस्मिन् रावे समन्वयो बभूवेत्यर्थः।

(हिन्दी)

शत्रुओं के प्रदेशों को जीतने के अनन्तर बाजीराव मस्तानी के साथ विलास में मग्न हो जाते थे। घर में तथा रण में उनको चुनौती देनेवाला कोई नहीं था। सौन्दर्य (स्वयं रूपवान् होने से) और पराक्रम इन दोनों का (सुन्दर) समागम उनमें था।

उद्यान-हर्म्योपवनेषु रावः

रत्यर्पितः शत्रुकृते तु वीरः।

लताजलस्रोतश्रियापि रम्यो

न पर्वतः प्रस्तरतां जहाति।।२४१।।

(संस्कृतटीका)

मस्तानी-सहवासे मृदुस्वभावोऽपि रावः शत्रूणां कृते वीर इति कविर्वर्णयति - उद्यानमिति। हर्म्यः प्रासादः। रतिविषये तस्याः प्रेमभावे। जलस्य स्रोतः प्रवाहः तस्य श्रिया शोभया रम्यः सुन्दरोऽपि पर्वतः प्रस्तरतां पाषाणात्मकं रूपं न जहाति। दृष्टान्तः।

(हिन्दी)

उद्यान, प्रासाद, उपवन आदि स्थानों पर मस्तानी के साथ विलास कर रहे राव शत्रुओं के लिए शूर योद्धा भी थे। झरनों तथा लताओं के कारण रमणीय पर्वत अपने अंदर की पाषाण जैसी दृढता नहीं छोड़ता।

सौंदर्यमस्यास्तु निमित्तमात्रम्
न भोगनष्टा, रतिराप वृद्धिम्।
राधेव सा, कृष्णसमोऽपि रावो
द्वयस्य चैकः स हि चिद्विलासः।।२४२।।

(संस्कृतटीका)

निमित्तमात्रम् संयोगतः कारणीभूतम्। भोगेन-विलासेन रतिक्रीडया वा नष्टा न। रतिः वृद्धिंगता। सा मस्तानी। तस्याः कृष्णः आराध्यदेवः, तत्समो रावः बाजीरावः। चिद्विलासः चैतन्यस्य लीला। तयोराध्यात्मिकं प्रेमेत्यर्थः। उपमा।

(हिन्दी)

मस्तानी का सौन्दर्य तो एक (बाहरी) निमित्त मात्र था। उन दोनों का प्रेम भोग-विलास से नष्ट नहीं हुआ। वह बढ़ता ही गया। भगवान् श्रीकृष्ण के समान बाजीराव के प्रति राधा के समान मस्तानी का प्रेम था। दोनों का एक विलास था और वह चैतन्यमय था।

सा रावबाहुद्वयबन्धनेऽपि
मुक्तिं विना ब्रह्मसुखे निमग्ना।
मिथ्याखिलं विश्वमिदं तु मेने
मायापि किं ब्रह्मपदे न लीना? ।।२४३।।

(संस्कृतटीका): सा मस्तानी रतिक्रीडायाम्। रावस्य बाहुद्वय-बन्धनेऽपि तस्य आलिङ्गनरूपबन्धनेऽपि मुक्तिं तस्य आलिङ्गनाद्दूरीभवितुं, पक्षे मुक्तिं मोक्षं विना। ब्रह्मसुखं परमात्मनः आनन्दं, पक्षे ब्राह्मणस्य रावस्य सहवास-सुखम्। ब्रह्मानन्देऽखिलं विश्वं चराचरं जगत् मिथ्या असदिति योगी मनुते। सापि तत्र तेन सह वर्तमाना विश्वं नैव मेने सत्यमिति, ब्रह्मानन्दनिष्ठत्वात्। माया अविद्या ब्रह्मपदे लीना विलीना भवत्येव। एकमेवाद्वितीयं ब्रह्मेति न्यायेन नापरा मायास्ति, अपि तु सा ब्रह्मण्येव लीना, तथा मोक्षं विनापि मस्तानी ब्रह्मसुखं तस्य बाहुपाशेऽनुभवति स्मेत्यर्थः। विरोधो व्यज्यते।

हिन्दी - वैसे वेदान्त के अनुसार बन्धन में मुक्ति का आनन्द कैसे मिलता है? किन्तु मस्तानी को बाजीराव के बाहुपाश के बन्धन में मुक्ति के विना ब्रह्मसुख मिल रहा था। जिस प्रकार ब्रह्मानन्द की प्राप्ति होने पर सारा विश्व मिथ्या लगता है, उसी प्रकार मस्तानी को उस ब्राह्मणश्रेष्ठ के सहवास में शेष जगत् का भान नहीं रहता था। क्या, माया भी ब्रह्मपद में लीन नहीं होती है? (मुक्ति के बिना ब्रह्मपद का आनन्द प्राप्त होना आश्चर्य की बात है)।

मुळा-मुठा-सङ्गमसङ्गतां सः
प्रसङ्ग-सङ्गीत-कलादिमुग्धाम् ।
कुलेऽन्यरामा अपि पीडयन्तीम्
मदालसां तां प्रमदां चकार ।।२४४।।

(संस्कृतटीका)

मुळा तथा मुठा नाम्ना प्रसिद्धं नदीद्वयं पुण्यपत्तने, तयोः सङ्गमे सङ्गता-क्रीडादि-सहवास-प्राप्ता, गायन्ती च ताम्। कुले पेशवाकुले, अन्या माता तथा अन्याः स्त्रियः ताः पीडयन्तीम् मत्सरभावदुःखेन। तां सुन्दरीं वीक्ष्यान्या रमण्यः पीडामनुभवन्ति स्म। मदेन यौवन-मदेन, आलस्ययुक्तां ताम् मस्तानीकान्तां, प्रमदाम् प्रकृष्ट-मदयुक्तां चकार बाजीरावः।

(हिन्दी)

(पुणे नगर की) मुला और मुठा नाम की नदियों के संगम में क्रीड़ा में साथ हुई, प्रसंग के अनुसार प्रस्तुत संगीत, नृत्य आदि कलाओं से युक्त, पेशवाकुल की अन्य रमणियों को भी मत्सर भाव से पीड़ित करने वाली मद से अलसाई हुई मस्तानी के यौवन-मद को बाजीराव ने अधिक बढ़ाया।

वनोपकण्ठे निजकण्ठलग्ना
सा लज्जमानापि समर्पिताभा।
एकान्तभङ्गं न चकार चन्द्रो
नदी-विहारे तु स एव साक्षी।।२४५।।

(संस्कृतटीका)

वनस्य अरण्यस्य, उपकण्ठम् उपवनम्। नगरसमीपेस्थिते उपवने। स्त्री-स्वभावात् संकोचमनुभवन्ती, तथापि समर्पिता आभा कान्तिः यया सा, श्रीबाजीरावाय कान्तिप्रदाभूत्। तयोः एकान्तस्य भङ्गं तयो रतिक्रीडायां विश्रब्धहानिं च। अपि च स एव चन्द्रः। तयो रतिक्रीडायाम् चन्द्रो न बाधकः, अपि तु सम्वर्धको बभूव। साक्षी एक एव प्रत्यक्षदर्शी। विभावना।

(हिन्दी)

नगर के समीप स्थित उपवन में बाजीराव के कण्ठ में लगी वह लज्जा से संकोच पाकर भी अपनी कान्ति (निःसंकोच रूप में) पति को समर्पित करनेवाली थी। चन्द्रमा ने उन दोनों के एकान्त का भङ्ग नहीं किया। (प्रत्युत) वह उनके नदी-विहार का (एकमात्र) साक्षी था। वह तो उनकी क्रीड़ा के लिए पोषक था।

स्वर्गाङ्गनालिङ्गनसौख्यभाजो
देवा वहन्ति स्म न गर्वभावम्।
शत्रुञ्जयस्यास्य गृहागतस्य
प्रिया-विलासेन हतप्रभास्ते।।२४६।।

संस्कृतटीका)

स्वर्गाङ्गनाः अप्सरसः। तासां आलिङ्गनस्याश्लेषस्य सौख्यं भजन्ते ते। गर्वभावं अप्सरोभिर्विलासजन्यं गर्वम् प्रतिष्ठाभावम्। जयति अरीणां विजेता, तस्य बाजीरावस्य, गृहागतस्य पुण्यपत्तने स्वमहालये प्रत्यागतस्य। प्रिया मस्तानी, तया सह विलासः रतिक्रीडयाहता निवृत्ता प्रभा तेजो येषां ते निस्तेजसोऽभवान्। विशेषोक्तिर्व्यतिरेकः। अतिशयोक्तिश्च।

(हिन्दी)

स्वर्ग की अप्सराओं के साथ आलिङ्गन का सुख पाने वाले देवताओं को गर्व का अनुभव नहीं हुआ क्योंकि, (इधर) शत्रु पर विजय पाने के उपरान्त घर आनेवाले बाजीराव का मस्तानी के साथ रतिविलास देखकर वे हतप्रभ रह जाते थे।

रामां समाश्लिष्य मनोरमां ताम्
तद्बन्धने मुक्तिसुखं स लेभे।
मेघेषु चन्द्रो विटपे च पुष्पम्
एकान्तभङ्गो न तयोस्तु जातः।।२४७।।

(संस्कृतटीका)

रामां रमणीं मस्तानीं सः बाजीरावः। तस्या बन्धनं बाहुपाश आलिङ्गनम् तस्मिन्। मुक्तिं वियुक्तिम्। मेघेषु चन्द्रः विटपे पर्णे पुष्पम्। तयोः राव-मस्तान्योः। एकान्तस्य निभृत-केलि-कृते। विरोधाभासः।

(हिन्दी)

उस सुन्दर रमणी (मस्तानी) के बाहुपाश के बन्धन के सुख को राव मुक्ति का सुख ले रहे थे। बादलों में चन्द्र और पत्ते में पुष्प छुप गये और इस प्रकार उन्होंने राव और मस्तानी के सहवास को एकान्त का सुख प्रदान किया।

वराङ्गनां वीरवराय दत्ताम्
केलिप्रसङ्गे नितरां सुरम्याम्।
अनङ्गसङ्गानुमताङ्गकान्तिम्
आलिङ्ग्य कान्तां न स मुक्तिमैच्छत्।।२४८।।

(संस्कृतटीका)

वराणि उत्तमानि अङ्गानि अवयवाः यस्याः सा, चारुगात्री, ताम्। वीरवराय - श्रीबाजिरावाय। दत्तामुपहाररूपेण इत्यर्थः। केलि-प्रसङ्गे रतिक्रीडा-समये। अनङ्गः - कामदेवः, तस्य सङ्गः - संयोगः तेन अनुमता - अनुज्ञाता कान्तिः सौन्दर्यं यस्याः, ताम्। मुक्तिं बन्धनाद् विमोचनं ब्रह्मप्राप्तिमिति वा। अनुप्रासः। रतिः स्थायी भावः।

(हिन्दी)

सुन्दर अवयवों से युक्त, वीरश्रेष्ठ बाजीराव को प्रदत्त, रति-क्रीडा के समय अधिक सुन्दर दिखाई देनेवाली, कामदेव के संयोग से सुन्दर अंगकान्तिवाली रमणी मस्तानी को आलिंगन देकर श्री बाजीराव उस से मुक्ति नहीं चाहते थे। (मोक्ष भी नहीं।)

सा रावबाहुद्वयबन्धनेऽपि
शुद्धां च तद्ब्रह्मपदोपलब्धिम्।
आनन्दरूपानुभवस्य बन्धाद्
आलिङ्गनान्मुक्तिमियं तु नैच्छत्।।२४६।।

(संस्कृतटीका)

सा मस्तानी बाहोः द्वयं तस्य बन्धात्। वेदान्तपक्षे द्वैतरूपबन्धात्। तस्य ब्रह्मपदं ब्राह्मणत्व- स्थानम्। अपि च ब्रह्मणः परमचैतन्यस्य उपलब्धिम् प्राप्तिम्। बन्धनेऽपि ब्रह्मानन्दप्राप्तिरिति विरोधः। किञ्च आनन्दरूपोऽनुभवः आलिंगनसौख्यम्, तस्य बन्धने सा मुक्तिं वियोगं नैच्छत्, मोक्षं नैच्छदिति विरोधोऽपि।

(हिन्दी)

मस्तानी को भी राव के दोनों बाहों के बन्धन में ब्राह्मण पति के साथ रहने का आनन्द प्राप्त हुआ जैसे द्वैतता में भी ब्रह्म परमानन्द की प्राप्ति हो रही थी। और इस आलिंगन के बन्धन में भी वह वियोग नहीं चाहती थी। जैसे संसार के बन्धन में रहनेवाला कोई व्यक्ति ब्रह्मानन्द प्राप्त करने पर भी मोक्ष नहीं चाहता है। (यह आश्चर्य है)।

किमक्षिणी द्वेऽपि न दृष्टिरेका?
किं नोष्ठयुग्मे मधुरत्वमेकम्?।
स्तनद्वयेऽन्तःकरणं तु चैकम्
किं द्वैतमद्वैतमिति प्रवादः?।।२५०।।

(संस्कृतटीका)

कविर्मस्तानीं वर्णयति किमिति। अक्षिणी मस्तान्या नेत्रद्वयेऽपि दृष्टिः कटाक्षवीक्षणं तु एकमेव। तस्या ओष्ठद्वयेऽधरौ द्वौ तथापि तयोर्मधुरत्वम् चुम्बनामृतमेकमेव। तथैव तस्याः स्तनद्वयेऽपि तदाभ्यन्तरस्थं अन्तःकरणं हृदयं त्वेकमेव। अत एव दर्शनशास्त्रे द्वैताद्वैतयोर्मध्ये व्यर्थ एव प्रवादः शास्त्रार्थरूप इति यावत्। दृष्टान्तः।

(हिन्दी)

मस्तानी की आँखे दो हैं, किन्तु उसका कटाक्ष तो एक ही है। उस के सुन्दर होंठ दो हैं, किन्तु उन का अधरामृत तो एक ही है। और उस के दो उरोज हैं, किन्तु उनके भीतर जो हृदय है, वह तो एक ही है। तो फिर दार्शनिकों के द्वैतवाद और अद्वैतवाद का विवाद व्यर्थ है। (द्वैत में अद्वैत के दर्शन इस युवती में होते हैं)।

मेघो महीं मोहमयीं करोति
लतां सनाथां विदधाति वृक्षः।
स बाजिरावः करपाशबद्धां
चकार मस्तानिमिमां मनोज्ञाम्।।२५१।।

(संस्कृतटीका)

मोहमयीं सुन्दराभाम् सनाथां प्रियेण संयोगवतीम्। करपाशः आलिङ्गनम्। तेन बद्धां गृहीताम्। मनोज्ञाम् मनोहारिणीम्। दृष्टान्तः।

(हिन्दी)

कोई मेघ (वर्षा से) पृथ्वी को सुन्दर रूप प्रदान करता है और वृक्ष लता को संयोग से युक्त करता है। बाजीराव ने अपने बाहुओं में मस्तानी को लिया और उसे (अधिक) सुन्दरता प्रदान की।

अपाङ्गनेत्रेङ्गितविभ्रमैः सा
पुण्येऽपि कान्तिप्रद-दामिनीव।
एकान्तकान्तान्तिककामिनी च
विश्रब्धरम्या प्रमदा भवन्ति।।२५२।।

(संस्कृतटीका)

अपाङ्गनेत्राभ्याम् दत्तैः कटाक्षैः इङ्गिताः सूचिताः विभ्रमाः सुन्दरभावाः तैः। पुण्ये नगरेऽपि कान्तिं ददातीति कान्तिप्रदा, सा च दामिनी च तडिल्लता इव। एकान्ते सर्वजनरहिते। कान्तस्य रावस्यान्तिकं सहवासं तस्य कामिनी कामयमाना वनिता। विश्रब्धे एकान्ते प्रकर्षेण मदो यासां ताः रामा रन्तुं योग्या भवन्ति। अर्थान्तरन्यासः।

(हिन्दी)

उस मस्तानी ने अपने कटाक्षों से नारीसुलभ विभ्रमों को प्रकट किया। वह पुणें में आकर भी कान्तिप्रद विद्युल्लता के समान कान्ति से दमकंती थी। प्रिय राव के साथ एकान्त में सहवास की उसे कामना रहती थी। एकान्त में ही प्रमदाएँ रममाण होती हैं।

चन्द्रे सुरम्येऽपि यथा कलङ्कः
फणी यथा चन्दनवृक्ष-मूले।
रावस्य देहे समरक्षतानि
दृष्टानि तस्याश्च नखक्षतानि।।२५३।।

(संस्कृतटीका)

सुरम्ये रमणीयेऽपि। फणी - नागः। क्षतानि - व्रणाः। समरे युद्धे शत्रुभिः कृतानि। तस्याः मस्तान्याः देहेऽपि नखक्षतानि रतिविलाससमये जातानि। वल्लभेन रावेणेति यावत्। शृङ्गाररसो व्यज्यते। दृष्टान्तश्च।

(हिन्दी)

सुन्दर होने पर भी चन्द्रमा पर कलंक, सुगंधित होने पर भी चन्दनवृक्ष के तले नाग तथा वीर पुरूष राव के शरीर पर युद्ध के समय हुए घाव जैसे दिखाई देते थे उसी प्रकार मस्तानी के सुंदर देह पर भी प्रिय द्वारा प्रदत्त नख-क्षत दिखाई दिये।

'दिवे-दरी'ति प्रथितेऽद्रिपादे

सरोवरे श्वेतसरोजरम्ये।

क्रीडन् तरूण्या तरणी-विहारे

चकार पुष्पैः स च केश-भूषाम्।।२५४।।

(संस्कृतटीका)

मस्तान्या सह विलासं कुर्वतः रावस्य वर्णनम् - दिव इति - 'दिवे-घाट' इति नाम्ना प्रथिते प्रसिद्धे, अद्रेः पर्वतस्य पादे चरणे। श्वेतानि सरोजानि कमलानि, तैः रम्ये। सरोवरे जलाशये। मस्तानी-नाम्ना प्रसिद्धे। जले क्रीडन् रावः। तरूण्या मस्तान्या सह। तरणी नौका, तस्यां विहारः। केशेषु कुन्तलेषु। तस्या मस्तान्या इति यावत्। भूषां शोभाकरणम्।

(हिन्दी)

मस्तानी के साथ विलास करते हुए बाजीराव ने पुणे के पास 'दिवे घाट' नाम से प्रसिद्ध पर्वत की तराई में निर्मित सरोवर* जिसमें श्वेतकमल खिलते थे, मस्तानी के साथ जलक्रीडा की और नौका-विहार भी किया। राव ने मस्तानी के केशकलाप को फूलों से सुशोभित किया।

*जिसका नाम बाद में 'मस्तानी सरोवर' हो गया।

कामे विदग्धा स्मरतापदग्धा
किन्तु स्वयं ब्रह्म-पदानुरक्ता।
जना न जानन्ति रतिं तदीयाम्
मायाविनो ब्रह्मविदो कथं स्युः?।।२५५।।

(संस्कृतटीका)

कामे शृङ्गारे विदग्धा पण्डिता स्मरस्य कामस्य तापेन पीडया दग्धा पीडिता। विदग्धापि दग्धेतिविरोधः। माया अविद्या, सांसारिणी बुद्धिः। ब्राह्मणः पदं ए मचैतन्यस्य श्रीकृष्णस्य च पदयोः स्थाने, ब्रह्मानन्दे च, अनुरक्ता समर्पिता। ब्रह्म जानाति स ब्राह्मण इति न्यायेन ब्रह्मणि श्रीबाजीरावे ब्राह्मण-वीरे अनुरक्ता। तदीयां रतिं मस्तानी-प्रेमभावम्। मायाविनः संसारे धनादि-सर्वस्वं मन्यमाना जनाः। चैतन्य-स्वरूपानन्दस्य अनभिज्ञा अज्ञानयुक्ताः मायाभिहता भवन्ति ते ब्रह्मानन्दं न जानन्तीत्यर्थः। अर्थान्तरन्यासः।

(हिन्दी)

शृंगार में कुशल, कामदेव के ताप से पीड़ित वह मस्तानी ब्रह्मस्वरूप श्रीकृष्ण की भक्ति में तथा राव की प्रीति में मग्न थी। कुछ लोग उसकी प्रीति को नहीं समझ सके थे। (जो लोग) माया के चंगुल में ही फँसे रहते हैं, वे ब्रह्मानन्द को क्या जानेंगे?

राजप्रदेशादिनृपाग्रहं च
तथा च दिल्लीश्वर–दुर्बलत्वम्।
विज्ञाय दिल्लीपदजेतुकामं
जगाम रावं सचिवो नयज्ञः।।२५६।।

(संस्कृतटीका)

राजप्रदेशादीनां राजस्थानादिराज्यानां नृपाः, तेषामाग्रहं रावस्य स्वागतार्थमाग्रहः। दिल्लीश्वरः मोगल–पातशाहः तस्य तदानीं दुर्बलत्वम् शक्तिहीनत्वम्। विज्ञाय समीक्ष्य। दिल्लीं जेतुं कामयते, तं रावम्। सचिवः मन्त्री। रावस्येति यावत्। जगाम गतः। नयज्ञः राजनीतिज्ञः।

(हिन्दी)

एक दिन श्री बाजीराव से मिलने हेतु उनका राजनीति में धुरंधर सचिव आ गया। राजस्थान आदि राज्यों के राजाओं का राव के लिए उत्तर भारत में आने का आग्रह था और दिल्ली के बादशाह की कमजोर स्थिति को देखकर दिल्ली को जीतने की इच्छा श्री बाजीराव को भी थी।

उवाच रावं सचिवो – 'भवन्तम्
राजप्रदेशे प्रमुखाश्च भूपाः।
इच्छन्ति सम्मानयितुं स्वराज्ये
नेतारमिच्छन्ति सुखाय लोकाः।।२५७।।

(संस्कृतटीका)

कोऽपि रावस्य सचिवः तम् उवाद भवन्तम् रावम्। राजप्रदेशे राजस्थाने। प्रमुखाः जयपुरोदयपुरादीनां राजानः। स्वराज्ये सम्मानयितुं रावस्य सत्क्रियां कर्तुम्। लोकाः सुखाय रक्षणादिलाभाय नेतारं नेतृत्वम्। अर्थान्तरन्यासः।

(हिन्दी)

सचिव ने कहा –

'राजस्थान के प्रमुख (उदयपुर, जयपुर आदि के) राजा आप का सम्मान वहाँ उन के राज्य में करना चाहते हैं। लोग अपने सुख के लिए किसी नेता की इच्छा करते हैं।'

भवत्प्रतापाद् यवनास्तु भीता
राज-प्रदेशे तु नृपाः प्रसन्नाः।
दिल्लीश्वरः पारपराश्रितश्च
पराश्रितानां तु बलं हि भाग्यम्'।।२५८।।

(संस्कृतटीका)

सचिवः दिल्लीत्यादिविषयकं वृत्तं श्रावयति - भवतां रावाणाम् प्रतापात् पराक्रमात्। दिल्लीस्थ-यवनादयः पातशाहश्च। राजप्रदेशे राजस्थाने नृपाः उदयपुरादिषु प्रसन्नाः भवतां प्रतापात्। दिल्लीश्वरः पातशाहस्तु पारं स्थितस्य सीमायाः परदेशे स्थितस्य परस्य भारतशत्रोः आश्रितः अधीनः। परमाश्रयंते तेषां भाग्यमेव दैवमेव बलम्। न स्वतः शक्तिमत्त्वम्। अर्थान्तरन्यासः।

(हिन्दी)

सचिव ने राजस्थान-दिल्ली के विषय में जानकारी दी -

'आप के पराक्रम से यवन भयभीत हैं। किन्तु राजस्थान के राजा लोग आप के पराक्रम से प्रसन्न हैं। दिल्ली का बादशाह भारत-सीमा के पार से हमला करनेवाले हमलावरों पर निर्भर रहता है। जो दूसरों पर निर्भर रहते हैं उन का बल भाग्य ही होता है।'

श्रुत्वा च साचिव्यवचः स रावो
दिल्लीं विधातुं परचक्रमुक्ताम्।
मस्तानि-साकं स तु निर्जगाम।
वृत्रस्य नाशाय यथा महेन्द्रः।।२५६।।

(संस्कृतटीका)

सचिवस्य वचः वार्ताम्। परचक्रं परकीय - यवनेभ्यः। मस्तान्या सह। यथा वृत्रनाम्नः असुरस्य नाशाय महेन्द्रः इन्द्रः। उपमा।

(हिन्दी)

अपने सचिव की बात सुनकर राव मस्तानी के साथ सैन्य को लेकर (उत्तर भारत के लिए) निकल पड़े। उन्हें दिल्ली को परचक्र से मुक्त करने की इच्छा हुई। वृत्र का नाश करने के लिए इन्द्र के समान वे निकल पड़े।

सम्मानितोऽभूदुदये पुरेऽसौ
मेवाड़राज्ञा बहुमानपूर्वम्।
सिंहासने नैव साद रावो
यतः प्रतापस्य पदं पवित्रम्।।२६०।।

(संस्कृतटीका)

असौ बाजीरावः। उदयपुरे राजस्थाने उदयपुर-नगरे। मेवाड-प्रदेशस्य राज्ञा राणा-महाराजेन। बहुमानः प्रभूत-सम्मानः। आदौ सम्मानं कृत्वा। तत्र सम्मानार्थं स्थापिते सिंहासने। प्रतापस्य महाराणा- प्रताप-सिंहस्य पदं सिंहासनम्। राष्ट्रवीरं प्रतापं प्रति अत्यादरो व्यज्यते।

(हिन्दी)

उदयपुर में जाने पर मेवाड़ के राणा ने श्री बाजीराव का बड़ा सम्मान किया और (दरबार में) उन्हें सिंहासन पर बैठने के लिए निवेदन किया। किन्तु उस सिंहासन पर वे नहीं बैठे क्यों कि, यह महाराणा प्रताप का पवित्र सिंहासन था। इस प्रकार राणा प्रताप के प्रति उन्होंने अपना आदरभाव व्यक्त किया। (*'महाराणा प्रताप के सिंहासन पर मैं कैसे बैठ सकता हूँ'*- राव)

पुरे जयाख्येऽपि स मानमाप
ससाद सिंहासन एव रावः।
यतो हि राजा त्विह मोगलारेः
अधीनतो माण्डलिकः स आसीत्।।२६१।।

(संस्कृतटीका)

जयाख्ये पुरे जयपुरनगरे। सः बाजीरावः। माानं सम्मानम। तत्र स्थापिते सिंहासने। मोगलारेः मोगलश्च अरिश्च शत्रुश्च तस्य मोगल-पातशाहस्य। राजा अधीनः नियन्त्रणे माण्डलिकः राजमण्डलान्तर्गतः राजा। न स्वतन्त्रः।

(हिन्दी)

(आगे चलकर) जयपुर में भी राजा ने श्रीबाजीराव का सम्मान किया और दरबार में स्थापित सिंहासन पर बैठने के लिए निवेदन किया। राजा की अपेक्षा मन में थी कि उदयपुर की भाँति यहाँ भी राव सिंहासन पर नहीं बैठेंगे। किन्तु वहाँ श्री बाजीराव सिंहासन पर ही बैठ गये। क्योंकि, शत्रु मुगल बादशाह के जयपुर राजा माण्डलिक थे।

सम्मानितोऽसौ नगरे जयाख्ये
रावस्तु दिल्लीमथ जेतुमैच्छत्।
उवाच – 'दिल्ली पितुरेव लक्ष्यं
दिल्ली–जयेनैव स्वदेश–मुक्तिः।।२६२।।

(संस्कृतटीका)

उदयपुरानन्तरं राजस्थाने जयपुरे सम्मानितो रावः। अथ राजस्थानात् ततः। राव उवाच – 'पितुः पूर्वं बालाजी–विश्वनाथस्य लक्ष्यं जेतुं योग्यं स्थानम्। दिल्ली–जयेनैव स्वदेशस्य भारतस्य मुक्तिर्भवेत्। पूर्व–स्थापितस्य स्वराज्यस्य विस्तारो भविष्यतीत्यर्थः।

(हिन्दी)

राजस्थान में जयपुर नगर में राजा के द्वारा किये हुए सम्मान प्राप्त करने के उपरान्त बाजीराव ने वहाँ से दिल्ली को जीतने की इच्छा प्रकट की।

राव ने कहा –

'पूर्व में मेरे पिताजी का निशाना दिल्ली था। क्यों कि, दिल्ली जीतने पर ही भारत की मुक्ति संभव है।

दिल्ली जिता चेत् प्रमुखं पदं तत्
देशेऽन्यभूपा विजिता भवेयुः।
वृक्षस्य मूलं यदि छिन्नमादौ
सर्वास्तु शाखा निपतन्ति भूमौ'।।२६३।।

(संस्कृतटीका)

रावोऽग्रे उवाच - दिल्ली यदि जिता। दिल्ली भारते केन्द्रभूता। प्रधानं पदम् महत्वपूर्णं राज्यम्। देशे भारते अन्याः इतरे नृपाः माण्डलिकादयः। रावस्य प्रसिद्धं वाक्यम् - आदौ प्रथमतः वृक्षस्य मूलं छिन्नं नष्टं स्यात् तर्हि तस्य सर्वा शाखा भूमौ धरायां निपतन्ति विलीना भवेयुः। दृष्टान्तः।

(हिन्दी)

आगे राव ने कहा-

'अब यहाँ से दिल्लीपर हमला बोलना चाहिए। क्योंकि, दिल्ली सारे भारत में केंद्र में स्थित महत्वपूर्ण स्थान है। यदि दिल्ली को जीत लिया तो भारत के अन्य राजा भी अपने आप जीत लिए जाएँगे। यदि पहले वृक्ष का मूल नष्ट करेंगे तो उस की टहनियाँ भी अपनेआप धराशायी हो जाएँगी। (दिल्लीपर आक्रमण जरूरी है)।

दिल्ली तदा साक्रमिता च तेन
दिल्लीस्थदुर्गः परिवेष्टितश्च।
भीत्यागतो नैव तु पातशाहः
तस्थौ तु रावः बहिरेव दुर्गात्।।२६४।।

(संस्कृतटीका)

दिल्लीं जेतुकामेन रावेण दिल्लीराज्योपरि आक्रमणं कृतम्। तत्र दिल्लीस्थः दुर्गः। परिवेष्टितः तेन परित अवरोधः कृतः। मोगल-पातशाहः भीत्या दुर्गात् बहिः नागतः जुगोपात्मानम्। किन्तु रावः दुर्गस्य बहिः स्थितः। न दुर्गस्याभ्यन्तरे प्रविवेश।

(हिन्दी)

जयपुर से निकलकर राव ने अपना सैन्य लेकर दिल्ली पर धावा बोल दिया। वहाँ के दुर्ग को उन्होंने घेर लिया। तब दिल्ली का मोगल बादशाह ड़र गया और वह किले से बाहर नहीं आया। छुपकर बैठ गया। बाहर राव थे ही।

औरंगजेबस्य च बन्दिवासे
धृत्वैव गोपुच्छमतः प्रतिज्ञाम् ।
शाहुः स्वमात्रा वचनं च दत्वा -
'दिल्लीं न जेष्यामि', ततो विमुक्तः।।२६५।।

(संस्कृतटीका)

पूर्ववृत्तम् - दिल्लीश्वर-पातशाहस्यौरंगजेबस्य औरंगाबाद-महालये स्वमात्रा सह बन्दिवासे कारागृहे बद्धः शिवाजि-पौत्रः शाहुः बालकः गोपुच्छं पवित्रं करे धृत्वा गृहीत्वा प्रतिज्ञाम् शपथम्। दिल्लीं तत्रस्थ-राज्यं न जेष्यामीति वचनम्। विमुक्तः मुक्तिमाप।

(हिन्दी)

अतीत में मुगल बादशाह औरंगजेब के औरंगाबाद के महल में अपनी माँ के साथ सातारा के बाल राजा और शिवाजी के पौत्र शाहू कैद में थे, वहाँ (औरंगजेब की शर्त के अनुसार) गोमाता की पूँछ पकड कर माँ और शाहूने प्रतिज्ञा की और वचन दिया कि, दिल्ली के मुगल बादशाह के तख्त पर वे हमला नहीं करेंगे, तब उन्हें औरंगजेब के कैद से मुक्ति मिली थी।

टीप - उस समय उत्तर भारत के राजाओं में परचक्र के खिलाफ एकजुटता नहीं थी।

मल्लारिरावादिविमर्शमाप्य
स्वस्वामिनस्तद्वचनं विचार्य।
दूरं च केन्द्रं खलु पुण्यपुर्याम्
दिल्लीमजित्वैव गतः स पुण्यम्।।२६६।।

(संस्कृतटीका)

स्वस्य रावस्य स्वामिनः शाहूराजस्य तत् गोपुच्छधारणसमये प्रदत्तम्। मल्लारिरावादिभिः मल्लारराव-होलकर-पवार-शिन्दे-प्रभृतिभिः विमर्शं कृत्वा। स्वस्य रावस्य स्वामिनः सातारा-नरेशस्य तत् औरंगजेबसमक्षं मुक्त्यर्थं बन्दिवासे स्थितस्य वचनं दिल्लीं न जेष्यामीति स्मृत्वा। तथैव पुण्यं दिल्लीतः दूरंचेति। अजित्वा विजयं न प्राप्तवान् सः रावः।

(हिन्दी)

दिल्ली के किले को चारों तरफ से घेर लेने पर राव ने मल्हारराव होलकर, पवार, शिंदे आदि सेनापतियों के साथ विचार-विमर्श किया, अपने स्वामी शाहूराजाने औरंगजेब को (गोमाता की पूँछ पकड़ कर) दिल्ली न जीतने के लिए मुक्तिपूर्व दिया वचन याद किया और सोचा पुणे केन्द्र की दृष्टि से 'दिल्ली दूर है' (जीत को स्थायी बनाना कठिन कार्य होगा) अतः दिल्लीपर विजय प्राप्त न कर वहाँ से पुणे को वे लौट आए।

साकं तया सोऽत्तर-भारतेऽपि
जित्वापि शत्रून् स जितस्तया सः।
तस्या रतिर्युद्ध-विशारदाय
कदापि बाधां न ददौ च युद्धे।।२६७।।

(संस्कृतटीका)

मस्तान्या सह - उत्तर-भारतेऽपि बुन्देलराज्य-मित्रत्वेनोत्तर-भारते दिल्लीपर्यन्तम् सुकरः प्रवेशस्तस्येत्यर्थः। जित्वापि जितः मस्तानी-प्रेम्ण तस्या अधीनो बभूव। रतिः प्रेम। युद्धे रणे विशारदः निपुणः, तस्मै श्रीबाजिरावाय बाधां विघ्नम्। विरोधाभासः विशेषोक्तिश्च।

(हिन्दी)

मस्तानी के साथ उत्तर भारत में (प्रवेश कर) श्री बाजीराव ने शत्रुओं को जीत तो लिया, फिर भी मस्तानी के प्रेम से वह पराजित हो गये। (उसके वे अधीन रहे।) युद्ध में निपुण बाजीराव के लिये मस्तानी का प्रेम बाधक नहीं बना।

स्वप्नं च यत् श्रीशिवराजचित्ते
श्रीबाजिरावस्य हृदि स्थितं तत्।
मस्तानियोगात् सुखदः प्रवेशो
जातश्च तस्योत्तर-भारतेऽपि।।२६८।।

(संस्कृतटीका)

स्वप्नं छत्रपति-शिवाजीमहाराजस्य चित्ते मनसि हिन्दवी-स्वराज्य-रूपं स्वप्नं तत्। मस्तानियोगात् - तया सह सम्बन्धेन। श्री छत्रसालस्य-मित्रत्व-कारणेन।

(हिन्दी)

श्री शिवाजी महाराज ने देखा हुआ (हिंदवी स्वराज्य का) सपना श्री बाजिराव के मन में था। मस्तानी से संबंध करने के कारण उनका उत्तर-भारत में प्रवेश सुखपूर्वक हुआ। (श्रीछत्रसाल भी एक राष्ट्रीय वीर थे।)

श्रुत्वेति दिल्लीश्वरभीतिवार्ताम्

भीतास्तदा माण्डलिका बभूवुः।

पुण्ये तु लोकैर्मनसार्चितोऽसौ

जातो विलासार्पितमानसश्च।।२६६।।

(संस्कृतटीका)

दिल्लीं विहाय पुण्यपत्तने समागते रावे - स्वराष्ट्रे भारते दिल्लीश्वरः भीत्वा दुर्गे स्थित इति श्रुत्वा माण्डलिकाः तदधीनाः अन्ये च नृपाः भीताः। पुण्ये पुण्यपत्तने मनसा हृदयेनार्चितः पूजितः सः। विलासेऽर्पितं प्रदत्तं मानसं येन सः।

(हिन्दी)

राव द्वारा दिल्ली पर धावा बोलने तथा बादशाह ड़र कर किले में छुप गया यह वार्ता सुनकर बादशाह के आश्रित राजा लोग भयभीत हो गए। उधर पुणे में लोगों ने उनका हार्दिक अभिनन्दन किंया। राव पुणे में विलास में समर्पित हो गए।

तदैकदा गुप्तचरस्तु रावम्
जगाद वृत्तस्य निवेदनार्थम्।
'कष्टप्रदं श्रावयितुं च वृत्तम्
काले सुखाढ्येऽपि समादिशन्तु।।२७०।।

(संस्कृतटीका)

तदा कान्ता-विहारसमये पुण्यपत्तने। गुप्तचरो बाजीरावस्य। प्रणिधिः सुखेन - समृद्धं पूर्णम् वा, तस्मिन् काले। कष्टप्रदं चिन्ताजनकम्। समादिशन्तु - आदेशं कुर्वन्तु।

(हिन्दी)

(पुणे में विलासमय जीवन व्यतीत करने वाले) *श्रीबाजीराव को उनके गुप्तचर ने आकर अपनी वार्ता सुनाने के लिए कहा -*

'स्वामिन्। कष्ट देने वाली एक वार्ता है, ऐसे सुखप्रद समय में उसे सुनाने के लिए मुझे आज्ञा दीजिए।

श्रीमन् कथं वीरकृते तु कष्टम्?
कष्टप्रदं शत्रुकृतेऽस्तु वृत्तम्।
वीराय कष्टप्रद-शत्रुकृत्यम्
पराक्रमस्यावसरं ददाति।।२७१।।

(संस्कृतटीका)

गुप्तचरः उवाच- श्रीमन्, भवादृशां वीराणां कृते कथं कष्टम् सन्त्रासः। कष्टं ददाति तत् कष्टप्रदं संत्रास-जनकम्। वृत्तं मया यन्निवेद्यते तत्। शत्रुकृते भवतां शत्रूणां कृते। स्ववचनं समर्थयति - कष्टप्रदं शत्रूणां कृत्यं अशुभं कार्यम्। पराक्रमस्य शूरत्वगुणस्य। अर्थान्तरन्यासः।

(हिन्दी)

किन्तु श्रीमन्, आप जैसे शूर पुरुष को कोई वार्ता कैसे कष्टप्रद हो सकती है? कष्टप्रद वार्ता शत्रु के लिए कष्टप्रद हो। यदि शत्रुओं द्वारा कोई कष्ट देनेवाला अशुभ कार्य होता है तो वीरपुरुष को वह पराक्रम दिखाने का अवसर प्रदान करता है। (आप के लिए वार्ता कष्टप्रद नहीं हो सकती)।'

अजा वृकेनाभिहतेव तत्र
प्रजा निजामेन धृता बलेन।
शत्रुर्निजामः स तु मालवाख्यं
प्रान्तं च जेतुं प्रभवेत् समग्रम्।।२७२।।

(संस्कृतटीका)

मालव - वृत्तम्- अजा वृकेन - अजा मारक - पशुना। प्रजा भोजपाल-नगरी स्थिता जनाः। समग्रं प्रान्तम् भोजपालजयानन्तरं समस्तं प्रदेशम्। उपमा।

(हिन्दी)

मालवा प्रान्त का वृत्त देते हुए उसने कहा -

'भेड़िया जिस प्रकार किसी भेड़ पर आक्रमण करता है उसी प्रकार निजाम ने भोजपाल नगर की जनता पर अधिकार कर लिया है। निजाम शत्रुत्व कर रहा है, वह समस्त मालवा प्रदेश को जीतने में समर्थ हो सकता है। (शत्रु के इस प्रकार बलिष्ठ होने पर समस्या खड़ी होगी)।

धारेश-भोजेन विशालमेकं

विनिर्मितं श्रीशिवमन्दिरं तत्।

श्रीभोजराजस्य यशःप्रशस्तिं

गायन्ति लोका, न तु सौख्यभाजः।।२७३।।

(संस्कृतटीका)

अतीत-काले धाराधिपतिना भोजराजेन निर्माणं कृतम्। धाराधीशस्य श्रीभोजस्य यशसः कीर्तेः प्रशस्तिं प्रशंसा-गीतानि। किन्तु न ते सौख्यं स्वस्थजीवनानन्दं भजन्ते। शत्रुकारणादिति भावः।

(हिन्दी)

पूर्व समय में धाराधीश भोज द्वारा एक विशाल श्रीशिवमन्दिर का निर्माण भोजपुर में हुआ था। लोग राजा भोज के यश की गाथा गाते हैं। किन्तु (निजाम के आक्रमण के कारण) वहाँ लोग दुःखी हैं। राजा भोज का पवित्र क्षेत्र संकट में है।

भोजेन बन्धः खलु निर्मितोऽस्ति
बन्धाद् विशालश्च जलाशयोऽपि।
क्षेत्रे सुरम्ये भुवि मालवाख्ये
ग्रस्तं निजामेन तु भोजपालम्।।२७४।।

(संस्कृतटीका)

भोजेन धाराधीशो भोजः तेन। बन्धः जलप्रवाहस्यावरोधः। तस्मात् भोजपालस्य (भोपाल-स्थितस्य) जलाशयः। भुवि देशे मालवा-नाम्नि प्रदेशे। भोजपालम् भोजपुर - भोपाल-क्षेत्रम्। ग्रस्तमाक्रान्तमस्ति।

(हिन्दी)

धारा नरेश श्री भोज द्वारा एक बाँध का निर्माण किया गया, और उस के फलस्वरूप एक विशाल जलाशय का निर्माण हुआ है। मालवा नाम का यह अत्यन्त सुन्दर प्रदेश है। किन्तु निजाम ने भोजपाल पर आक्रमण कर उस पर कब्जा कर लिया है।

श्रुत्वा प्रमाणं स्वनये तु देव'
इतीरियित्वा विरतोऽथ चारः।
स्वकार्यहेतोश्च गतस्ततः सः
चाराधिवृत्तान्नयतत्त्व-लाभः।।२७५।।

(संस्कृतटीका)

स्व-नये श्रीमतां शत्रुविषये प्रायोजनीया योजना, राजनीति-विचारे। प्रमाणं अधिकतया विश्वसनीया भवन्तः। स्वकार्यस्य चारैः कर्तव्य-हेतोः कारणात्। गुप्तचराणां, अधिवृत्तं - तस्य वार्ता। नयस्य राजनीतेः, तत्त्वं सिद्धान्तः, तस्य लाभः उपकारकः। अर्थान्तरन्यासः।

(हिन्दी)

मेरी इस वार्ता को सुनकर राजनीतिक सिद्धान्त के अनुसार निर्णय लेने में आप अधिकारी हैं।'

यह कहकर वह चुप हो गया और अपने कार्य के लिए वहाँ से चला गया। गुप्तचरों की वार्ता राजनैतिक दृष्टि से लाभप्रद होती है।

ततः प्रियाकण्ठगतं स्वहस्तं
खड्गे स्वयं स्थापितवान् स वीरः।
स्वधर्मरक्षार्थमतः प्रतस्थे
जित्वा विकारान् प्रभवन्ति धीराः।।२७६।।

(संस्कृतटीका)

ततः गुप्तचराद् वृत्तं श्रुत्वा। प्रियायाः मस्तान्याः कण्ठे गतं हस्तं स्वयं खड्गे शस्त्रे वीरः रावः। अतः पुण्यनगरात् स्वस्य धर्मः कर्तव्यम् राष्ट्रियम्। तस्य रक्षार्थम् प्रतस्थे। धीराः विवेकशालिनः विकारान् विकृतिं जित्वा प्रभवन्ति स्वसामर्थ्येनेति भावः। अर्थान्तरन्यासः।

(हिन्दी)

गुप्तचर की वार्ता को सुनने के पश्चात् विलास के समय मस्तानी के कण्ठ में लगे हुए अपने हाथ को वीर राव ने स्वयं तलवार पर रखा। वहाँ से वे अपने धर्म की रक्षा के लिए निकल पड़े। धीर व्यक्ति अपने विकारों को जीतकर प्रभावशाली होते हैं।

युद्धाय गन्तुं कृतनिश्चयोऽसौ
जगाम पूर्वं निजमातरं सः।
उवाच तां च प्रणतः प्रणम्य
'यशो मदीयं भवदाशिषैव'।।२७७।।

(संस्कृतटीका)

युद्धाय प्रस्थान-समये कृतः निश्चयो येन सः गृहीतनिर्णयः। असौ रावः। पूर्वं प्रथमतः। मातरं राधाबाईति नाम्नीं जननीम्। प्रणतः विनम्रः। भवत्याः आशीः, आशीर्वादेनैव।

(हिन्दी)

बाजीराव ने युद्ध पर जाने का निश्चय किया तब उन्होंने प्रथम अपनी माँ के पास जा कर विनम्र हो कर प्रणाम किया और कहा - माँ, आप के आशीर्वाद के कारण ही मुझे यश मिलता है।'

माताप्युवाच प्रणतं च रावम् -
'युद्धे यशस्वी स्वजनैर्भवेति।'
जगाम रावो निजधर्मपत्नीम्
स्वदेवपूजानिरतां ददर्श ।।२७८।।

(संस्कृतटीका)

माता राधाप्युवाच। स्वजनैः बन्धुसैन्यादिभिः। ततः सः रावः। धर्मपत्नीं काशीम्। स्व-देवानां पूजनेऽर्चनायां निरताम् धर्मपरायणाम्।

(हिन्दी)

माता राधाबाई ने भी प्रणाम करनेवाले पुत्र बाजीराव से कहा -

'अपने लोगों और सैन्य.कें साथ विजयी हो!'

इसके बाद राव ने अपने पूजागृह में पूजा करने में लगी धर्मपत्नी काशीबाई को देखा।

उवाच रावः प्रणतां स्वपत्नीम्

काशीं कृशाङ्गीं मृदुलस्वभावाम्।

'गच्छामि दूरं समरे जयार्थम्

स्वास्थ्यं स्वकीयं परिपालय त्वम्।।२७६।।

(संस्कृतटीका)

रावः स्वपत्नीं काशीं प्रोवाच। कृशाण्यङ्गानि यस्याः सा। मृदुलः शान्तः स्वभावो यस्याः सा। दूरं मालवं प्रदेशम् प्रति। स्वकीयं तव स्वास्थ्यम्।

(हिन्दि)

बाजीराव ने कृशांगी, मृदु स्वभाव की पत्नी जो उन्हें प्रणाम कर रही थी, से कहा –

'देखो, मैं दूर युद्ध में विजय प्राप्त करने हेतु अभियान पर जा रहा हूँ। तुम्हें अपने स्वास्थ्य की रक्षा करनी चाहिए।

मस्तानियोगेन जयो रणे मे
भद्रे गृहे त्वं परिपालनाय।
त्वं राज्यलक्ष्मीरसि मे प्रियैव
बाालास्तु नित्यं रण-सङ्गिनी मे।।२८०।।

(संस्कृतटीका)

काशी-मनोव्यथामाशङ्क्य वदति - परिपालनाय - गृहस्य - रक्षणाद्यर्थम्। बाला - मस्तानी। अस्तु मे रणसङ्गिनी सहगामिनी। नात्र कोऽपि विषादावसर इत्यर्थः।

(हिन्दी)

(मालवा तथा उत्तर भारत के प्रदेश में) मस्तानी के कारण युद्ध में मेरी विजय (आसानी से) होती है। तुम तो मेरी प्रिय राज्यलक्ष्मी हो। घर की देखभाल तुम्हें करनी है, अतः युद्धप्रसंग में मस्तानी को मेरे साथ रहने दो।'

न चास्मि राजा न च कापि राज्ञी

शिव-स्वराज्ये शिवसैनिकोऽस्मि ।

पत्नी जयश्रीरिव सा प्रिया मे

राज्ये न राज्ञीपद-कांक्षिणी सा ।।२८१।।

(संस्कृतटीका)

मस्तानी-विषये पुनः कथयति - नाहं राजा तथा कापि काशी मस्तानी वा। शिवस्य छत्रपतेः शिवराजस्य शिव-सैनिकः शिवाजिकार्यस्य कृते सैनिकः। मस्तानी जयश्रीः रणे विजयश्रीरिव। राज्ञीपदस्य न कांक्षिणी। उपमा।

(हिन्दी)

काशी, न तो मैं राजा हूँ और न कोई यहाँ रानी है। मैं छत्रपति शिवाजी के स्वराज्य का एक शिव-सैनिक हूँ। वह मस्तानी मेरी पत्नी है जो मेरे लिए विजयश्री के समान है। इस राज्य में रानी के पद की अभिलाषा उसकी नहीं है।

रक्ष्यं स्वराज्यं परचक्रतस्तु
शिवाजिराज-प्रणिधिर्भवामि।
स्वधर्मरक्षार्थमयं प्रयासो
वीरो यशस्वी गृहशान्तियोगात्।।२८२।।

(संस्कृतटीका)

स्वराज्यं शिवराजेन प्रस्थापितम्। परचक्रं वैदेशिकशत्रुमण्डलेन कृतं आक्रमणं, तस्मात्। छत्रपतेः शिवराजस्य प्रणिधिः प्रतिनिधिः अहम् अस्मि शेषः। स्वधर्मः स्वकर्तव्यरूपो धर्मः राष्ट्ररक्षणमिति यावत्। कोपि वीरः शूरो नरो गृहे शान्तिः तस्याः योगात् सहयोगात्। भवतीत्यर्थः। ममापि कृते युवयोः शान्तियोग आवश्यक इति भावः। अर्थान्तरन्यासः।

(हिन्दी)

इस स्वराज्य की रक्षा परचक्र से करना चाहिये। मैं तो छत्रपति शिवाजी महाराज का प्रतिनिधि हूँ। स्वधर्म की रक्षा के लिए मेरा यह प्रयास है। घर में यदि शान्ति हो तो वीर पुरुष पराक्रम में यशस्वी हो सकता है। (आप लोग गृहकलह त्यागकर मेरे इस पवित्र कार्य में सहायक बनो)।

भवस्य सारं भुवि वैभवं तद्
भव्यं च भाव्यं भवतीभिरेव।
राष्ट्रे स्वराज्यं शिवकल्पितं यत्।
तद्वैभवं भव्यतरं भवेन्नः।।२८३।।

(संस्कृतटीका)

श्रीबाजीरावः उवाच - ''भवस्य - संसारस्य सारं। महत्वपूर्णं तत्त्वम्। वैभवं ऐश्वर्यम्। भवतीभिः - भवत्सदृशीभिः पत्नीभिः। तदेव भव्यं- उदात्तम्। भाव्यम् - मनसाभिलषणीयम्। राष्ट्रे भारते। स्वराज्यं - हिन्दवी-स्वराज्यमिति। शिवेन - छत्रपति-शिवराजेन कल्पितं संकल्परूपेण गृहीतं। वैभवं स्वराज्य-प्राप्तिरूपं। नः अस्माकं। भव्यतरं अधिकमुदात्तं भवेत्। ऐश्वर्यादधिकतरं भव्यं स्वराज्यम्।

(हिन्दी)

इस पृथ्वीपर संसार का सार ऐश्वर्य है और वह आप जैसी पत्नियों के लिए उदात्त और अभिलषणीय होता है। हमारे लिए तो छत्रपति शिवाजी महाराज ने जिस हिन्दवी स्वराज्य के लिए संकल्प किया था वह अधिक उदात्त ऐश्वर्य है। (सच्चा ऐश्वर्य तो स्वराज्य है) ।

उषःप्रभा सूर्यकृते प्रसन्ना
श्रान्तस्य सूर्यस्य सुखाय सन्ध्या।
स्वकार्यनिष्ठत्त्वमिह प्रशस्तम्
सृष्टेः प्रकर्षः समयानुरोधात्'।।२८४।।

(संस्कृतटीका)

श्रीबाजीरावः पत्नीद्वये स्वाभाविकं सामंजस्यमीहमानः प्रोवाच - उषःप्रभा - प्रातःकालीना कान्तिः। सन्ध्या - सायंकालीनारुणकान्तिः। उषसः सन्ध्यायाश्च द्वयोरपि सूर्यस्य सुखप्रदत्त्वम्। इह-जीवने। स्वकार्येषु - स्वाधीनकर्मसु। प्रशस्तं स्तुत्यम्। समयानुरोधात् - कालस्य अनुसन्धानं तस्मात्। प्रकर्षः - प्रगतिः। पत्नीद्वयमपि श्रीबाजीरावाय सुखाय स्वस्वकर्तव्यनिर्वाहिन भवत्विति भावः। अप्रस्तुतप्रशंसा।

(हिन्दी)

सूर्य के लिए उषा प्रातःकाल में प्रसन्नता निखेरती है और संध्या सायंकाल में (प्रकट होकर) थके हुए सूर्य के लिए सुखप्रद होती है। जीवन में स्वकार्य के प्रति निष्ठा रखना हमेशा प्रशंसनीय होता है। समयानुसार कार्य करने से प्रकृति का विकास होता है। अर्थात् आप दोनों अपने कार्य में लगन के साथ कर्म करती रहने से सहायक सिद्ध हो सकती हैं।'

प्रसादमादौ च वितीर्य हस्ते
रावं प्रणम्याथ जगाद काशी - ।
'सर्वत्र युद्धेषु यशो भवद्भ्यो
दद्यात् स देवो हृदि कामयेऽहम् ।।२८५।।

(संस्कृतटीका)

राववचनं श्रुत्वा तदा आदौ काशी रावस्य हस्ते करे देवस्य प्रसादं वितीर्य दत्वा च नमस्कृत्वा। युद्धेषु समरेषु यशः जयम्। स देवः ईश्वरः। कामये। मे प्रार्थनेति यावत्।

(हिन्दी)

राव की बातें सुनकर पहले तो काशीबाई ने उनके हाथपर भगवान् का प्रसाद रखा और झुककर प्रणाम किया तब कहा -

'भगवान् से मेरी प्रार्थना है कि वह आप को सर्वत्र युद्धों में यश प्रदान करें।

निन्दन्ति लोका पतिदेववृत्तम्
पतिव्रतायै न च सह्यमेतत्।
उत्खातमूला नववल्लरीव
वधूर्गृहे मार्दवमीहते सा।।२८६।।

(संस्कृतटीका)

पतिदेववृत्तम् - पतिरेव ईश्वरः तस्य वृत्तम् चरित्रम्। न सह्यं - सोढुमशक्यम्। यथा वल्लरी लता उत्खातं मूलं यस्याः सा नवे स्थाने मृदुभूमिमिच्छति तद्वत् नववधूरपि मृदुभावम्। अत एव भवत् कीर्तिः सर्वत्र वरीवर्ति। गूढभावस्तु - जनाः शूरं पतिं (बाजीरावं) न निन्दन्ति, तस्य तु यशोगानं कुर्वन्ति। किन्तु पृष्ठभागे कृतायाः निन्दायाः असह्यत्वं पतिव्रतायाः पत्न्या मनसि दुःखमेवोत्पादयतीत्यर्थः दृष्टान्तः।

(हिन्दी)

लोगों में पति के चारित्र्य की निन्दा होती है तब वह दुःख पतिव्रता पत्नी के लिए असहनीय ही होता है। और नई उखड़ी हुई बेल के समान नवागत वधू को भी मृदु व्यवहार की चाहत होती है। (काशीबाई उधर निन्दा से त्रस्त तो है किन्तु नवागत मस्तानी के लिए भी चिन्तित है)।

पुष्पं लतायां स्पृहणीयमेव

पर्णेष्वदृश्या अपि कण्टकास्ते।

स्तुवन्ति लोका भवतां यशोऽपि

पत्युः सहेऽहं तु परोक्षनिन्दाम्।।२८७।।

(संस्कृतटीका)

लतायां पुष्पं प्रसूनं वाञ्छनीयम्। तथापि पर्णेषु कण्टकाः अदृश्याः। दृष्टुं न शक्नुवन्ति जनाः तान्। तथैव भवतां रावाणाम् यशसः स्तुतिं लोकास्तु कुर्वन्ति, किन्तु अहं (भवतां पत्नी) भवतां परोक्षा न प्रत्यक्षरूपेण कृता निन्दा, ताम् सहे। दृष्टान्तः।

(हिन्दी)

नाथ। किसी बेलीपर फूल लगता है तो लोग उसे चाहते हैं। किन्तु पत्तों के अंदर दिखाई न देनेवाले काँटे भी होते हैं। उसी प्रकार लोग आप के शौर्य आदि के गुणों के कारण आप का यशोगान तो करते हैं, किन्तु मुझे आप के पीछे की हुई निन्दा सहन करना पड़ती है।

प्रकाशते कापि वनस्पतिः सा
शीर्षे हिमाद्रेः श्रुतमेव पूर्वम्।
पुष्णाति दिव्यौषधिवद् भवन्तम्
इन्द्रप्रिया सोमलतेव साद्य।।२८८।।

(संस्कृतटीका)

सा प्रसिद्धा कापि श्रुतिपथे स्थिता। हिमाद्रेः हिमालयस्य। श्रुतं न सा दृष्टा। सा मस्तानी अद्यास्मिन् काले भवन्तम् – रावम् पुष्णाति शक्तिं ददाति रावाय। दिव्यौषधिः यथा शक्तिप्रदा तथेयं मस्तानी। अपि च सा मस्तानी इन्द्रस्य देवेन्द्रस्य प्रिया सुखदा सोमलता सोमस्य वल्लीव। वर्तत इति शेषः। दृष्टान्त उपमा विकस्वरश्च।

(हिन्दी)

मैं ने पूर्व में केवल सुना था कि हिमालय के ऊपरी शिखरों पर कोई वनस्पति होती है जो प्रकाश देती है। देखा नहीं। किन्तु आज मैने देखा कि मस्तानी हिमालय की वह प्रकाशमयी वनस्पति है और दिव्य औषधि के समान आप को शक्ति प्रदान कर रही है। इन्द्र को जिस प्रकार सोमवल्ली अत्यन्त प्यारी थी उसी प्रकार मस्तानी भी आप को प्यारी है।

वीरत्वमेतद् भवतां च तेजः
मस्तानि-सङ्गं सहते जनस्तु।
सूर्ये यदि स्याच्च कलंकछाया
ज्ञात्वापि निन्दन्ति रविं जनाः किम्?।।२८६।।

(संस्कृतटीका)

भवतां रावाणाम् वीरत्त्वं शौर्यम्। मस्तान्याः सङ्गः सहवासः, तम्। यदि सूर्ये कलंकस्य कृष्णभागस्य छाया छटा स्यात्। ज्ञात्वापि कलंके ज्ञते सति। रविं न निन्दन्ति लोका इत्यर्थः। दृष्टान्तः।

(हिन्दी)

पत्नी काशीबाई पति राव को समझा रही है, उसने कहा–

'देखो, आप का शौर्य ही वह तेज है जिस के कारण मस्तानी के साथ आप के सहवास को लोग सह रहे हैं। यदि सूर्य में कोई काले दाग होंगे और उन्हें जाननेपर भी क्या लोग सूर्य की निन्दा करेंगें? (आप निश्चिन्त रहिए)।

सा मे सखी या भवतां प्रियास्ति
समान-धर्मोऽपि पतिव्रतात्वम्।
न कापि पत्नी भवतां तृतीया
ममार्धनारीश्वरसाहचर्यम्।।२६०।।

(संस्कृतटीका)

सा मस्तानी भवतां रावाणाम्। पतिः रावः तस्मिन्नेकनिष्ठात्वं तदेव समानः तुल्यो धर्मः आवयोर्धर्मः। अपि च नान्या कापि तृतीया पत्नीति मे सौख्यमेव। मस्तानी-योगात्, मम पत्न्यास्तु अर्धनारीत्वं तस्या मम च अर्धभागेऽधिकारत्वम् तस्य ईश्वरः रावः, साहचर्यम् तस्य पत्युः। अर्धाधिकारादेव मे सन्तोष इति भावः। अर्धनारीश्वरो देवः शिवः। भवानपि अर्धनारीश्वरः। अर्धस्याप्यर्धभागः मम कृते इति विवञ्चना।

(हिन्दी)

मस्तानी आप को बहुत प्यारी है इसलिए मेरी वह सहेली है। हम दोनों का पतिव्रता का धर्म भी समान है। सौभाग्य से कोई तीसरी सौत भी नहीं है (यह अच्छी बात है।) जहाँतक मेरा प्रश्न है, स्वामी आप का आघा ही साहचर्य मुझे मिलता है। वास्तव में पति का अर्ध रूप भी मुझे कहाँ मिल पाता है? आधे का भी आधा अधिकार मेरा है, आप तो अर्धनारीश्वर है ही।

सिंहासनाधिष्ठितराज्यलक्ष्मीः
सुखाय लोकस्य च मे त्वधीना।
भूमण्डलस्वामिसुखं ददौ 'सा'
यशोधिगन्तुं सुखदा ममापि।।२६१।।

(संस्कृतटीका)

या राज्यस्य लक्ष्मीः शक्तिः सिंहासने प्रतिष्ठिता, सा लोकस्य प्रजायाः सुखाय मे काश्याः अधीना स्वायत्ता वर्तते। राज्यस्य कार्यभारं वहामि। भूमण्डलस्य पुण्यपत्तान-प्रदेशस्य स्वामिने रावाय 'सा' सुखदा। ममापि काश्या अपि स्वामिनः यशसे। सा सुखदा इति।

(हिन्दी)

राज्य के सिंहासन पर अधिष्ठित जो लक्ष्मी है वह प्रजा के सुख के लिए मेरे पास है। इस सारे प्रदेश के स्वामी आप हैं और आप को 'वह' (मस्तानी) सुख दें यह उचित है। आप के यश और विजय की प्रेरणा देनेवाली 'वह' (मस्तानी) मेरे लिए भी सुख देनेवाली है।

मृगाङ्कलक्ष्मीर्न नृपाङ्कलक्ष्मीः
तथापि रक्ष्यं भवता स्वराज्यम्।।
वाराङ्गना सा न, वराङ्गनास्ति
पत्युः प्रिया सा सुखदा सखी मे।।२६२।।

(संस्कृतटीका)

मृगाङ्कस्य चन्द्रमसः लक्ष्मीः शोभा नृपस्य राज्ञः (रावस्य) अङ्कस्य शोभा न भवितुमर्हतीत्यर्थः। तथापि भवता रावेण स्वराज्यं रक्ष्यम् रक्षितव्यम्। तत् महत्वपूर्णम् कार्यम्। मस्तानी वाराङ्गना वेश्या नास्ति, अपि तु वराङ्गना राजकन्या सुन्दरी च। यतः पत्युः रावस्य मस्तानी प्रिया कान्ता, अतः मम काश्याः सा सखी मित्रमेव। औदार्यं काश्या व्यज्यते।

(हिन्दी)

चन्द्रमा की कान्तिवाली कोई स्त्री राजा की गोद में शोभा नहीं देती। (राजा को सभी बातों का ख्याल रखना पड़ता है।) फिर भी, आप को (हल्की-सी बातों पर ध्यान न देकर) स्वराज्य की रक्षा करना है। मस्तानी वेश्या नहीं है, वह एक राजकन्या है। आप की वह प्रिय कान्ता है इसलिए मेरी वह सहेली ही है। (आप चिन्ता न करें)।

न सा सपत्नी, भवदुत्तरीयम्
सा खड्गधारेव सखी जयार्थम्।
सौन्दर्यमस्या न तु राज्यलक्ष्म
स्वराज्यलक्ष्मीर्मृदुला, न तीक्ष्णा'।।२६३।।

(संस्कृतटीका)

'सा' (मस्तानी)। भवताम् रावाणाम् उत्तरीयम् अङ्गवस्त्रम्। शोभावस्त्रम्। जयार्थं रणे सा खड्गस्य धारेव सखी, भवतामिति यावत्। किन्तु अस्या मस्तान्याः। राज्यस्य लक्ष्म चिन्हम् प्रमुखं लक्षणं न वा। यतो हि स्वराज्यस्य लक्ष्मीः मृदुला मृदुस्वभाववती, यथाहम् न तीक्ष्णा यथा खड्गधारेव मस्तानी। राज्ये लक्ष्मीरस्मि, न सेत्यर्थः। उपमा।

(हिन्दी)

उस मस्तानी को मैं (काशीबाई) अपनी सौत नहीं मानती। वह आप का एक अंगवस्त्र है। रण में आप के विजय के लिए वह तलवार की धार जैसी है। किन्तु उसका सौन्दर्य राज्य का लक्षण या प्रतीक नहीं हो सकता है। स्वराज्य की लक्ष्मी तो मृदु स्वभाव की होती है, (तलवार की धार के समान) तीक्ष्ण नहीं होती। (मैं राज्य में प्रजा को सुख-शान्ति देनेवाली लक्ष्मी हूँ)।'

उवाच साग्रे – 'सहते तु पत्नी
यान्यायमन्तर्हि पतिव्रता सा।
सामान्यमान्यो भुवि धर्म एष-
स्तथापि धर्मो द्विजनाश्रितोऽयम्।।२६४।।

(संस्कृतटीका)

रावं प्रति पत्नी काशी पुनः वदति, पत्नी विवाहिता स्त्री। स्वस्य अन्यायम् अपकारम्। या सहते सा पतिव्रता। जनैः मान्यः स्वीकृतः धर्मः। एवं सत्याश्रितायाः, मम तथा मस्तान्याः कृतेऽपि। तथैव भवतां रावाणां मम च कृते समानरूपेणास्ति। तत्र कास्ति द्वयोरेकनिष्ठता? त्रयाणामेकनिष्ठत्वं बाधत इत्यर्थः।

(हिन्दी)

काशी ने पति राव से आगे कहा –

'जो पत्नी अपना अन्याय मन में सह लेती है उसे पतिव्रता कहते हैं। यह सामान्य लोगों ने माना हुआ धर्म है। खेद है, यह धर्म दो जनों में बँटा है। आप का एकपत्नीव्रत नहीं रहा। (एकमात्र मेरा अधिकार अपने पतिपर नहीं है, यद्यपि मैं पतिव्रता अवश्य हूँ। पति और पत्नी में जो एकनिष्ठता होती है, खण्डित हो गई है।)

ममैकनिष्ठत्वममूल्यरत्नम्
तेनैव तुष्टा हि पतिव्रताश्च।
तथापि धर्मो किमुपेक्षणीयः?
किन्त्वेकपत्नीत्व-निरर्थकत्वम्' ।।२६५ ।।

(संस्कृतटीका)

मम काश्याः। एकनिष्ठत्वं पतिविषयेऽनन्या भक्तिः। ममामूल्यरत्नम्। तेन रत्नेन पतिव्रता तुष्टा प्रसन्ना। धर्मः पतिव्रतायाः उपेक्षणीयः पतिभिः? धर्माः पतिव्रतायाः धर्मः। किन्तु 'एकपत्नीधर्मस्तु व्यर्थ एव गतः। भवद्भिर्नाचिरित इति भावः।

(हिन्दी)

पति के प्रति अनन्य भक्ति मेरा अमूल्य रत्न है, वह मेरे पास है। उस भक्ति से ही यहाँ पतिव्रता स्त्रियाँ सन्तुष्ट रहती हैं। फिर भी क्या इस एकनिष्ठता के धर्म की उपेक्षा (पति द्वारा) होनी चाहिये? किन्तु (खेद है कि) एकपत्नीत्व का धर्म तो नष्ट हो गया है। (भगवान् राम जैसे महापुरुषों के द्वारा अपनाये गए एकपत्नी-व्रत का आपने तो पालन नहीं किया)।'

श्रीबाजिरावोऽपि जगाद पत्नीम् -
'नोपेक्षिता मे प्रियधर्मपत्नी।
श्रीकृष्णभक्त्या प्रियराधिकापि
जाता न किं सा मुरली-प्रसक्ता?।।२६६।।

(संस्कृतटीका)

जगाद - उवाच। प्रिया चासौ धर्मपत्नी च काशीत्यर्थः। नोपेक्षणीया तिरस्कारयोग्या न। राधिकापि मुरलीं श्रीकृष्णस्य वेणुं प्रति प्रसक्ता तल्लीना। दृष्टान्तः।

(हिन्दी)

बाजीराव ने अपनी पत्नी से कहा -

'मेरी प्रिय धर्मपत्नी तुम हो, तुम्हारी उपेक्षा न होगी। (प्रश्न मस्तानी का है) यह ध्यान में रखो कि, श्रीकृष्ण की भक्ति में लीन राधा भी उन की प्रिय मुरली के प्रति तल्लीन हो जाती थी। (राधा और मुरली में अच्छा सौहार्द था, वैसा ही आप दोनों में हो)।

जानामि पत्युर्विषये तु पत्न्या
एकाधिकारत्वमिह प्रशस्तम् ।
ममास्तु दैवादपवाद एषो
न राजनीतिः प्रथमोऽत्र हेतुः ।।२६७।।

(संस्कृतटीका)

एकाधिकारत्वं - पति-जीवने तं पत्न्या एव अधिकारः। न सपत्नीं सेच्छति। प्रशस्तं - प्रशंसनीयम्। मम - बाजीरावस्य। दैवात् - भाग्यात्। अपवादः - विधेरन्यः प्रकारः अस्तु। मस्तानी - स्वीकारे न राजनीतिः - श्रीछत्रसालेन सह मैत्रीरूपा, राजनीतिः राजनयलाभरूपः न। प्रथमः सम्बन्धे हेतुः - कारणम्, अपि तु पूर्वजन्मानुबन्धादेव देवकृपयावयोः सम्बन्ध इति।

(हिन्दी)

'प्रिये, मैं जानता हूँ कि पत्नी के लिए एकमात्र पति पर अधिकार होना प्रशंसनीय होता है। किन्तु भाग्य से मेरा अपवाद है (मस्तानी के कारण)। उस के स्वीकार का पहला कारण राजनीति नहीं है। (पहला कारण संभवतः पूर्वजन्म का प्रेम है)।

दाक्षिण्य-शीलादि-गुणैरुदारैः
सौन्दर्यमस्या द्विगुणत्वमाप।
श्रीवासयोगात् शतपत्र-कान्तिः
वने सुगन्धान्न विवर्द्धते किम्?।।२६८।।

(संस्कृतटीका)

काशीं प्रति - दाक्षिण्यं शीलं -चरित्रम्। तथा प्रेम औदार्यमादिभिः। गुणाः रतिः उदारैः गुणैः । अस्या मस्तान्याः द्विगुणत्वं प्रवृद्धम्। श्रीवासः श्रियः लक्ष्म्याः वासः अधिवासः, तस्य योगात् शतपत्रस्य कमलस्य कान्तिः शोभा। शतपत्रं कुशेशयम् इति कोषः। सुगन्धरूपकारणात्। काकुः। दृष्टान्तः।

हिन्दी

दाक्षिण्य, शील, प्रेम आदि उदार गुणों के कारण मस्तानी के सौन्दर्य में वृद्धि हुई है। वन में कमल की शोभा लक्ष्मी के अधिवास से तथा सुगन्ध के कारण क्या नहीं बढ़ती है? (अर्थात् मस्तानी में गुण है इसीलिए उसके सौन्दर्य में वृद्धि हुई है) ।

सखीव मान्या यदि सा त्वयापि
राज्ये न चिन्ता मम विग्रहो वा।
प्रजा प्रसन्नास्ति गुणैश्च तस्याः
राज्ये न सा कामयतेऽधिकारान्।।२६६।।

(संस्कृतटीका)

सखी - मित्ररूपेण सा - मस्तानी, मान्या - स्वीकृता। राज्ये पुण्यपुरी-शासनविषये। विग्रहः कलहः। दिग्विजयाय निश्चितमनसा बहिर्गन्तुं शक्यते मयेत्यर्थः। प्रजा - पुण्यपुरी-जनाः। गुणैः - दाक्षिण्य-सदाचारादिगुणैः। अस्माकं राज्ये अधिकारान् - स्वामित्वं न कामयते - न वाञ्छति। तस्या मयि प्रेम, न राज्ये लाभलोभः। निःस्वार्थं तस्याः प्रेमेत्यर्थः।

(हिन्दी)

यदि तुमने भी उसे अपनी सखी मान लिया है तो राज्य के विषय में चिन्तारहित हो गया हूँ। झगडे की बात भी नहीं है। उसके गुणों से प्रजा प्रसन्न है। मेरे साथ उसके सम्बन्ध का (बुन्देलखण्ड राज्य से मित्रतारूप का) कोई राजनैतिक पहला कारण नहीं था। (वह तो बाद की उपलब्धि है)। और न हि वह राज्य में कोई अधिकार चाहती है।

त्वया यदुक्तं मयि तत्तु सत्यम्
आदर्श-धर्मात् किमुदेति भाग्यम्। ?
वरं स्वधर्मः परिवारधर्मात्
तदद्भुतं यज्जनयत्यपूर्वम्'।।३००।।

(संस्कृतटीका)

त्वया काशी नाम्न्या पत्न्या। मयि मम बाजीरावस्य विषये यदुक्तं 'एकपत्नीत्वम् निरर्थकमेवेति'। किन्तु आदर्श-धर्मः एक-पत्नीत्वरूपः तस्मात्। भाग्यस्योदयः? काकुः। परिवारस्य कुटुम्बस्य वैयक्तिकधर्मात् स्वधर्मः स्वराज्यरक्षणरूपो धर्मः वरं श्रेष्ठः। तदद्भुतं मम मस्तान्याश्च संयोगरूपम् आश्चर्यजनकम् तत्त्वम्। अपूर्वम् अभूतपूर्वं नवरूपेण उदेति परिणमति अप्रस्तुतप्रशंसा। अर्थान्तरन्यासश्च।

(हिन्दी)

देखो काशी, तुम ने जो कुछ कहा है वह सच है। किन्तु क्या आदर्श के पालन से भाग्योदय हो सकता है? परिवार के धर्म से श्रेष्ठ है स्वराज्य के प्रति कर्तव्यरूप धर्म। (कुछ बड़ा पाने के लिए छोटा खोना पड़ता है। मस्तानी का संयोग मेरे जीवन की अद्भुत घटना है)। अद्भुत वह होता है जो पूर्व में उत्पन्न नहीं हुआ हो।'

उवाच काशी - 'यवनी-प्रसङ्ग

एकेश्वरत्त्वाद् भवतां स मान्यः।

भवान् ममैवेश्वर एक एव

पत्युस्तु धर्मो द्विजनाश्रितोऽयम्'।।३०१।।

(संस्कृतटीका)

पत्नी काशी पतिं रावमुवाच - भवतां यवन्या सह प्रसङ्गः सहवासः। प्रणामिधर्मे यवन-हिन्दूधर्मयोर्मध्ये एकेश्वरतत्वम् एकेश्वरवादः। तस्मात्। पत्नीरूपेण मस्तानी मान्या यदि स्यात्। ममैव काश्यः भवान् पतित्वात् एक एव ईश्वरः। न मस्तान्याः। किन्तु पत्युः भवतां धर्मो द्विजनाश्रितः मम मस्तानीं चाश्रित्य द्वैतमिति क एकेश्वरवाद इत्यर्थः।

(हिन्दी)

पत्नी काशी ने पति राव से कहा -

'यदि आप ने यवनी (मस्तानी) के साथ सहवास किया है, तो प्रणामिधर्म के एकेश्वरवाद के अनुसार आप को मान्य होगा। वास्तव में मेरे ही आप एकमात्र ईश्वर है। किन्तु आप जैसे पति का धर्म दोनों अर्थात् मुझमें तथा मस्तानी में विभाजित है। मेरे एकेश्वरवाद का क्या हुआ?'

आदौ तु चन्द्रस्य कलापि वक्रा

कालेन काशी ऋजुतामवाप।

आप्ता न वाञ्छन्ति परस्य सौख्यम्

अन्धा रमन्ते न तु चन्द्रिकायाम्।।३०२।।

(संस्कृतटीका)

दृष्टान्तमुखेन पत्न्याः स्वभावमपि वर्णयति कविः नेति। - प्रतिपत् तिथौ चन्द्रमसः कला वक्रा। किन्तु पूर्णिमायां चन्द्रस्य कला वक्रत्वं जहाति। तद्वत् काशी नाम्नी राव-पत्नी ऋजुताम् सरल-स्वभावत्वम्। आप्ताः राव-बान्धास्तु। अन्धाः स्वार्थेन दृष्टि-दोषाच्च चन्द्रिकायाम् पूर्णचन्द्रस्य रम्यं प्रकाशं न पश्यन्ति। दृष्टान्तोऽ र्थान्तरन्यासश्च।

(हिन्दी)

प्रतिपदा तिथि पर चन्द्रमा की कला प्रारंभ में वक्र होती है। आगे चलकर वक्रता को छोड़ देती है। वैसे ही कालान्तर में राव की पत्नी काशीबाई सरल स्वभाव की हो गई। तथापि कुछ रिश्तेदारों को दूसरों का सुख देखा नहीं जाता। ठीक ही है, अन्धे लोग चांदनी का आनन्द नहीं उठा सकते।

ततो गतोऽसौ भवनं प्रियाया
नियम्य कष्टं मनसा प्रसन्नाम्।
वृन्दादलं राव-करेऽर्पयन्तीम्
मुक्तालकामाह 'सहस्व दुःखम्'।।३०३।।

(संस्कृतटीका)

काश्यः महालयात् रावो मस्तानीं दृष्टु गतवान्। प्रियायाः मस्तान्याः। मस्तानी-महालये। कष्टं पतिवियोगजन्यं बान्धवानां द्वेषजन्यं वा दुःखम्। नियम्य। मनसा पतिं प्रति शुभकामना-प्रकाशनार्थम् प्रसन्नाम्। वृन्दादलं तुलसीपत्रम्। दुःखं कष्टं सहस्वेति स उवाच। एतेन यद्यपि स्वकष्टं गोपयन्त्यास्तस्याः कष्टं जानामि इति ध्वनिः। प्रेमातिशयत्वं व्यज्यते।

(हिन्दी)

काशीबाई को मिलने के उपरान्त राव प्रिय मस्तानी के महल में पधारे। वहाँ मस्तानी ने अपने कष्ट को उजागर न कर हृदय से प्रसन्न हो कर राव का स्वागत किया। उस ने राव के हाथों पर तुलसीपत्र अर्पित किया। तब राव ने, जिसके बाल मुक्त थे ऐसी मस्तानी को कहा -

'देखो, दुःख सहन करो।'

रावः प्रियाया मिलनोत्सुकश्च
रम्यां स्वनीराजनदीपदीप्त्या।
उवाच तां - 'भोजपुरं पवित्रम्
तद्रक्षणार्थं सबलः प्रयामि'।।३०४।।

(संस्कृतटीका)

यात्रायाः पूर्वम्। सः रावः प्रियाया मस्तान्याः। मिलनायोत्सुकः। हस्ते स्थितस्य नीराजनार्थं गृहीतस्य दीपस्य दीप्त्या प्रभया रम्यम्, सुन्दरदर्शनीयाम्। मस्तानीम्। भोजस्य पुरं पवित्रम्। सबलः ससैन्यः प्रयामि गच्छामि। युद्धार्थमिति यावत्।

(हिन्दी)

राव प्रिय मस्तानी को मिलने हेतु अत्यन्त उत्सुक हुए थे। वहाँ मस्तानी के हाथ में नीरांजन के लिए पात्र में जो दीप था, उसकी प्रभा मस्तानी के मुखपर छा जाने से और भी वह सुन्दर लग रही थी। उसे राव ने कहा-

'प्रिये, मैं राजा भोज के पवित्र भोजपुर के रक्षण के लिए सैन्य लेकर जा रहा हूँ।

त्वयैव दत्तं सुखमेव मह्यम्
न बान्धवेभ्योऽपि सुखं मयाप्तम्।
कुर्याम् स्वराष्ट्रं परचक्रमुक्तम्
कथं विना त्वां मम जीवनं तु?'।।३०५।।

(संस्कृतटीका)

त्वयैव मस्तान्यैव। नान्यैः। बान्धवेभ्यः आप्तजनेभ्यः। स्वराज्यं अस्माकं राष्ट्रस्य च राज्यम्। परचक्रात् वैदेशिक-शत्रुभ्यः मुक्तम् स्वतन्त्रम्। त्वां मस्तानीं विना।

(हिन्दी)

मस्तानी, केवल तुमने मुझे सुख दिया है। मेरे रिश्तेदारों से भी मुझे सुख नहीं मिला। मैं तो स्वराज्य को परकीय शत्रुओं से मुक्त करूंगा। किन्तु तुम्हारे बिना यह मैं कैसे कर सकूंगा?'

नीराजनायामपि नीरजाक्षी
श्रीकुंकुमैर्गौरकरेण पत्युः।
भाले विशाले तिलकं विधाय
विस्मृत्य दुःखं सुखमाह रावम्।।३०६।।

(संस्कृतटीका)

रावस्य नीराजनविधौ। दीपेन आरार्तिक्ये कृते नीरजमिव कमलमिव अक्षिणी नेत्रे यस्याः सा मस्तानी। श्रिया युक्तो कुंकुमरागः तेन। स्वस्य गौरकरेण पत्युः रावस्य विशाले भाले मुखोन्नतभागे। तिलकं शोभा-चिह्नम्। व्यथां मानसिकं दुःखं वियोगजं गृहपीडाजन्यं वा। सुखं यथा स्यात् तथा आह। अनुप्रासः।

(हिन्दी)

राव की नीरांजना के दीप से आरती उतार कर उस कमलनयनी मस्तानी ने पति के विशाल भाल पर श्री से युक्त कुंकुम से तिलक अपने गोरे हाथ से लगाया। और अपनी व्यथा को भुलाकर प्रसन्न होकर उसने राव से कहा –

'मन्ये स्वराज्यस्य च धर्म एषः
न मेऽस्तु चिन्ता, कुरुत स्वकार्यम्।
तद्रक्षतां भोजपुरं पवित्रं
तनोति तीर्थेषु हि लोकधर्मः।।३०७।।

(संस्कृतटीका)

मस्तानी रावं वदति - स्वराज्यस्य छत्रपतिना स्थापितस्य राज्यस्य धर्मः कर्तव्यम्। मे मस्तान्याः। स्वकार्यम् रक्षकधर्मकार्यम्। तीर्थेषु धर्मक्षेत्रेषु लोकानां जनानां धर्मः तनोति विकासं प्राप्नोति। अर्थान्तरन्यासः।

(हिन्दी)

'मुझे लगता है कि स्वराज्य के लिए यह कर्तव्य आवश्यक है। इसलिए उस पवित्र भोजपुर की रक्षा आप कीजिए। मेरी चिन्ता न करें। अपना कर्तव्य पूरा करें। तीर्थक्षेत्रों में जनता का धर्म प्रतिष्ठित होता है।

मयैव दृष्टं युधि देहलीस्थो
दुर्गो भवद्भिः परिवेष्टितश्च।
दिल्लीश्वरः स्वं तु जुगोप दुर्गे
यथा हि नागो गरूडाद् बिभेति।।३०८।।

(संस्कृतटीका)

(श्री बाजीरावेण दिल्ली देहली-नगरमाक्रान्तं तम् इतिहासं स्मारयति मस्तानी, रावं वदति -) मयैव मस्तान्या इति यावत्। दृष्टं तदा युद्धप्रसंगे रावेण सह मस्तानी। देहलीनगरस्थो दुर्गः। भवद्भिः परिवेष्टितः सैन्येन वेष्टितः। भिया भीत्या। स्वमात्मानं गोपयामास। गरूत्मतः गरुडात् नागः सर्प इव। उपमा।

(हिन्दी)

(बाजीराव ने दिल्लीपर धावा बोल दिया था, तब उस की याद मस्तानी राव को दे रही है -) 'आप के साथ मैं दिल्ली के युद्ध में थी, उस समय मैंने देखा कि जब आप ने किले को घेर लिया था तब शत्रु दिल्ली के बादशाह ने आप से ड़रकर दिल्ली के किले में अपने आप को छुपा लिया था, जैसे कोई नाग गरुड़ से डरता है।

साकं भवद्भिः समरे न यामि
मनो भवेत् किन्तु भवत्-समीपे।
पुण्ये प्रतीक्षां भवतां करिष्ये
भवत्प्रतीक्षां कुरूते यशःश्रीः।।३०६।।

(संस्कृतटीका)

भवद्भिः रावैः। न गच्छामि। अस्मिन् समये मालव-विजयार्थमिति यावत्। किन्तु तथापि। मनः मेऽन्तःकरणं समरेऽपि समीपे भवतां भवेत्। अहम् पुण्ये पुण्यपत्तने, भवतां रावाणाम्। समरे यशसः विजयस्य श्रीः लक्ष्मीः प्रतीक्षां कुरूते।

(हिन्दी)

मैं इस बार आप के साथ युद्ध के लिए नहीं रहूँगी। किन्तु मन से तो आप के साथ ही रहूँगी। इधर पुणे में मैं आप की प्रतीक्षा करूंगी और उधर युद्ध में विजयश्री आपकी प्रतीक्षा कर रही है।

माता दुराप्ता भवतां च बन्धुर्-
द्रुह्यन्ति मह्यं न सुखं लभन्ते।
दूरं गमिष्ये भवदाज्ञयैव
वरं वियोगोऽपि भवत्सुखाय।।३१०।।

(संस्कृतटीका)

माता राधाबाई, दुष्टा आप्ता बान्धवाः। भवतां बाजीरावस्य बन्धुः चिमाजिः। द्रुह्यन्ति द्वेषं कुर्वन्ति। भवतां आज्ञा आदेशः, तयैव। भवतां सुखं तस्य कृते।

(हिन्दी)

आपकी माँ राधाबाई, दुष्ट सगे-सम्बन्धी तथा आपके भाई चिमाजी मेरा द्वेष और मत्सर करते हैं। जिससे उन्हें चैन नहीं पड़ता है (इस बात का मुझे दुःख है)। यदि आप स्वयं मुझे आज्ञा दें तो मैं यहाँ से दूर कहीं चली जाऊंगी। आप के सुख के लिए वियोग भी मुझे अच्छा लगेगा।

स्वराष्ट्रकार्यार्पितसज्जनानां

दिशन्ति दोषानपि निन्दकास्ते ।

वने नरं बोधयतीव काकः

व्याघ्रागमं प्राक् स्व-कटुस्वरेण ।।३११।।

(संस्कृतटीका)

(मस्तानी बाजीरावं कथयति) - स्वस्य राष्ट्रस्य भारतस्य कार्येषु अर्पिताः अभिरताः सज्जनाः परोपकारिणो जनाः तेषाम्। दिशन्ति दर्शयन्ति इति यावत्। दृष्टान्तमुखेन वदति - वने अरण्ये काकः वायसः। व्याघ्रस्य आगमः तस्य आगमनम्। प्राक् पूर्वमेव। वृक्षादिति यावत्। स्वस्य कटु-स्वरेण कर्णकठोरस्वरेण। बोधयति पूर्वमेव सूचयति। दृष्टान्तः।

(हिन्दी)

निन्दा को बुरा मत मानियेगा। जो सज्जन अपने राष्ट्र के महान् कार्य में समर्पित हैं उनके दोष भी तो वे ही निन्दा करनेवाले लोग दर्शाते हैं। (रहीम - '*निन्दक नियरे राखिए*।' मराठी सन्त - '*निन्दकाचे घर असावे शेजारी*') पेड़ पर बैठा कौआ यात्री को अपने कर्कश स्वर से सूचित करता है कि, शेर आ रहा है, सावधान!

शिलीमुखानां कठिनं मुखं तत्
सहायकास्ते युधि धन्विनस्तु।
स्तौति प्रबुद्धस्तु विहाय निन्दाम्
पूर्णः शशी मुञ्चति वक्ररूपम्।।३१२।।

(संस्कृतटीका)

शिलीमुखा बाणाः। मुखमग्रभागः लोहमयं कठिनं कठोरम्। किन्तु युधि समरे धन्विनां धनुर्धराणां सहायकाः। यद्यपि पुण्ये जना आदौ निन्दकाः, तथापि युद्धे रावस्य सहायकाः। ये प्रबुद्धा विवेकशालिनो जनाः निन्दां विहाय तद्यशोगानं अग्रे चक्रुः। पूर्णः पूर्णिमायां पूर्णत्वं गतः शशी चन्द्रः स्ववक्ररूपम् पूर्वं धृतं प्रतिपदि धारितं वक्रत्वं त्यजति। अर्थान्तरन्यासः। दृष्टान्तश्च।

(हिन्दी)

धनुष्य के बाण के अग्र भाग (लोहे के होने से) कठोर अवश्य होते हैं, किन्तु वे ही बाण अपने धनुर्धारी वीर के लिए युद्ध में सहायक होते हैं। शुरू में निन्दाभाव रखने पर भी बाद में विवेकशील लोगों ने आप की प्रशंसा की। पूर्णिमा में पूर्णचन्द्र अपनी प्रारंभ की (चन्द्रकोर की) वक्रता छोड़ देता है।'

मद्बन्धनान्मुक्तमहं भवन्तम्
कृत्वा गमिष्ये भवतः सुदूरम्।
दूरेऽप्यदूरे हृदये स्थितोऽसि
श्रोष्यामि दूराद् भवतां प्रशस्तिम्।।३१३।।

(संस्कृतटीका)

भवन्तम् रावम्। मुक्तं स्वतन्त्रम्। भवतः रावात् सुदूरम् दूरदेशम्। दूरे प्रदेशेऽपि न दूरे हृदये मे मनसि। दूरात् दूर-देशे। स्थिताहं भवतां रावस्य प्रशस्तिं यशोगानम्।

(हिन्दी)

मस्तानी ने राव को आश्वस्त करते हुए कहा -

'(यदि आप चाहते हैं तो) मैं आप को मेरे बन्धन से स्वतंत्र कर दूँगी। कहीं बहुत दूर चली जाऊँगी। इतना अवश्य है कि, (शरीर से) दूर चली जाने पर भी मैं आप से दूर कैसे रह सकुँगी? क्योंकि, आप (नित्य) मेरे हृदय में बसे रहेंगे। दूर रहकर भी मैं आप के यशोगान सुनती रहुँगी।

वृक्षाद् वियोगं सहते लता या
सा मृत्तिकायां म्रियते हि दीना।
भवद्वियोगं सहसा सहिष्ये
यदाज्ञया वाञ्छसि तत्करिष्ये'।।३१४।।

(संस्कृतटीका)

रावं प्रति मस्तानी वदति - या लता वल्लरी वृक्षाद् वियोगं विरहं विच्छेदनं वा सहते सा भूमौ नश्यति। तद्वत् अहमपि वियोगं सहिष्ये। यद् आज्ञयादेशेन वाञ्छसि, तदेव करिष्ये। भवतामाज्ञयैव वियोगं सहिष्य इत्यर्थः। दृष्टान्तः।

(हिन्दी)

जिस लता का वियोग वृक्ष से होता है वह जमीन पर मिट्टी में नष्ट हो जाती है। मुझे भी आप के वियोग को सहना पडेगा। यदि आप की इच्छा हो तो आज्ञा दीजिए, मैं वैसा ही करुँगी। (कुछ लोगों के कहने से मैं दूर नहीं जाऊँगी)।'

रावं तदागत्य चिमाजिराह -
'यात्रा-मुहूर्तः परिपालनीयः।'
शीघ्रं गतो नोत्तरमेव दत्वा
प्रश्ना लभन्ते न सदोत्तराणि।।३१५।।

(संस्कृतटीका)

तदा मस्तानी-रावयोः सम्वाद-समये। युद्धस्य यात्रायाः मुहूर्तः शुभवेला। शीघ्रं गच्छामो वयमित्यर्थः। (श्रुत्वा चिमाजि-वाक्यमाकर्ण्य।) रावः शीघ्रं गतः मस्तानीतः दूरं गतः, तस्यै वचनमुत्तरं वा न दत्वा। प्रश्नाः सदा उत्तराणि न लभन्ते प्राप्नुवन्ति। अर्थान्तरन्यासः।

(हिन्दी)

उन दोनों का सम्भाषण चल रहा था उस समय चिमाजीने आकर राव से कहा -

'यात्रा के प्रस्थान का मुहूर्त है, उसका पालन करना चाहिए।' यह सुनकर राव यकायक निकल पड़े, उन्होंने मस्तानी के प्रश्न का उत्तर नहीं दिया। कुछ प्रश्न अनुत्तरित रहते हैं।

सूर्यो हि संक्रान्तिदिने सलीलम्
अश्वैर्यथाक्रामति सोऽत्तराशाम्।
रावस्तथा दक्षिणदेशभागाद्
अथोत्तराशां सदलः प्रविष्टः।।३१६।।

(संस्कृतटीका)

सलीलम् विनायासेन। संक्रान्ति-दिने पर्वणि उत्तराशां - उत्तरदिशाम्। दक्षिण-देशात् पुण्यपत्तनात् मालवाप्रदेशम् उत्तरदिशायां दक्षिणतः। दक्षिणदिशाया दाक्षिण्यं प्रविष्टम्। सूर्यः अश्वैः सह तथा रावोऽपि सैन्येन सह उत्तरस्यां दिशि प्रविवेश। उपमा।

(हिन्दी)

जिस प्रकार सूर्य संक्रान्ति के पर्व पर दक्षिण से उत्तर दिशा में अश्वों के साथ संक्रमण करता है, उसी प्रकार बाजीराव ने अपने सैन्य के साथ उत्तर दिशा में स्थित मालवा प्रदेश में दक्षिण से प्रवेश किया।

रेवानदीतोयपवित्रतीरे
तत्राधिवासं स तु कर्तुमैच्छत्।
कर्तव्यबुद्ध्या तु ततः प्रतस्थे
व्यक्तेर्महद् राष्ट्रकृते हि कार्यम्।।३१७।।

(संस्कृतटीका)

रेवायाः नर्मदायाः तोयं जलम् तेन पवित्रं पूतं तीरम् तस्मिन्। रावेरखेडी-ग्रामे। तत्र अधिवासं वसतिम्। व्यक्तेः एकस्य मनुष्यस्य राष्ट्रं भारतम् तस्य कृते। अर्थान्तरन्यासः।

(हिन्दी)

नर्मदा के जल से पवित्र तट पर (वहाँ रावेरखेड़ी में) कुछ दिन रहने की राव की इच्छा हुई। किन्तु कर्तव्य-बोध के कारण वे वहाँ से आगे चल पड़े। व्यक्तिगत इच्छा की अपेक्षा राष्ट्र के लिए कर्तव्य अधिक महत्त्व का होता है।

विवेश रावः खलु मालवेषु
रेवां ससैन्योऽप्यवगाह्य तस्थौ।
ततः प्रतस्थे पुरतो ददर्श
सरो विशालं जलदुर्ग-रम्यम्।।३१८।।

(संस्कृतटीका)

श्रीबाजीरावः। अवगाह्य स्नात्वा। रम्यं जलमध्ये रचितो दुर्गः, तेन रम्यम्। भोपाल-नगरी-सरोवर-समीपे स्थितस्य दुर्गस्य वर्णनम्।

(हिन्दी)

श्री बाजीराव ने अपने साथ सैन्य लेकर मालवा प्रदेश में प्रवेश किया, नर्मदा नदी में स्नान कर वह वहाँ रुकें और वहाँ से निकलकर आगे एक जलदुर्ग से सुन्दर दिखाई देने वाले विशाल सरोवर को भी उन्होंने देखा।*

*(यहीं आज भोपाल का बड़ा तालाब है)।

सरोदुकूलं वसनं हि यस्या
ददर्श तां भोजपुरीं स रम्याम्।
गिरौ विशालं शिवमन्दिरम् तद्
आहूतवन्मुक्तिकृते ध्वजेन।।३१९।।

(संस्कृतटीका)

सः बाजीरावः। सरः, जलाशयन् दुकूलं रेषावस्त्रम् तदेव जलवसनम्। भोजपुरीं भोपालनगरसमीपस्थाम्। गिरौ उन्नतस्थाने। तम् रावः ध्वजेन पताकया आहूतवत्। उपमा अतिशयोक्तिश्च।

(हिन्दी)

राव ने वहाँ मानों (ऊँचाई से) रेशम की साडी जैसे सुन्दर जल से युक्त (भोपाल के समीप में स्थित सरोवर के साथ) भोजपुरी को देखा। वहाँ उँचाई पर स्थित विशाल शिवमन्दिर को देखा। मानों वह मन्दिर अपनी फहरानेवाली पताका से राव को मुक्ति हेतु बुला रहा था।

आदौ विशाले शिवमन्दिरे च
बभूव धन्यः शिव-दर्शनेन।
यशः कृते प्रार्थितवान् स देवम्
देवाद् यशः कामयते मनुष्यः।।३२०।।

(संस्कृतटीका)

मालवा-प्रवेश-समये प्रथमतः। शिव-मन्दिरे भोजनिर्मिते। यशोऽधिगन्तुम् आगामि-युद्धे विजयस्य प्राप्त्यर्थम्। देवात् ईश्वरात्। यशः कीर्तिं कामयते इच्छां करोति। अर्थान्तरन्यासः।

(हिन्दी)

श्री बाजीराव वहाँ प्रथम शिवमन्दिर गये और शिवजी के दर्शन से धन्य हुए। उन्हों ने आगामी युद्ध में विजय प्राप्त करने हेतु भगवान् शिवजी की प्रार्थना की। मनुष्य भगवान् से अपने यश की कामना करता है।

स्वमन्त्रिभिश्चाप्यनुमोदितः सः
भोजस्य कीर्तिप्रद-भोजपालम्।
चक्रे बलादाक्रमणं स शत्रौ
वने महापूर इव प्रचण्डः।।३२१।।

(संस्कृतटीका)

स्वस्य श्रीबाजीरावस्य, मन्त्रिणः अमात्याः, होलकरादयश्च, तैः। भोजस्य धाराधीशस्य भोजस्य, कीर्तिप्रदं यशा यशसा युक्तं, भोजपालम् अधुना प्रदेशस्य राजधा[illegible]न विदितं भोपाल-नगरम्। शत्रौः निजाम-सैन्ये। वने अरण्ये महापूरः जल-विप्लव इव, आक्रामत् अभियानं चकार। उपमा।

(हिन्दी)

अपने मन्त्रियों तथा होलकर आदि सेनापतियों से अनुमोदन प्राप्त कर श्री बाजीराव ने धाराधीश भोज के यश को धारण करनेवाले भोपाल नगर में जाकर शत्रु के सैन्य पर जोरदार हमला किया। जैसे बड़ी बाढ़ जंगल में तबाही मचा देती है।

आक्रम्य जित्वा च निजामपुत्रम्

बध्वा च तं रक्षितवान् पुरं सः।

भोजस्य कीर्तिः परिरक्षितात्र

मुक्तं कृतं तेन सरोवरं च।।३२२।।

(संस्कृतटीका)

सः रावः निजामस्य पुत्रम् बध्वा भोपाल-दुर्गे। कारायां निक्षिप्य। तेन रावेण भोजपुरम् रक्षयित्वा भोजस्य नृपस्य कीर्तिः यशः। सरोवरम् भोपाल-नगरस्य विशालं सरोवरं मुक्तं कृतम्। शत्रुभ्यः इत्यर्थः।

(हिन्दी)

बाजीराव ने निजाम के पुत्र नसीरजंग पर हमला बोल दिया, उसे जीत लिया तथा भोपाल के किले में उसे बंदी बनाया। इस प्रकार उन्होंने नगर को बचाया। उन्होंने धारा-नरेश श्री भोज की कीर्ति सुरक्षित की और वहाँ के (विशाल) सरोवर को (शत्रु के शिकंजेसे) मुक्त किया।

टिप्पणी - आज के भोपाल के किले में बाजीराव प्रथम ने निजाम के पुत्र को जीतकर वहाँ कैद किया था - इतिहास।

ततो निजामो निजमुक्तिहेतो
रावं तदा प्रार्थितवान् प्रणम्य।
रावाय पूर्वार्जितदेशभागान्
दत्वा स लेभे निजमुक्तिमेव।।३२३।।

(संस्कृतटीका)

निजस्य स्वस्य मुक्तिः। बन्धनादित्यर्थः। पूर्वं अर्जिताः पूर्वार्जिताः पूर्वकाले जिताः। ते प्रदेशाः। तान् प्रत्यर्पयित्वा पुनश्च प्रतिदानं कृत्वा।

(हिन्दी)

उसके अनन्तर बन्धन से छुटकारा पाने हेतु निजाम-पुत्र ने श्री बाजीराव को प्रणाम कर प्रार्थना की। तब श्री बाजीराव के जो प्रदेश निजाम ने पूर्व में लिये थे उन्हें लौटाने पर ही उसने कैद से छुटकारा पाया।

उवाच रावं स निजाम-पुत्रः -
'मत्प्राणदानं विहितं भवद्भिः।'
उवाच रावो - 'मम लक्ष्यमासीत्
संरक्षणं भोजकृतास्पदस्य'।।३२४।।

(संस्कृतटीका)

जितो निजामपुत्रः। भवद्भिः रावैः। लक्ष्यम्, कर्तव्यम्। भोजेन धाराधीशेन कृतं निर्मितं आस्पदम् स्थानम्। सांस्कृतिकम् स्थानम् भोजस्येत्यर्थः।

(हिन्दी)

हारे हुए निजाम के पुत्र ने राव से प्रार्थना की कि,

'आपने ही मुझे जीवन-दान दिया है।'

उस पर राव ने कहा -

'मेरा एक लक्ष्य था - राजा भोज द्वारा यहाँ निर्मित स्थान की रक्षा करना। (वह मैने किया)।'

मुक्तं कृतं भोजपुरं तथैव
सरोवरं श्रीशिवमन्दिरं च।
निष्कण्टकं तेन कृतं स्वराज्यं
निष्कण्टकं नैव कृतं स्वगेहम्।।३२५।।

(संस्कृतटीका)

निजामाद् भोजपुरं शत्रुं निजामं जित्वा मुक्तं चकार। रावस्तदा तेन भोजपुरं मुक्तं स्वतन्त्रं कृतम्। सरोवरं जलाशयम्। शिवस्य भोजनिर्मितं मन्दिरं च। एवं तेन स्वराज्यं निष्कण्टकं शत्रुविहीनं कृतम्। किन्तु स्वगेहं शनिवारवाड़ा-भवनं तस्य कण्टकरूपैराप्तैः कुटिलैर्विहीनं नैव कृतम्। स्वराज्यशत्रून् जित्वापि स्वगृहस्य शत्रून् जेतुं न। विषमालंकारः।

(हिन्दी)

(निजाम को हराया और बाद में मित्र बनाकर छोड़ दिया तब) राव ने उस के शिकंजे से भोजपुर, जलाशय और शिवमन्दिर को बचा लिया। इस प्रकार बाजीराव ने स्वराज्य को शत्रुओं से मुक्त तो करा लिया किन्तु अपने पुणे स्थित शनिवार वाड़ा के घर के कँाटो जैसे सगे-सम्बन्धियों से मुक्त नहीं किया।

श्रीमालवाक्षेत्र-जय-प्रसन्नो
'रावेरखेडीं'-स्थितनर्मदायाः।
तीरे च विश्रान्तिकृते कृती सः
न पुण्यपुर्यामभिगन्तुमैच्छत्।।३२६।।

(संस्कृतटीका)

श्रीमालवाक्षेत्रम् भारतमध्यक्षेत्रम्। तस्य जयेन प्रसन्नः हृष्टः। रावेरखेडीति नामा रेवातटे ग्रामः तत्र। कृती धन्यः। अभिगन्तुम् पुण्यपुरीं गन्तुम्। तत्रस्थानां स्वजनानां सहवासं नैच्छत्।

(हिन्दी)

मालवा को जीत लिया, इसलिए प्रसन्न बाजीराव को नर्मदा के किनारे 'रावेरखेड़ी' नामक ग्राम में विश्राम हेतु रहने की इच्छा हुई। किन्तु (मस्तानी का द्वेष करनेवाले बांधवों के कारण) उन्हें पुणे में जाने की इच्छा नहीं हुई।

सा नर्मदा या प्रददाति नर्म

यस्यां च सिद्धा तप आचरन्ति।

विन्ध्यं त्वविन्ध्यं भुवि विन्धयन्ती

रावस्तु तस्यास्तटवासमैच्छत्।।३२७।।

(संस्कृतटीका)

नर्मदा नदी नर्म सुखम्। सिद्धा मुनयः। अविन्ध्योऽपि छेत्तुमशक्यत्वेऽपि विन्ध्यं पर्वतं भुवि विन्ध्य-पादस्थं प्रस्तरं या विन्धयन्ती शिला-भेदनं कृत्वाग्रे गच्छन्ती। रेवातटस्य वासं तत्राधिवसितुम्। विरोधः काव्यलिङ्गम् च।

(हिन्दी)

जो नर्म-दा नदी लोगों को सुख प्रदान करती है, जिस के तटपर सिद्ध मुनिजन तपस्या करते हैं और जो अविन्ध्य (अभेद्य) विन्ध्याचल को फोड़कर आगे चल पड़ी है, उस के तीर पर रहने की इच्छा बाजीराव ने की। (वे पुणे न जाकर नर्मदा के तट पर मन की शान्ति के लिए रहना चाहते थे)।

रावेरखेडीं च समागतः स
आज्ञापयामास तदा चिमाजिम्।
'सम्प्रेषय त्वं त्वरया हि पुण्यात्
मस्तानिरूपं महदौषधिं मे'।।३२८।।

(संस्कृतटीका)

मध्यप्रदेशे नर्मदातटे रावेरखेडीति ग्रामः। पुण्यं पुण्यपत्तनम्। मस्तान्याः रूपेण महदौषधिम् सन्तोषदात्रीम्। नाहं पुण्यं गन्तुमिच्छामि, मस्तानीं अत्र शीघ्रं प्रेषयेति तदादेशः।

(हिन्दी)

मध्यप्रदेश में नर्मदा के तट पर स्थित रावेरखेड़ी ग्राम में विजयी राव आये और उन्होंने भाई चिमाजी को आज्ञा दी –

'तुम पुणे जाओ और मस्तानी को (शीघ्र) यहाँ भेज दो। वह मेरे लिए संजीवनी औषधि है।' (मैं पुणे नहीं जाना चाहता हूँ। मस्तानी को ही यहाँ भेज दो।)'

रावेरखेडीं प्रिय-नर्मदायास्-
तीरे समासाद्य कृतोऽधिवासः।
न चानुभूतेन महाज्वरेण
स आहतोऽभून्न च शान्तिमाप।।३२६।।

(संस्कृतटीका)

युद्धे विजयं प्राप्य रावः रावेरखेडीति नामानं ग्राममागत्य तत्र वास्तव्यम् चकार। महान् असाध्यरूपः ज्वरः रोगः। न पूर्वं अनुभूतो जीवने। महता ज्वरेण रुग्णो बभूव।

(हिन्दी)

वहाँ रावेरखेड़ी में राव ने वास्तव्य किया। किन्तु दुर्भाग्य से वहाँ पूर्व में राव ने कभी जिस का अनुभव नहीं किया था उस बड़े ज्वर से वे आहत हुए और उन्हें शान्ति नहीं मिली।

टीप - रावेरखेड़ी मध्य-प्रदेश में स्थित है।

गत्वा तु पुण्यं चतुरः स बन्धु-
र्मस्तानिमत्रैव निधाय बन्धे।
रावं प्रति प्रेषितवाँश्च काशीम्
दिव्यौषधिर्भाग्यत एव लभ्या।।३३०।।

(संस्कृतटीका)

राजनये चतुरः सांसारिक-कार्येषु कुशलः। बन्धुः रावस्य चिमाजिः। अत्रैव पुण्यनगरे बन्धे कारायाम्। काशीम् राव-पत्नीम्, न तु मस्तानीम्। दिव्या चासौ औषधिश्च अमोघोपायवती औषधिः। अर्थान्तरन्यासः।

(हिन्दी)

(राव ने मस्तानी को रावेरखेड़ी भेजने के लिए कहा था) किन्तु चतुर चिमाजी ने पुणे में पहुँचकर उलटे मस्तानी को कैद में डाल दिया और उस के ऐवज में राव की पत्नी काशीबाई को रावेरखेड़ी में राव के पास भेज दिया। अमोघ उपाय करने वाली दिव्य औषधि बड़े भाग्य से मिलती है। (राव के दुर्भाग्य से मस्तानी नहीं आ सकी।)

रवेश्च बिम्बं जलधावतीर्णम्
रेवाजलेऽभूदधिकस्तु तापः।
सा नर्मदा या तु ददाति नर्म
तीरे समागत्य स मूर्च्छितोभूत्।।३३१।।

(संस्कृतटीका)

रावेरखेडी-ग्रामे नर्मदायास्तटे ज्वरतापनिवारणाय रावो नर्मदाजले प्रविष्टः। सूर्यः जलधौ समुद्रेऽवतीर्णः। किन्तु रेवाप्रवाहे नर्मदाजले तापः ज्वरस्येति यावत्। या नदी नर्म सुखं ददाति सा। तापं ज्वरस्य हर्तुं निराकरणाय। दृष्टान्तः। रूपकम्।

(हिन्दी)

राव ने नर्मदा में ज्वरताप दूर करने के लिए प्रवेश किया। समुद्र में सूर्य का बिम्ब प्रवेश कर गया। जो नदी नर्म (सुख) देती है अतः वह नर्म-दा है, फिर भी राव के ज्वरताप को वह दूर नहीं कर सकी। ज्वर और अधिक बढ़ गया और वे किनारे पर आकर मूर्च्छित हो गए।

यथा महापर्वतशृङ्गभागः
पर्जन्यवातैः पतति प्रगल्भः।
पपात वातस्य रुजा प्रजल्पन्
प्रियां विना नैव तु जल्पनास्य।।३३२।।

(संस्कृतटीका)

मूर्च्छितायामवस्थायाम्। यथा महाँश्चासौ पर्वतश्च महागिरिश्च। पर्जन्यं वाताश्च तैः। प्रगल्भः उन्नतोऽपि। वातरोगात् बुद्धौ भ्रान्तिः। रोगादित्यर्थः। प्रजल्पन् किन्तु जल्पनायामपि प्रियां न विस्मरति स्म। उपमा।

(हिन्दी)

किसी महान् पर्वत के शिखर का कोई हिस्सा जोर की वर्षा तथा हवा के थपेड़ों से नीचे आ गिरता है, उसी प्रकार राव वातरोग के भ्रम से आहत हुए और नीचे गिरे। तब वे बड़बड़ाने लगे। किन्तु उन की वाणी में मस्तानी का नाम अचेतनावस्था में भी आता रहा।

'सा जीवितं मे हृदयं द्वितीयं
तथाविधं प्रेम तदद्वितीयम्।
तस्याश्च रागो मम रोगहर्ता
निर्णाविका नौरिव सागरे सा।।३३३।।

(संस्कृतटीका)

रावस्याकाण्ड एव विलापः – सा मस्तानी। द्वितीयं अपरम्। तथाविधमलौकिकं तथा तादृशमननुभूतं केनाप्यन्येन। अद्वितीयम् एकमेव। मम रावस्य तस्याः मस्तान्याः रागः प्रेम रोगस्य देहे दाहात्मकस्य रोगस्य हन्तुं समर्थः। यथा सागरे समुद्रे नौका नाविकेन नौकाचालकेन विना संकटग्रस्ता भवति तथा मस्तानी मम विना पुण्यपत्तने असहाया विनश्यतीति भावः। उपमा।

(हिन्दी)

'मस्तानी मेरा प्राण है, मेरा दूसरा हृदय है। उस प्रकार का उसका प्रेम अद्वितीय है। उस का प्रेम मेरे इस रोग का हरण कर सकता है। (किन्तु हाय! चिमाजी ने उसे नहीं भेजा।) वह तो वहाँ पुणे में मेरे बिना, सागर में नाविक से रहित फँसी नाव के समान असहाय होगी।

अस्त्रीकृता स्त्री मम मृत्युहेतोः

गृहस्य दीपैः स्वगृहं तु दग्धम्।

पश्चात्तु मे किन्नु भवेच्च तस्याः

स्त्रीणां हि दुःखं न निवार्यते किम्?'।।३३४।।

(संस्कृतटीका)

ज्वर-पीडितस्य रावस्य रावेरखेडी-ग्रामे रेवातटे उक्तिः अस्त्रीकृतेति। स्त्री मस्तानी अस्त्रीकृता, तामाधृत्य मे लक्ष्यभेदः स्वजनैः कृत इत्यर्थः। मम रावस्य मृत्युहेतोः मृत्योः कारणात्। मे रावस्य। किन्नु शंकायाम्। सामान्येन समर्थयति - स्त्रीणां महिलानाम्। न निवार्यते न दूरीकर्तुं शक्यते किम्? स्त्री सा अस्त्री न स्त्री कथमिति विरोधाभासोऽपि।

(हिन्दी)

रावेरखेड़ी में ज्वरसन्तप्त राव कह रहे थे -

'मेरे लोग एक स्त्री को लेकर उस अस्त्र से मुझे मार रहे हैं। स्त्री को अ-स्त्री (अस्त्र) बनाकर? घर के दिये से अपना ही घर जल गया। (मेरी चिन्ता है मेरे रहते हुए अगर यह हाल है) तो मेरे चले जाने के बाद उस की क्या दशा होगी? क्या, स्त्रियों का दुःख कभी कम होगा?'

संज्ञां च लब्ध्वा वदति स्म रावः -

'स्वदेश एषः परिरक्षणीयः।

शत्रुस्तु मे नास्ति, परं स शत्रुः

यो भारतस्यैव, स मेऽस्ति शत्रुः'।।३३५।।

(संस्कृतटीका)

चेतना-प्राप्त्यनन्तरं रावः वदति - स्वदेशः भारतदेशः। परचक्रात् परिरक्षणीयः। मे रावस्य। किन्तु अजातशत्रोर्ममापि स एव शत्रुः यः भारतस्य शत्रुः स एव मे शत्रुः। परचक्रमेव शत्रुरित्यर्थः।

(हिन्दी)

राव होश में आनेपर बोले -

'इस भारत का (परचक्र से) संरक्षण करना जरूरी है। वैसे मेरा कोई (खास) शत्रु नहीं है, किन्तु जो भारत का शत्रु है, वह मेरा भी शत्रु है। (परचक्र से ही भारत को बचाना चाहिए)।'

रवेश्च बिम्बं तिमिरेऽपि गत्वा

मस्तानि-संध्या हृदि संस्थिता सा।

रटन् प्रिया-नाम दिवंगतोऽसौ

सूर्ये गतेऽस्तं गहनान्धकारः।।३३६।।

(संस्कृतटीका)

रावस्य स्वर्गगमन-समये। रवेः सूर्यस्य बिम्बं मूर्छायास्तमसि। सूर्यास्तो बभूव। तत्कालीना संध्येव मस्तानी रावस्य हृदये। तस्याः मस्तान्याः नाम। रटन्। सूर्यास्तानन्तरमन्धकारो गहनः। रूपकम्।

(हिन्दी)

मस्तानी का नाम लेते हुए श्री राव के प्राण-पखेरू उड़ गए। सूर्य का बिम्ब अन्धकार मे खो गया था। सूर्यास्त हो गया था और मस्तानी की संध्या उनके मन पर छा गई। सूर्यास्त के बाद गहन अंधेरा छा गया। (राव की मृत्यु से भारत भर में शोक छा गया)।

निशम्य रावस्य तु रुग्णतां सा
स्वं मोचयित्वा च यथा कथंचित्।
कारागृहाद् राजगृहं विहाय
रावेरखेडीं प्रति निर्गतैव।।३३७।।

(संस्कृतटीका)

यथा कथंचित् येन केन प्रकारेण स्वं मोचयित्वा मुक्तिं बन्धनाद् राजगृहं शनिवारवाड़ाभवनम्। रावस्य रूग्णस्य ज्वरतापतप्तस्य। निर्गतैव झटिति निर्जगाम।

(हिन्दी)

रावेरखेड़ी में राव गंभीर रूप से बीमार है यह खबर सुनते ही मस्तानी ने किसी प्रकार से शनिवारवाड़ा के कारावास से अपने आप को मुक्त करा लिया और रावेरखेड़ी के लिए वह निकल पड़ी।

मार्गे निशम्य प्रिय-मृत्युवार्ताम्
निश्चेतना सा तु पपात भूमौ।
पुनः प्रबुद्धा वचनञ्च तस्याः
'स्वर्गे गमिष्ये प्रियसंगमार्थम्।।३३८।।

(संस्कृतटीका)

मार्गे पाबलनाम्नि ग्रामे सा रावो दिवंगत इति वार्ताम्। निश्चेतना मूर्छिता। प्रबुद्धा संज्ञां लब्ध्वा। प्रियस्य रावस्य संगमार्थम् मिलनार्थम्।

(हिन्दी)

रावेरखेड़ी जाते समय मार्ग में पाबल ग्राम में मस्तानी को जब बाजीराव की मृत्यु की वार्ता मिली तब वह यकायक मूर्छित होकर जमीन पर गिर पड़ी। पुनः होश आने पर उसने कहा -

'मैं राव को मिलने के लिए स्वर्ग में जाऊँगी।

नक्षत्रं मे हृदय-वियतो
मद्विना लुप्तमेतत्
उल्कापातस्तमसि वियतो
देहपातस्तथा मे।
राष्ट्रे शत्रोः शमनमधुना
स्वप्नमेवाद्य नष्टम्
शान्तं तेजस्तमसि सहतां
पामराः छत्रभङ्गम्।।३३६।।

(संस्कृतटीका): मन्दाक्रान्ता-वृत्तम्। रावे दिवंगते मस्तानी पुनः विलपति - मे मस्तान्याः हृदयमेव वियत् आकाशम्। नक्षत्रं देदीप्यमानो राव एव। उल्कापातः आकाशात् पतनं तथा मे मरणमपि। राज्ये भारते शत्रोः परचक्रस्य शमनं स्वप्नं रावस्य। रावस्य तेजः शान्तं विलयं गतम्। पामरा यैः आवयोः प्रताडना कृता ते वराकिनो दीनाः छत्रभङ्गं आतपनिवारणरूप-छत्रं तस्य भङ्गम्। रूपकम्।

<u>हिन्दी</u> - मेरे राव क्या गये, मेरे हृदय के आकाश से नक्षत्र ही मुझे छोड़ कर चला गया है। अब उल्का के समान मेरे देह का पतन भी होगा। भारत पर आए परचक्र को नष्ट करने का राव का स्वप्न नष्ट हो गया है। अब तेज नहीं रहा, अन्धकार में क्षुद्र लोग छत्रभंग को सहन करें।

छिन्ने सूत्रे क्व च हि सृगियम्?
क्वास्ति तत् प्रेमसूत्रम्?
शुण्डादण्डाहत-कमलिनी
हस्तिनोत्खातवृन्ता।
छिद्रं नावो, गहनजलधि-
र्दूरमद्यापि तीरम्
किं तत्तीरम्? यदि न कुरुते
कोऽप्यनन्यः प्रतीक्षाम्?' ।।३४०।।

(संस्कृतटीका): मस्तानी-विलापः - रावे दिवंगते प्रेम-सूत्रम्। मालागुम्फनवस्तु छिन्नम् नष्टम्। सृगियं मालेयं क्व? हस्तिना शुण्डादण्डेन उत्खातमुत्पाटितं वृन्तम् नालदण्डो यस्याः सा कमलिनी। अधुना नावः नौकायाः छिद्रम् जातम्, गहनो जलधिः समुद्रः, अद्यापि तीर्त्वा गन्तुमशक्यं तीरं दूरे। अथवा किं तत्तीरं तटम् वा यत्र कोऽपिं अनन्यः स्वकीयोऽप्येकः प्रतीक्षां मिलनायातुरो न। अन्तिमे चरणे आक्षेपालङ्कारः। काव्यलिङ्गम् दृष्टान्तश्च। देहत्यागाद् वरमुपायं न पश्यामीत्यर्थः।

हिन्दी - मस्तानी का, राव दिवंगत होने पर विलाप - 'अगर धागा टूट जाए तो माला का क्या होगा? वह प्रेम का सूत्र कहाँ चला गया? (कालरूपी) हाथी ने अपनी सूँड से कमलिनी) मुझ को झकझोर ड़ाला और डंठलसमेत उखाडकर फेंक दिया है। नाव में छेद पड़ गया है, समुद्र गहरा है और तीर तो बहुत दूर है। वह तीर भी क्या है? जहाँपर (मेरा अपना) कोई अकेला प्रतीक्षा न कर रहा हो?'

स्मारं स्मारं समरगमनात्
पूर्वदत्तं वचस्तद्
दुःखाग्नौ किं प्रियविरहजे
सा तु दग्धाप्यदग्धा।
कारागारे गृहपरिजनैः
सा तु बद्धाप्यबद्धा
मुक्तं प्रेम प्रियजनगतं
को हि बद्धुं समर्थः? ।।३४१।।

(संस्कृतटीका): अन्ते राववचनं स्मरति मस्तानी यत् समरं युद्धं गच्छता तेन पूर्वं प्रदत्तम्। दुःखमेवाग्निः प्रियस्य रावस्य विरहाज्जातः तस्मिन्। दग्धाऽपि न दग्धा किञ्चित्कालं जीविता। गृहस्य रावस्य शनिवारवाडेति महालयस्थ-परिजनैः बान्धवैः बद्धापि तां बद्धुं न शक्नुवन्ति स्म। सामान्येन समर्थयति - मुक्तं लौकिकाद् बन्धान्मुक्तं स्वतन्त्रं प्रेम यस्य प्रियजनगतं प्रियजनविषयंकम्। कः मनुष्यः बद्धुं समर्थः? न कोपीऽत्यर्थः। प्रेम न मानुषे बन्धने निगडितं भवति इति भावः। अर्थान्तरन्यासः। करुणो रसः।

हिन्दी - राव के युद्ध के लिए जाने के पूर्व दिये हुए वचन मस्तानी बारंबार याद करती रही। प्रिय राव के चिरविरह से उत्पन्न दुःख की आग में झुलसी मस्तानी फिर भी जली नहीं थी, प्रेम के कारण जीवित थी। और घर के परिवार के लोगों ने उसे कारागार में ड़ाल दिया था, तब भी वह स्वतंत्र ही थी। अपने प्रिय व्यक्ति के प्रति जो प्रेम होता है वह मुक्त होता है। उसे भला कौन बाँध सकता है?

ब्रह्मेन्द्रनामा गुरूरुक्तवाँस्ताम् –
'सहस्व वासु! प्रियमृत्युदुःखम्।–
क्रीडा हि रात्रिंदिवयोरिवेयम्
जीवस्य देहात् परिवर्तनं तत्'।।३४२।।

(संस्कृतटीका)

पेशवानां गुरूः ब्रह्मेन्द स्वामीति नामा तां मस्तानीं सान्त्वनां दातुमुक्तवान्। वासु, बाले ! प्रियस्य रावस्य मृत्योः दुःखं वेदनाम्। रात्रंदिवयोः रजनीदिनयोरिव इयं क्रीडा खेलनम्। जन्म-मृत्योरित्यर्थः। तत् मृत्युरूपं तत्त्वम्। जीवस्य देहात् शरीरात् परिवर्तनम्। यथा गीतायामुपदेशः।

(हिन्दी)

पेशवा कुल के गुरू *ब्रह्मेन्द्रस्वामी* ने मस्तानी को सान्त्वना देते हुए कहा –

'बेटी, प्रिय बाजीराव की मृत्यु के दुःख को सहन करो! यह तो रात और दिन का खेल है। जीव देह से निकलता है वह परिवर्तन मात्र है। (गीता के अनुसार आत्मा की मृत्यु नहीं होती!)'

टीपः *ब्रह्मेन्द्रस्वामी* तथा *दीक्षित* नामक पेशवा के दो कुलगुरू थे।

मेने समाश्वासितचेतना सा
रावं विना शून्यमिदं च विश्वम्।
द्वारं पिधायैव गता गता सा
सुपञ्जरान्मुक्तविहंगिनीव।।३४३।।

(संस्कृतटीका)

अन्ते मस्तान्या मृत्युं वर्णयति- मेने इति। पूर्वं मूर्च्छिता, अनन्तरं समाश्वासितं चैतन्यं यस्याः सा। शून्यं सारहीनम्। स्वभवनस्य द्वारं कपाटं पिधाय। गता सा गतैव। न पुनर्बहिरागता। मृत्युमवाप। यथा सुन्दरं पञ्जरं विहाय पक्षिणी दूरं मुक्तरूपेण गच्छति तथा मस्तानी स्वसुन्दरं देहं विहाय स्वर्गम् जगाम। उपमा।

(हिन्दी)

(लोगों के प्रयासों से) मूर्च्छा में से मस्तानी सचेत हो गई। तब बाजीराव के बिना विश्व को शून्य उसने माना। वहाँ अपने भवन के द्वार को अंदर से बंद कर के वह गई सो गई। (पुनः नहीं लौटी)। पक्षिणी जैसे सुंदर पिंजरे को छोड़ कर उड़ जाती है उस प्रकार वह अपने सुन्दर शरीर को छोड़ कर दूर स्वर्ग को सिधार गई।

पञ्चत्वलीनापि तदीय-काया।

मायेव सा ब्रह्मणि किं न लीना।?

द्वयोरभावे द्विषतामभावष्-

चिरन्तनः प्रेममयो हि भावः।।३४४।।

(संस्कृतटीका)

तदीया मस्तान्याः काया निर्जीवं शरीरम्। पञ्चतत्वेषु। पञ्चमहाभूतेषु। सा मस्तानी ब्रह्मणि पंरमात्मतत्त्वं मायेव प्रविवेश एवं किं न लीना? सायुज्यतामवापेत्यर्थः। द्वयोः मस्तानी–रावयोः अभावे दिवंगते द्विषतां तयोः द्वेषं कुर्वाणानाम् अभावः द्वेष्याभावे तेषामपि नास्तित्वम्। प्रेममयः प्रीतिमयो भावः चिरन्तनः न म्रियते। उपमार्थान्तरन्यासश्च।

(हिन्दी)

मस्तानी की काया तो पञ्चतत्व में विलीन हो गई। जैसे माया ब्रह्म में विलीन होती है। (राव की आत्मा में उस की आत्मा मिल गई) उन दोनों के अभाव में उन का द्वेष करनेवाले भी अभावग्रस्त हो गए। वास्तव में प्रेमतत्त्व ही वह भाव है जो चिरन्तन रहता है। (उनका प्रेम अमर है।)

रसो रसायाः किमु लुप्यते सः?
ग्रीष्मेऽपि चित्तं सरसं रसायाः।
स्वरो विलुप्तः पुनरेति कण्ठे
न प्रेम लुप्तं तु गतागतानाम्।।३४५।।

(संस्कृतटीका)

रसायाः पृथिव्याः रसः जलं विलुप्यते किमु नष्टं भवति किम्? ग्रीष्मे ऋतौ रसायाः पृथिव्याः चित्तं हृदयं सरसं रसान्वितं सजलम्। आकाशे स्वरो लुप्यते, किन्तु गायकस्य कण्ठे पुनरागच्छति। गतागतानां ये मानवा गताः मृता दिवंगताः पुनर्जाताश्च, तेषाम् प्रेम न लुप्यते नष्टं न भवति। दृष्टान्तोऽर्थान्तरन्यासश्च।

(हिन्दी)

पृथ्वी का जल कभी नष्ट होता है क्या? वह उस के हृदय में भी विद्यमान रहता है। गायक का स्वर आकाश में विलीन होने पर भी पुनः उस के कण्ठ में आ जाता है। मृत्यु और जन्म पानेवाले मानवों का प्रेम कभी नष्ट नहीं होता। प्रेम अमर है।

रावावसाने किमु कम्पिता भूः?
लता अमुञ्चन् निजपुष्परागम्।
क्षीणश्च चन्द्रः स्वकलांशहानात्
चन्द्रेऽश्रुजं कज्जलमेव नाङ्कः।।३४६।।

(संस्कृतटीका)

बाजीरावे दिवंगते भूः धरित्री कम्पिता किमु? उद्याने लताः स्वपुष्पाणां रागम् प्रेम। चन्द्रः क्षीणः। स्वस्य कलानां अंशः तस्य हानात् त्यागात्। प्रकृतिः अपि रुरोद। चन्द्रोऽपि स्वकलानांत्यागेन क्षीणः। चन्द्रस्याश्रूणि, तैः जातं कज्जलं, न तु अङ्कः कलङ्कः?। अपह्नुतिः। उत्प्रेक्षा।

(हिन्दी)

बाजीराव दिवंगत हुए उस समय मानों भूकम्प आ गया था। (उद्यानों में) लताओं ने अपने फूलों का प्रेम त्याग दिया। चन्द्रमा भी क्षीण हो गया, क्योंकि उसने अपनी कलाओं के अंश को त्याग दिया। वह कलंक नहीं, अपितु चन्द्रमा के आँसुओं के साथ आया काजल है जो जमा हो गया। (प्रकृति भी रो पड़ी थीं)।

पतन् पतङ्गो हि यदास्तमेति
तदा प्रसन्नास्तु निशाचरास्ते।
जले विलुप्ते हि जलाशयः कः?
भूपेष्वनेकेष्वपि भूरनाथा।।३४७।।

(संस्कृतटीका)

रावावसाने रविः पतङ्ग इव व्योम्नि पतन् सायंतनेऽस्तं गच्छतीति। रात्रौ ये चरन्ति प्रबला निशाचराः दैत्याः। राष्ट्रशत्रवः प्रभवन्ति। यदि जलं तोयं विलुप्तं नष्टं, तर्हि कः जलाशयः। रावं विना वीरभूः का? भूपाः भूमिं पाल्यन्तो राजानः तेषु सत्सु, भूः राष्ट्रभूमिः अनाथा दीना दुःखिता। निर्वीरमुर्वीतलं जातमित्यर्थः। दृष्टान्तो विशेषोक्तिश्च।

(हिन्दी)

सूर्य भी गिरते हुए पतंग के रूप में जब अस्ताचल को गया तब रात्रि में निशाचर प्रबल हो उठे। यदि जल नष्ट हो गया तो जलाशय कैसे रहेगा? कहने को तो बहुत सारे भूपति थे किन्तु (निर्वीर) भूमि अनाथ हो गई।

अस्तंगतं पुण्यपुरस्य पुण्यम्
सह्याचलस्तापमसह्यमाप।
विन्ध्याचलश्चापि पपात भूमौ
रावावसाने महदन्धकारः।।३४८।।

(संस्कृतटीका)

पुण्यपुरस्य पुण्यं पावित्र्यम् अस्तंगतम् विलयं गतम्। सह्यो नामाद्रिः भारतस्य दक्षिण-पश्चिमे भागे। सोऽपि असह्यं सोढुमशक्यम् तापम् वेदनाम्। विन्ध्याचलः भारतमध्यभागस्थः। भूमौ पपात। रावस्य अवसाने दिवंगते अन्धकारः तमः। भारते निराशा बभूव। उत्प्रेक्षा अतिशयोक्तिश्च।

(हिन्दी)

बाजीराव के देहावसान से पुणे नगर का पुण्य ही मानों चला गया। सह्य पर्वत को असह्य वेदना झेलनी पड़ी। (देश के मध्यभाग में स्थित) विन्ध्याचल मानो जमीन पर आड़ा गिरा। बाजीराव की मृत्यु होने पर (सारे भारत में) अन्धेरा छा गया।

कोऽयं कालः? गणित-समयः?
कश्च तस्यास्ति धर्मः?
कालः सोऽपि प्रथितमहता-
मप्यकालेऽपहर्ता।
कोऽयं धर्मो? गणयति न यः
सज्जनं दुर्जनं वा?
सृष्टिं योऽन्ते जनयति, नमः
कालधर्माय तस्मै।।३४६।।

(संस्कृतटीका)

कविः सामान्यतया मृत्युं परामृशति क इति। कोऽयं काल इति पृच्छायां। प्रश्नः गणितश्चासौ समयश्चेति, समयेन यो गण्यते मानवैरिति कारणात्? कलनादित्यपि कालत्वम्। प्रथिताः विख्याताः श्रीबाजीराव-समाः महान्तः महापुरूषाः, तेषामपि अकाले चत्वारिंशत्तमे वयसि। अपहर्ता मृत्युः। यश्च कालः अन्ते मृत्योरनन्तरमपि सृष्टिं प्रकृतिं जनयति, तस्मै कालधर्माय यो सज्जनं दुर्जनं चापि स्वधया स्वधर्मेण वा अपहरति पुनः सृजति च, तस्मै नमः।

(हिन्दी)

यह कालधर्म है। काल क्या है? क्या मनुष्य अपनी सुविधानुसार समय की गणना करता है, वह काल है? और काल का धर्म क्या है? यह काल भी क्या है जो विख्यात महापुरूषों का अकाल मृत्यु से अपहरण कर लेता है? यह भी क्या धर्म है जो सज्जन या दुर्जन कौन है उस का विचार नहीं करता है? और जो मृत्यु के पश्चात् भी सृष्टि को जन्म देता है, उस कालधर्म को मेरा प्रणाम!

'कालो ह्ययं निरवधिः' - भवभूतिः।
'द्वैतयोगादेव कालः' इति कविरस्य काव्यस्य (डॉ. कवठेकरः)।
'The Time is the Fourth Dimension' - Einstein.

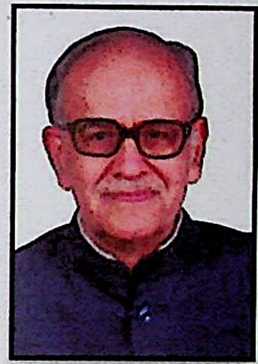
।। इति श्री - 'बाजीराव-मस्तानीयम्' इति संस्कृत - काव्ये डॉ. प्रभाकर नारायण कवठेकर - द्वारा विरचिते अपूर्वरागः द्वितीयोऽन्तिमो भागः।।

।। समाप्तम्।।

ऐतिहासिक तिथियाँः

१८.५.१६८२	शाहू का जन्म
३.११.१६९८	येसूबाईने सुलह कर रायगढ़ मोगलोंको दिया। शाहू और येसूबाई औरंगजेब की कैद में।
१६८९- १७०७	शाहू कैद में।
फरवरी १७०७	टौरंगजेब की मृत्यु।
८ मई १७०७	शाहू कैद से मुक्त। दक्षिण की ओर प्रयाण।
१२.१०.१७०७	खेड़ की लड़ाई में शाहू की विजय।
१.१.१७०८	शाहू ने सातारा जीत लिया।
२२.१.१७०८	शाहू का राज्याभिषेक। सातारा में।
१७.११.१७१३	बालाजी विश्वनाथ पेशवा बने।
२०.३.१७१९	बालाजी विश्वनाथ सरदेशमुखी की सनद लेकर दिल्ली से लौटे।
२.४.१७२०	बालाजी विश्वनाथ की मृत्यु।
२७.४.१७२०	बाजीराव को पेशवा पद मिला।
६.१२.१७२१	बजीराव के पुत्र नानासाहेब का जन्म।
१०.१.१७२४	बाजीराव पुर्तुगीज सन्धि।
१७२७-१७२८	बाजीराव की पालखेड़ मुहीम।
१०.२.१७३२	बाजीराव-पुर्तुगीज दूसरा समझौता।
१७३३	बाजीराव की जंजीरा मुहीम।
१७३४	मस्तानी के पुत्र शमशेर बहाद्दर का जन्म
१७३५	बाजीराव उत्तर की ओर।
१७३७	थ्दल्ली की ओर से निजाम मालवापर हमला करता है।
२९.३.१७३७	बाजीराव का दिल्ली पर धावा।
१७.७.१७३७	बाजीराव पुर्णे में वापस।
३०.११.१७३७	बाजीराव का नर्मदा पर मुकाम।
१३.१२.१७३७	भोपाल के पास बाजीराव-निजाम पुत्र (नासिरजंग) युद्ध।

१६.१२.१७३७	भोपाल में निजाम पुत्र बाजीराव के कब्जे में।
१७३७	बाजीराव पुर्तुगीज मुहीम पर।
७.१.१७३८	सराई-दुराई की सन्धि।
२७.३.१७३७	चिमाजी अप्पा ने ठाणे का कोट जीता।
१७३७-१७३८	बाजीराव की भोपाल मुहीम।
७.३.१७३६	दिल्ली में नादिरशाह दाखिल।
२५.४.१७३६	बादशाह की रक्षा करने का नादिरशाह का हिंदी संस्थानिकों तथा बाजीराव को फर्मान।
१.५.१७३६	नादिरशाह उस के देश वापिस जाता है।
१२.५.१७३६	बाजीराव ने वसई जीता।
१७३६	बाजीराव की निजाम नासिरजंग पर मुहीम।
१७३६	मस्तानी नज़र-कैद में।
२०.४.१७४०	बाजीराव का रावेरखेडी में मुकाम।
२८.४.१७४०	बाजीराव की मृत्यु। मृत्यु के समय पत्नी काशीबाई समीप थी।
मई १७४०	मस्तानी की मृत्यु।



महामहोपाध्यायानां डॉ. प्रभाकर नारायण कवठेकरमहाभागानां जन्म इन्दौरनगरे राजोपाध्याय -कुले दिनांके १६-६-१६२३ तमे वर्षे अभवत्। इमे महाभागाः एम्. ए. (संस्कृत, हिन्दी) पीएच्.डी., साहित्याचार्य-काव्यतीर्थ-साहित्यरत्नादि-मान्योपाधिभिर्विभूषिताः सन्ति,राष्ट्रपति द्वारा सम्मानिताः भारत - सर्वकारस्य केन्द्रीय - संस्कृत महामण्डलस्य तथा केन्द्रीय - संस्कृतानुदान-समितेश्च अध्यक्षाः भारत - सर्वकारस्य राष्ट्रिय - वेद - पुरस्कारेण समलङ्कृताः। एते लोकप्रियाः संस्कृत-प्राध्यापकाः, शासकीय - संस्कृत-महाद्यिालयस्य इन्दौरस्थस्य प्राचार्याः, उज्जयिन्यां विक्रम विश्वविद्यालयस्य च कुलपतिपवदं विभूषितवन्तः। अखिल-भारतीय-प्रच्यविद्यासम्मेलनस्य सर्वाध्याक्षाश्च आसन्। तिरुपतिस्थिते राष्ट्रिय - संस्कृत-विद्यापीठे इसे महाभागा 'ऑनरिस कॉझा' इति सम्मानेन साकं 'महामहोपाध्याय' इति उपाधिना विभूषितः, अनेक - कवि - सम्मेलनानाम् अध्यक्षाः, एतेषां काव्यगायनमपि लोकप्रियं भवति। प्रसिद्धा संस्कृत - कविता 'विमान-बाला' न केवलं देशे, अपितु विदेशेष्वपि लोकप्रियाभवत्। व्हॉइस ऑफ अमेरिकातः तस्याः प्रसारणं भवति। महाराष्ट्रस्योत्तरप्रदेशस्य च शासनाभ्यामेते विशेष - समतनेन समलङ्कृताः। अन्ये प्रमुखाः ग्रन्था :-
नीतिकथा -ध्वनिकथा-बिल्हण-वैदिकाख्यान - कालिदास - भूलोकविलोकनम् - संस्कृतव्याकरणम्-प्राच्यविद्याभाषणम्-अद्वैततत्व - व्याख्यानादयः शोधपत्राणि कविताश्च सर्वे समादृताः। सद्य एव 'चमत्कार - चन्द्रिकायाः पाण्डुलिपिः सम्पाद्य प्रकाशिता। नूतनो भारतीय-दर्शने तमोवाद-शतकमिति ग्रन्थः, राजयोगिनीति महाकाव्यम्, अहल्या-कामधेनुरित्यादयो ग्रन्था प्रकाशिता भविष्यन्ति।
सम्प्रति 'बालानां सुखबोधायेति' संस्कृतकाव्यसंग्रहा मुद्रणाधीनः तथा आंग्लभाषालिखितानां शोधपत्राणां उर्दूग़जलानांम् च प्रकाशनम् भविष्यति।



श्री बाजीराव पेशवा प्रथम

संस्कृत मनीषियों में मूर्धन्य ख्यातिप्राप्त संस्कृत पण्डित तथा कवि महामहोपाध्याय प्रा. डॉ. प्रभाकर नारायण कवठेकरजी का 'बाजीराव-मस्तानीयम्' यह नये विषय पर रचित नवीनतम संस्कृत काव्य है।

अठारहवी शताब्दी के प्रथम श्री बाजीराव पेशवा एक राष्ट्रिय पुरुष इसलिए थे कि उन्होंने तत्कालीन परचक्र, अर्थात विदेशी हमलावरों पुर्तुगीज़ों, मुगलों, फ्रेन्चों, हबशियों तथा अंग्रेजों का विरोध किया। पुर्तुगीज़ों से युद्ध कर उन्हें परास्त किया, मुगलों पर दिल्ली में धावा बोल दिया था तथा अंग्रेजों और फ्रेन्चों को आगे बढ़ने से रोक दिया था। सभी लड़ाईयों में उनकी जीत हुइ। मस्तानी एक अनिन्द्यरूप की राजकन्या थी जो बुन्देलखण्ड के राजा श्री छत्रसाल की कन्या थी। किन्तु वह निन्दा और षड्यन्त्र से प्रताडित हुई। नये इतिहास के अध्ययन से ज्ञात हुआ कि वह राजकन्या थी, सम्माननीया पत्नी थी जो श्री बाजीराव के राष्ट्रकार्य में सहायक थी। इस काव्य में दोनों को न्याय मिला है। एक राष्ट्रिय वीर की प्रेमगाथा के रूप में वीर-शृंगार से परिपुष्ट यह काव्य प्रथम बार प्रस्तुत किया जा रहा है।

